

Vol. I
No. 16



Tuesday
16th March, 1951

HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES Official Report

PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

CONTENTS

General Budget—Demands for Grants Page
501-575

Demand No. 8—Charges on account of Motor Vehicles ..	Rs. 16,22,000
Demand No. 16—Elections ..	Rs. 5,85,500
Demand No. 18—Administration of Justice ..	Rs. 43,94,000
Demand No. 19—Jails and Convict Settlements ..	Rs. 25,82,000
Demand No. 20—Police ..	Rs. 2,29,89,000
Demand No. 61—Road Transport Dept. ..	Rs. 2,58,88,000
Demand No. 75—Evacuee Department ..	Rs. 1,58,800
Demand No. 80—Grant for Rehabilitation of Displaced Persons ..	Rs. 2,50,000
Demand No. 81—Welfare of Ex-Criminal Tribes ..	Rs. 55,000
Demand No. 98—Capital Outlay on Road Transport Scheme ..	Rs. 86,22,000

Note: *at the beginning of the speech denotes confirmation not received.

THE HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

Tuesday, the 16th March, 1954.

The House met at Half Past Two of the Clock.

[MR. SPEAKER IN THE CHAIR]

PART II

Questions and Answers

(See Part I)

General—Budget Demands for Grants

شری جی۔ راجہ رام (آرمور)۔ مسٹر اسپیکر۔ قبل اسکے کہ ڈیمانڈس پر چرچا شروع کیجائے میں ایوان کے ملاحظہ میں ایک چیز لانا چاہتا ہوں۔ وہ یہ کہ ہم ایوان میں اس وقت پولس کے ڈیمانڈس پر بحث کر رہے ہیں۔ پولس کا عوام کے ساتھ جو رویہ ہے اور پولس کی کیا کارگزاریاں ہیں اس بارے میں کئی آنرہبل ممبرس نے وضاحت کی ہے۔ اسکے باوجود ہم کل سے دیکھ رہے ہیں کہ اب تک تین مرتبہ پولس نے معصوم انسان سے رہنے والوں پر.....

Mr. Speaker : What is it that the hon. Member is speaking about?

Shri G. Rajaram : I am speaking about the police lathi charge.

Mr. Speaker : How is it relevant here? Is the hon. Member speaking on the Demands concerned?

Shri G. Rajaram : I want just to place before the hon. Minister certain matters.

کل رات کے ۱۱ بجے سے دو مرتبہ لائی چارج ہوا۔ کئی وکرس گرفتار کئے گئے...

Shri Ratanlal Kotecha (Patoda) : Is the hon. Member speaking on the demands?

مسٹر اسپیکر۔ کیا آپ ڈیمانڈس پر تقریر کر رہے ہیں؟

شری جی - راجہ رام - میں تقریر نہیں کر رہا ہوں - میں یہ کہہ رہا ہوں کہ چونکہ ہم پولس ڈیمانڈس پر بحث کر رہے تھے اسلئے ہمارے لئے کوئی موقع نہیں تھا کہ ہم ایجنڈا پر پیش کرتے لیکن ہم اسکو برداشت نہیں کرتے کہ ایک طرف تو معزز ایوان میں پولس اور پولس کے ڈیمانڈس پر بحث کیجائے اور دوسری طرف پولس اپنا اتیاچار جاری رکھے - اسمبلی سے ۳۰ گز یا ۱۰۰ گز پر مسلسل لاثقی چارج ہوتا رہا اور جو ورکر اس اپنے حقوق کیلئے پیسفل (Peaceful) جدوجہد کر رہے تھے انہیں گرفتار کر کے لے گئے - اور یہ پتہ نہیں کہ انہیں کہاں رکھا گیا - کیونکہ پوچھنے پر بھی نہیں بتایا جاتا - ہاؤس کے آئریبل ممبرس کو یہ واقعات معلوم ہونے چاہئیں - اور یہ بتایا جانا چاہئے کہ آخر انہیں کہاں رکھا گیا ہے

مسٹر اسپیکر - منسٹر اسکا جواب دینگے -

شری جی - راجہ رام - منسٹر صاحب تو جواب دینگے - لیکن ہم خاص طور پر یہاں پولس پر بحث کر رہے ہیں اور گورنمنٹ کی اس پالیسی سے متعلق کڑسزم (Criticism) کر رہے ہیں - اگر پولس اسی طرح کا اتیاچار جاری رکھے اور آنکھوں کے سامنے مارتی رہے تو ہم اسکو کبھی برداشت نہیں کریں گے - اسلئے میری پارٹی اس عمل کی پرزور مذمت کرتی ہے اور احتجاج کے طور پر ایوان سے واک اوٹ کرتی ہے -

(Members of the U.P.P. then left the Assembly Chamber).

श्री. व्ही. डी. देशपांडे (अिप्यागुडा) :—मिस्टर स्पीकर सर, कल मैंने जिस चीज को हाउस के सामने रखा था और मैं खुद जाकर आनरेबल होम मिनिस्टर से मिला था और अनुसे कहा था कि आज कुछ अरेस्ट्स (Arrests) होने के अिमकानात हैं, अनुको रोका जाय। जिसके बावजूद पुरानी मिल के पास जो शख्स भूख हडताल कर रहे हैं अनुको गिरफ्तार करने की कोशिश की गयी है और बाकी जो हडताल करनेवाले हैं अनुमें से करीब दस वर्कर्स को गिरफ्तार किया गया है। वहां पर लाठी चार्ज किया गया। जिसके बाद सेक्रेटरीअेट पर भी लोग प्रोसेशन लेकर गये और वह पर अनुहोंने मांग की कि जो लोग गिरफ्तार किये गये हैं अनुको रिहा किया जाय तो सेक्रेटरीअेट के पास भी लोगों पर लाठीचार्ज किया गया। मैंने सुना है कि लोग वहां घरना देकर बैठे हुये हैं, ऐसी अेक घंटे पहले मूझे अित्तला मिली है। जिस तरह का बर्ताव और लाठीचार्ज हमारी आंखों के सामने किया जा रहा है अनुके प्रोटेस्ट (Protest) में मैं अपनी पार्टी की तरफ से वाकअुट (Walk out) करता हूं।

(Members of the P. D. F. Party then left the Assembly Chamber.)

شری جی - بی - متیال راؤ (سکندر آباد - محفوظ) - اس بارے میں میں کچھ ثبوت پیش کرنا چاہتا ہوں - جیسا کہ آئریبل لیڈر آف دی اپوزیشن نے کہا ہے میں بھی

سیکریٹریٹ گیا تھا۔ وہاں ورکرس پولس پر حملہ کر رہے تھے میں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے۔ کس طرح وہ

مسٹر اسپیکر۔ اسکا جواب تو منسٹر صاحب دینگے۔

شری جے۔ بی۔ ستیال راؤ۔ لیکن میں نے وہاں جو دیکھا ہے وہ ہاؤس کے سامنے بتلانا چاہا ہوں۔ جس طرح دوسرے آئریبل ممبرس کو موقع دیا جاتا ہے کرپا کر کے مجھے بھی موقع دیا جائے۔

مسٹر اسپیکر۔ آپ ڈیمانڈ کے سلسلے میں اسپیکر دیجئے۔

شری. رتنلال کوٹےچا :—میسٹر سپیکر سر، آر. टी. डी. (R.T.D.) کے वर्किंग के बारे में मैं अपने विचार ह्यबुस के सामने रखना चाहता हूं। बजट के जनरल डिसकशन (General discussion) के वक्त मैंने इस डिपार्टमेंट के बारे में बहुत थोड़े से विचार निवेदन किया था। आज कुछ विस्तारपूर्वक कहना चाहता हूं। आपको मालूम है कि तकरीबन हमारा रोड ट्रान्सपोर्ट डिपार्टमेंट (Road Transport Department) नेशनलाइज (Nationalise) हुआ है। भारत में हैदराबाद रियासत पहली रियासत है कि जिसने इस रोड ट्रान्सपोर्ट डिपार्टमेंट को नेशनलाइज किया है। नेशनलायजेशन के तीन असूल होते हैं और अन्हीं के अपर यहां का नेशनलायजेशन हुआ है। काँग्रेस ने भी अपने इलेक्शन मनीफेस्टों (Election manifesto) में दर्ज किया है कि जितने भी रोड ट्रान्सपोर्ट डिपार्टमेंट्स होंगे वे सब नेशनलाइज हों, लेकिन यहां की रियासत ने असुसे भी पहले इसका नेशनलायजेशन किया है। नेशनलायजेशन के लिये मैंने कहा कि तीन असूल मुख्य हैं। अंक यह कि जिसमें एफिशियन्सी (Efficiency) हो, दूसरा यह कि अकानामी हो और तीसरा यह कि सर्विस टु दि पब्लिक (Service to the public) यह इसका अदृश हो। इस कसौटी पर मैं यह देखना चाहता हूं कि हमारा जो अक्सपेरिमेंट (Experiment) पचीस तीस साल से हो रहा है वह यशस्वी हुआ है या नहीं। रोड ट्रान्सपोर्ट डिपार्टमेंट का इतिहास बहुत लंबा इतिहास है। असुकी तरफ मैं अवानका ध्यान आकषित करना चाहता हूं। यह डिपार्टमेंट हमारी रियासत में जून १९३२ में शुरू हुआ। असु वक्त इसके पास सिर्फ २७ बसेस थीं। १९३९ में डिपार्टमेंट गुड्स लॉरीज (Goods lorries) का काम भी हाथ सें लिया गया। अब हम देखते हैं कि इस डिपार्टमेंट का कार्य १९५४ में कितना बढ गया है। अब अुनके पास पैसेंजर व्हीकीकल्स (Passenger vehicles) ६३२ हैं और लारीज ३३ हैं। पैसेंजर बाने वाली मोटरें ६९८ हैं और लारीज १४ हैं। इसी तरह से रूटस (Routes) की तरफ देखेगे तो मालूम होगा कि १९३२ में ९ रूटस थे और अब १९५४ में १७० रूटस होगये हैं। इसी तरह से इस डिपार्टमेंट का स्टाफ भी बढ गया है। १९३२ में स्टाफ १६१ था और आज तकरीबन वह साढे पांच हजार का हो गया है। आर. टी. डी. का कपिटल (Capital) आज तकरीबन २ करोड ७५ लाख है। इस डिपार्टमेंट के इनकम (Income) और अक्सपेंडीचर साइड (Expenditure side) की तरफ भी मैं

हाबुस का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। जिस डिपार्टमेंट को तकरीबन २ करोड़ ७४ लाख का अिनकम (Income) होता है, लेकिन १९५३-५४ के रिवाजिज्ड अिनकम (Revised Income) के लिहाज से २८ लाख का अिनकम बताया गया है जिस तरह से यह अिनकम कम क्यों हुआ है? अेक्सप्लनेटरी मेमोरेंडम (Explanatory Memorandum) में बताया गया है कि कीमतें घट गयी हैं, स्लम्प (Slump) आ गया है और स्ट्राइक (Strike) हुआ था जिसलिये यह २८ लाख का घाटा हुआ है। मैं समझता हूं यह कारण ठीक नहीं हैं। हम देखते हैं कि कीमतें बराबर बढ़ती गयी हैं। पिछले साल फायनान्स मिनिस्टर ने अपने भाषण में कहा था कि कीमतें बढ़ती गयी हैं, लेकिन यह जो कारण बताया गया है कि स्लम्प आया है और डिप्रीसिएशन (Depreciation) की वजह से जिसमें घाटा आया है वह कारण मुझे ठीक नहीं मालूम होता। दूसरा कारण यह है कि स्ट्राइक की वजह से अिनकम घट गया है। मैं समझता हूं कि स्ट्राइक में गव्हर्नमेंट ने अैसा माकुल अिन्तजाम किया था कि अुसकी वजह से कोअी अिनकम घटने की वजह नहीं मालूम होती। असली वजह तो यह मालूम होती है कि डिस्ट्रिक्ट के अंदर कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स के अुपर जिस डिपार्टमेंट का बहुत कम चेकिंग (Checking) होता है। मैं अैसे जिले का रहीवासी हूं जहां हम बसेस के सिवा कहीं नहीं जा सकते। रेलवे का प्रवास बिल्कुल नहीं है और मुझे तो हमेशा घूमना पड़ता है। मैं देखता हूं कि २५ फीसद नहीं बल्कि ५० फीसद अिनकम ड्रायव्हर्स और कंडक्टर्स अपने जेब में डालते हैं। चेकिंग बहुत कम है, हालांकि अिसके लिये करीब करीब चार या पांच लाख रुपया बजट में रखा गया है। चेकिंग करनेवाले ही कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स से मिल जाते हैं। अिससे हमारा बहुत बड़ा घाटा होता है। मैं बंबअी के बस डिपार्टमेंट की तरफ देखता हूं तो वहां हर बस का चेकिंग होता है हर बस में चेकर रहता है। बस स्टार्ट होते ही वहां चेकिंग होता है और रास्तों में भी चेकिंग होता है, अिसलिये बंबअी स्टेट की आमदनी बढ़ती जा रही है। हमारे यहां पूरे स्टेट में मोनापली (Monopoly) होते हुअे भी अिनकम घटता जा रहा है अिसके बारे में होम मिनिस्टर साहब को अच्छी तरह सोचना पड़ेगा।

मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि अुर्स और जत्राअों में बस डिपार्टमेंट का जो अिनकम होता है वह भी घटता जा रहा है। १९५२-५३ में ३ लाख ४ हजार का जो अुत्पन्न था वह १९५४ में १ लाख ९६ हजार का हुआ है। क्या लोगों की अुर्स और जत्राअों पर से या अीश्वर और अल्ला पर से अद्दा कम हो गयी है? हमारे यहां कअी अुर्स और देवस्थान हैं जहां लाखों लोग दर्शन के लिये जाते हैं, लेकिन अुसीका फायदा लेकर कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स काफी पैसा जेब में डालते हैं। बीड के पास पंढरपूर और पैठण की जत्राअें होती हैं। लाखों लोग वहां जाते हैं लेकिन गव्हर्नमेंट की तरफ से कोअी खास अिन्तेजाम नहीं किया जाता। जिस तरह के भौकों से फायदा अुठाकर अेक अेक कंडक्टर और ड्रायव्हर हजार दो हजार रुपये जेबमें डालते हैं। गव्हर्नमेंट को अिसकी तरफ काफी ध्यान देना चाहिये।

लगेज (Luggage) का अुत्पन्न भी कम है। अुसमें भी कोअी खास फायदा नहीं है। अेक अम्ब १ हजार का अिसका अुत्पन्न है। पूरे स्टेट की मोनापली होने पर दो करोड़ अिनकम में सिर्फ १ लाख ९ हजार का अुत्पन्न हो रहा है। यह अुत्पन्न १५-२० लाख तक जाना चाहिये।

कंडक्टर्स लगेज बुक नहीं करते, अगर करते हैं तो बहुत कम करते हैं, जिसलिये लगेज का अत्यन्त बहुत कम हो रहा है। माल लॉरीज का सेक्शन तकरीबन घाटे में है क्योंकि इसका अत्यन्त कम है और खर्चा ज्यादा हो रहा है। गव्हर्नमेंट को या तो इस डिपार्टमेंट को बंद करना पड़ेगा या बंबअी स्टेट की तरह इसका पूरा नेशनलायजेशन (Nationalisation) करना पड़ेगा जिसके बारे में बंबअी गव्हर्नमेंट अभी सोच रही है और वे ज्यादा लॉरीज (Lorries) मंगवा रहे हैं। मालवाहतुक का सारा काम वहां की गवर्नमेंट अपने हाथ में लेनेवाली है। उसी तरह से यहां भी लेना पड़ेगा या प्राय्वेट (Private) लोगों के हाथ में देना पड़ेगा। जिस तरीके पर बंबअी स्टेट का ट्रंसपोर्ट डिपार्टमेंट काम कर रहा है उसी तरीके पर हम भी सोचें और हमारे ट्रान्सपोर्ट डिपार्टमेंट का उत्पादन बढ़ायें।

अक्सपेंडीचर साइड (Expenditure side) में चार मद हैं। अक अडमिनिस्ट्रेशन (Administration) दूसरा रिपेअर्स (Repairs) और मेन्टेनेन्स (Maintenance), तीसरा ऑपरेशनल (Operational) और चौथा रीप्लेसमेंट (Replacement)। इसका रेशो (Ratio) देखेंगे तो अडमिनिस्ट्रेशन पर १२ परसेंट खर्च होता है। यह बहुत भारी है। अकाध प्राय्वेट आदमी सर्व्हीस चलाये तो जितना खर्च नहीं होगा। रिपेअर्स और मेन्टेनेन्स का खर्च ३५ परसेंट है और रीप्लेसमेंट का खर्च ७ परसेंट है। दूसरी चीज यह है कि यहां के स्टाफ को बहुत ज्यादा फॅसिलिटीज (Facilities) दी गयी है। दूसरे विभागों के कर्मचारियों को जितनी फॅसिलिटीज नहीं हैं जितनी की यहां के स्टाफ को हैं। कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स को क्या फॅसिलिटीज दी गयी हैं उनको मैं हाथुस के सामने रखना चाहता हूं। उनके लिये रेलवे पासेस अँड कन्सेशन्स (Concessions) फ्री मेडीकल फॅसिलिटीज (Free medical facilities)

ग्रेन कन्सेशन्स (Grain concessions) स्टाफ बेनिफिट फंड (Staff benefit fund) कोआपरेटिव क्रेडिट सोसायटी रिक्रिअेशन फॅसिलिटीज (Recreation facilities) फुड (Food) की सबसिडी (Subsidy) जितनी फॅसिलिटीज हैं। जितनी फॅसिलिटीज होने पर भी हमारे कम्युनिस्ट दोस्तों ने उनको भडकाकर स्ट्राइक करवाया। जिन ड्रायव्हर्स और कंडक्टर्स के साथ मुझे कोअी सिंपथी (Sympathy) नहीं है, क्योंकि उनको हमारी रियासतों दूसरी रियासतों के मुकाबले में ज्यादा तनख्वाह मिलती है और साथ साथ उनका जो दीगर गैर कानूनी अिनकम है वह करीब करीब दुगना है। ऐसे जो देश को नुकसान पहुंचानेवाले लोग हैं जो अपने जेब में पैसे डालते हैं उनके बारे में मुझे कोअी सिंपथी नहीं है। तो भी हमारे कम्युनिस्ट दोस्तों ने उनको भडकाया और स्ट्राइक कराया। लेकिन हुकूमत ने बड़े अच्छे ढंग से उसको असफल बनाया जिसके लिये मैं हुकूमत को धन्यवाद देता हूं —

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—आप पुलिस डिपार्टमेंट जॉइन (Join) कीजिये।

श्री. रतनलाल कोटेचा :—हां, जरूर जॉइन करूंगा, कम से कम आपके लिये तो जरूर करूंगा। साथ साथ उनको फुड सबसिडी दी जाती है। मैं समझता हूं कि जब कंट्रोल अुठाया गया है तो सबसिडी देने की जरूरत नहीं है।

अब कुछ सजेन्स (Suggestions) जिस डिपार्टमेंट के वर्किंग (Working) के बारे में देना चाहता हूँ। मैं देखता हूँ कि हमारी बसेस में काफी ओव्हर लोडिंग (Overloading) होता है और उसकी वजह से पैसेंजर्स को बहुत तकलीफ होती है। हमारे सामने जो फायनान्शियल बजट अेस्टीमेट रखा गया है उसमें हम देखते हैं कि हैदराबाद और सिकंदराबाद में काफी बसेस हैं और डिस्ट्रिक्ट्स में बहुत कम हैं। ज्यादा वक्त न होने से मैं उसके तफसीलात में नहीं जा सकता, लेकिन मैं अितना कहूंगा कि हैदराबाद और सिकंदराबाद में ९८ बसेस और अुनके अिनकम अुनकी तादाद) की लिहाज से बहुत कम है। शहर से डिस्ट्रिक्ट्स में जो बसेस जाती हैं अुनकी तादाद कम है लेकिन तादाद के लिहाज से अुत्पन्न ज्यादा है। तादाद कम है जिसीलिये ओव्हर लोडिंग होता है। साथ साथ गाडियों के टायमिंग (Timings) का लिहाज बराबर नहीं होता। बीड से जालना आने के लिये जो साढेतीन घंटे का समय रखा गया है उसके लिये पांच घंटे लगते हैं। तीसरी चीज यह है कि पैसेंजरों को अमीनिटीज (Amenities) देने के लिहाज से जिस डिपार्टमेंट ने कोअी खास तरक्की नहीं की है। डिस्ट्रिक्ट्स में कहीं भी बस स्टेशन्स नहीं हैं, पीने के पानी का अ्तिजाम नहीं है, लेवेटरी (Lavatory) और ल्याटरिन की सङ्कलित नहीं है। जिससे औरतों और बूढ़े लोगों को बहुत तकलीफ होती है। बंबयी स्टेट में हर जिले और तालुके में ऐसे बस स्टेशन्स बने हैं कि हर जिले के स्थान पर अेक लाख रुपये कीमत का स्टेशन, तालुके की जगह ४० हजार का और जहां मामूली जंकशन्स हैं वहां ६ हजार का स्टेशन बनाया गया है। चार साल की लाइफ (Life) में अुनके यहां अितना प्रोग्रेस (Progress) हुवा है।

जिसके बाद हमारे यहां जो टाइम टेबल प्रकाशित किया जाता है वह अंग्रेजी में होता है हालांकि डिस्ट्रिक्ट के बहुत कम लोग अंग्रेजी जानते हैं। दूसरी बात यह है कि ये जो टायमिंग्स फिक्स (Fix) किये जाते हैं वे हैदराबाद में बैठकर किये जाते हैं जिसलिये स्वाभाविक है कि डिस्ट्रिक्ट के लोगों का अुसमें ख्याल नहीं किया जाता। साथ साथ मैंने यह भी देखा है कि हमारे बस डिपार्टमेंट में रिजर्वेशन (Reservation) की कोअी खास सङ्कलित नहीं है। मैंने मिनिस्टर साहब से बंबयी की फीगर्स पूछा था लेकिन वे मिल नहीं सके। यहां सिर्फ दो हजार का अ्तिनकम रिजर्वेशन के सिलसिले में होता है, यानी सिर्फ चार हजार लोगोंने ही जिसका फायदा अुठाया है और ये रिजर्वेशन चार्जस भी 'हाय' (High) हैं। यहां रिजर्वेशन के लिये आठ आने चार्ज है। बंबयी में आठ आने से कम की टिकट के लिये १ आना रिजर्वेशन चार्ज है, आठ आने से अेक रुपये तक दो आने और अेक रुपये के अुपर की टिकट पर ४ आने जिस तरह के चार्जस हैं। जिस वजह से वहां लोग ज्यादा फायदा अुठाते हैं और वहां की हुकूमत की आमदनी बढती है। यहां तो रिजर्वेशन किया गया तो भी सीट मिलेगी या नहीं जिसकी शंका होती है।

[MR. DEPUTY SPEAKER IN THE CHAIR]

जिसके बारे में गवर्नमेंट को सोचना चाहिये। मैं यह भी देखता हूँ कि कंडक्टर्स और ड्राइव्हर्स का लोगों के साथ ठीक बर्ताव नहीं रहता। जिस लिहाज से अुनमें सुधार करने की आवश्यकता है।

मैं यह भी देखता हूँ कि डिस्ट्रिक्ट की बसेस की मुश्किलत को अगर कहना हो तो हमको हैदराबाद में आना पड़ता है। जिसके बजाय अगर हर डिस्ट्रिक्ट में अक अक अडवायजरी बोर्ड (Advisory Board) कायम किया जाय, जैसे कि बंबयी स्टेट में किया गया है, तो मैं समझता हूँ कि आज जो मुश्किलत पायी जाती है वह कम हो जायेंगी। साथ साथ मेरे डिस्ट्रिक्ट में अक दो लाइन्स (Lines) अभी काम कर रही हैं उनको भी गवर्नमेंट अगर अपने कब्जे में ले लें तो गवर्नमेंट का अिनकम काफी बढ जायगा। जिसके बारे में मैंने अक दो खत भी लिखे थे लेकिन मालूम होता है उनको तरफ कोअी खास तवज्जह नहीं दी गयी। अंमलनेर का जो रूट है वहाँ हमारी बसेस नहीं चलतीं। वहाँ अेस. टी. मोटर्स चलती थी अुसको अगर आर. टी. डी. अपने कब्जे में ले लें तो अुसका अिनकम बढ जायगा। अिन चंद सजेशन्स के साथ जो कि मैंने हाअस के सामने रखी हैं और जिन पर मैं अुम्मीद करता हूँ कि गवर्नमेंट सोंचेगी, मैं अपना भाषण समाप्त करता हूँ।

مسٹر ڈبلیو اسپیکر۔ آنریبل ممبر دس منٹ میں تقریر ختم کریں کیونکہ بہت سے ممبرس تقریر کرنا چاہتے ہیں۔

شری جی۔ سری راملو (متھنی)۔ میں نے ایسا سنا تھا کہ کٹ موشنس دینے پر ٹائم ملتا ہے۔ لیکن کٹ موشنس دینے پر بھی ٹائم نہیں مل سکا۔ نہ وہ اصول باقی ہے اور نہ یہ اصول۔

شریمتی شانتا بائی (مکتھل آتما کور۔ عام)۔ اسپیکر سر۔ لیڈیز کو بھی موقع دیا جائے۔

శ్రీ కె. రామచంద్రారెడ్డి (రామన్నపేట) :

మిస్టర్ స్పీకర్ సర్,

పోలీసు డిమాండు 3,౨౯,౩౯,౦౦౦ రూపాయలకు నేను క్రొత్త తీర్మానము ప్రవేశ పెట్టాను. ఆ క్రొత్త తీర్మానం గురించి మాట్లాడుతున్నాను. ప్రధానంగా ఈ డిమాండును చూసినట్లయితే యీ సంవత్సరం పోలీసుకు తక్కువ ఖర్చు చేయాలని చూపెట్టడం జరిగిందీ, గత సంవత్సరం కంటే ఈ సంవత్సరం బడ్జెటులో పోలీసుకు ఖర్చు ౧౧ లక్షల ౩౦ పేలు తక్కువ చూపెట్టారు. ఇదీ ఎన్నిపేలు బడ్జెటు మాత్రమే. రిపైజ్ట్ బడ్జెటులో అంతా ఖర్చుపెట్టడం జరుగుతుందీ. ఈ ౧౧ లక్షల ౩౦ పేలు కూడ రిపైజ్ట్ బడ్జెటులో ఖర్చు పెడతారు. అందుచేత ఇప్పుడు యీ పోలీసుపై ఖర్చు తక్కువ అయ్యే సమస్య లేదు. కొత్తగా ఏర్పడిన ఆంధ్రరాష్ట్రములో పోలీసు కింద ౨ కోట్ల ౬౩ లక్షలు మాత్రమే బడ్జెటులో ఖర్చుపెట్టడం జరుగుతోందీ. అక్కడ జనాభా ఎక్కువ. ఆ రాష్ట్రం పైశాల్యం ఎక్కువ వుందీ. కాని, హైదరాబాదు స్టేటులో ౧౭౦ లక్షల జనాభా మాత్రమే ఉందీ. ఆంధ్రరాష్ట్రంకంటే దీని పైశాల్యముకూడ తక్కువ అయినా యీ స్టేటు బడ్జెటు చూచినట్లయితే ౩ కోట్ల ౨౯ లక్షల ౩౯ పేలు పోలీసుకు ఖర్చు చేయడం జరుగుతోందంటే, ఆంధ్ర స్టేటుకంటే హైదరాబాదు స్టేటులో ౬౬ లక్షల ౩౯ పేలు పోలీసుకు ఎక్కువ ఖర్చు చేయబడుతోందీ. వరంగల్, నల్లగొండ, కరీంనగర్ జిల్లాలో చూసి

నట్లయితే పోలీసుకు ఎంత ఖర్చు పెడుతున్నారో తెలుస్తుంది. పోలీసుకు తక్కువ ఖర్చు చేస్తున్నామని చెప్పడం తప్పితే ఆచరణలో మాత్రం పోలీసుకు తక్కువ ఖర్చు చేయడమనేది జరగడంలేదు. ౧౯౫౩-౫౪ వ సంవత్సరంలో ౧౨,౧౮,౬౦౩ రూ. నల్లగొండ జిల్లాలో పోలీసుకు ఖర్చుపెట్టింది. నల్లగొండ జిల్లాలో ౩౯ స్టేషన్లు, ౯ మంది సి. ఐ. లు, ౮౮ మంది యస్. ఐ. లు, హెచ్. సి. లు ౧౩౦ మంది, పోలీసులు ౧౩౫౫ మంది ఉన్నారు.

కరీంనగర్ జిల్లాలో ౬,౮౯,౬౯౫ రూ. పోలీసుకు ఖర్చు చేయబడుతోంది. ఆ జిల్లాలో ౩౮ స్టేషన్లు, ౯ మంది సి. ఐ. లు, ౪౩ మంది యస్.ఐ.లు, ౧౨౭ మంది హెచ్.సి.లు, ౧౦౫౨ మంది పోలీసులు వున్నారు. ఉత్తర దక్షిణ వరంగల్ జిల్లాలో ౧౮,౨౨,౯౬౭ రూ. పోలీసుకు ఖర్చు చేస్తున్నారు. అక్కడ ౬౦ స్టేషన్లు, ౧౫ మంది సి. ఐ. లు, ౭౬ మంది యస్. ఐ. లు, ౨౫౫ మంది హెచ్. సి. లు, పి. సి. లు ౨౦౨౪ మంది వున్నారు. ఎందుకు ఈ విధంగా యీ మూడు జిల్లాల్లో పోలీసుకు ఎక్కువ డబ్బు ఖర్చు పెడుతున్నారు? మొత్తం పోలీసు ఖర్చులో ౭ వంతుల డబ్బు యీ మూడు జిల్లాల్లో ఖర్చుపెట్టడం జరుగుతోంది. మొత్తం ౩౭ లక్షల ౩౧ వేల ౨౬౫ రూపాయలు యీ మూడు జిల్లాల్లో ఖర్చు పెడుతున్నారు. ప్రభుత్వము ౫,౧౪౩ మంది పోలీసులను యీ మూడు జిల్లాల్లో కేంద్రీకరింపజేసి ఆ విధంగా ఎక్కువ డబ్బును పోలీసుకు ఖర్చు చేస్తున్నారు. ఈ మూడు జిల్లాల్లోను ఇంతమంది పోలీసులను ఉంచి, పోలీసుకు ఎందుకు ఎక్కువ ఖర్చు పెడుతున్నారని ఆలోచిస్తే, యీ జిల్లాల్లో కమ్యూనిస్టు పార్టీ, రైతు సంఘం, పి. డి. యఫ్ మొదలైన సంస్థలను అణచడానికి, ప్రజా ఉద్యమాలను అణచడానికి ఆ జిల్లాల్లో ఎక్కువ మంది పోలీసులను పెట్టి వాళ్ళకు ఎక్కువ ఖర్చు పెడుతున్నారనే విషయం స్పష్టమౌతుంది. ప్రభుత్వము ప్రజా ఉద్యమాలను అణచడానికి అంత డబ్బు ఖర్చు చేస్తుందేగాని ప్రజల అవసరాల కొరకు, ప్రజలకు మేలు చేసే పనులకు ఏమాత్రము డబ్బు ఖర్చు పెట్టదు. ప్రజలకు అవసరమయ్యే చెరువులకు ౧౯౫౨-౫౩ వ సంవత్సరంలో నల్లగొండ జిల్లాలో ౩ లక్షల ౩౪ వేల రూపాయలు మాత్రమే ఖర్చుపెట్టారు. ౧౫,౪౩,౯౭౫ మంది జనాభావుండే జిల్లాలో పోలీసు పైన ౧౨,౧౮,౬౦౩ రూ. ఖర్చు చేస్తున్నారు. కాని ప్రజల అవసరమైన చెరువులు మొదలైన వాటి మరమ్మత్తుల కొరకు ౩ లక్షల ౩౪ వేలు మాత్రమే ఖర్చు చేస్తున్నారు. కరీంనగర్ జిల్లాలో చెరువు మరమ్మత్తులకు ఒక లక్షా, ౬౯ వేలు మాత్రమే ఖర్చు చేస్తున్నారు. కాని పోలీసులకు ౬ లక్షలు ౮౯ వేల ౬౯౫ మాత్రమే ఖర్చు చేస్తున్నారు. అదే విధంగా హైల్డ్ డిపార్టుమెంటుకు కూడా తక్కువ ఖర్చు పెడుతున్నారు. నల్లగొండ జిల్లాలో మందులకొరకు ౯౯,౮౮౯ రూ. మాత్రం ఖర్చు చేస్తున్నారు. వరంగల్ జిల్లాలో ౧,౫౩,౯౭౨ రూ. కరీంనగర్ జిల్లాలో ౧,౧౧,౨౨౪ రూపాయలు మందులకొరకు ఆరోగ్య శాఖకు ఖర్చు చేస్తున్నారు. దీనిని బట్టి చూస్తే, యీ ప్రభుత్వం ప్రజలకొరకుగాని, ప్రజల శ్రేయస్సు కొరకుగానీ ఏషన్ బిల్డింగ్ ప్లాన్స్ (Nation Building Plans) కార్యక్రమంగానీ ఏవిధంగా ఖర్చు పెడుతోందో అర్థం అవుతుంది. అదేవిధంగా, పోలీసు ఆఫీసర్ల టి. ఎ ల విషయం చూస్తే ౧౯౫౨ వ సంవత్సరంలో ౧౭ వేల రూపాయలు అయితే, ౧౯౫౩ లో ౪౦ వేల రూపాయలు అయింది. దీనిని బట్టి ౫౨ కం.పె ౫౩ లో పోలీసు ఖర్చు ఎక్కువ చేసిందేగాని తక్కువ ఏమీ చేయలేదు. పోలీసుపై తక్కువ ఖర్చు చేస్తున్నట్లు ఆచరణలో కనపించడం లేదు. ఇప్పుడు ప్రధానంగా పోలీసు ప్రజా ఉద్యమాలను అణచడానికి ప్రయత్నం చేస్తుంది. ఇందుకు ఉదాహరణగా పెద్ద ముఠాల నియోజక వర్గానికి జరిగిన టై-అలక్షన్స్

పందర్బంతో రావి నారాయణరెడ్డి, సుందరయ్యగార్లను దెబ్బలు కొట్టడంవల్ల కాంగ్రెస్ పై ఎలాంటి చర్యలు తీసుకోకపోగా, పైగా వారికి పోలీసులు అండగా వుండి ప్రజా ఉద్యమాలను అణచడానికి ప్రయత్నిస్తోంది. ధర్మసాగర్ లో డోరేగింపు జరుగుతూంటే పోలీసులు కాల్పులు కాల్చారు. ఇద్దరు మరణించారు. పానుగోడులో పోలీసులు కాల్పుగా అనేక మందికి దెబ్బలు తగిలాయి. అదేవిధంగా హుజూర్ నగర్, బలపాల గ్రామాలలో పోలీసులు అత్యాచారాలు జరిపారు. హుజూర్ నగర్ మున్సిపల్ ఎన్నికల సందర్భంలో గందరగోళం జరిగింది. కాంగ్రెసువారు కమ్యూనిస్టులపై దాడులు చేశారు. వారి ఆఫీసులను లూటీ చేశారు. పోలీసులు వారికి అండగా వుండి, వారి పెంట ఉండి ఇలా అత్యాచారాలు చేయించారు. పోలీసులు కాంగ్రెసునాయకులు కలసి, ప్రజా ఉద్యమాలు ముందుకు రాకుండా ప్రత్యక్షంగా దాడులు చేస్తున్నారు. దీనిని గురించి హోం మంత్రిగారిని ప్రార్థించడం జరిగింది. కాని ఏమీ శ్రద్ధ తీసుకోలేదు. ప్రత్యక్షంగాను, పరోక్షంగాను కూడా పోలీసులు కాంగ్రెసువారి అండతో అత్యాచారాలు చేస్తున్నారు. కాంగ్రెసు నాయకులు, కాంగ్రెసు బురఖా పేసుకొని పోలీసుల అండతో దాడులు చేయడం జరుగుతోంది. జిల్లాలో నిర్బంధ విధానాలు పెట్టారు. నల్లగొండ జిల్లాలో ౧౧౦, ౪ సెక్షన్ ౧౦౭, ౧౧౧, ౧౧౨, మొదలైన సెక్షన్స్ పెట్టి మొత్తం ఆ జిల్లాలో ౧౫౦ మంది కార్యకర్తలమీద కేసులు పెట్టి కోర్టులచుట్టూ త్రిప్పరుతున్నారు. రైతులు భూములనుండి బేదఖలు కాకుండా ఖానూన్ ప్రకారము హక్కులను కాపాడుకోడానికి ప్రయత్నిస్తుంటే జమీందార్లు పోలీసులను అండగా పెట్టుకొని ౩౫౦ మంది రైతులపై కేసులు పెట్టారు. ఆ కేసులు ఇప్పుడు కోర్టులలో నడుస్తున్నాయి. ఈ విధంగా పోలీసులు జమీందార్లకు అండగా ఉండి, జమీందార్ల పైపు ఉండి, రైతులను అణచిపెస్తున్నారనేది స్పష్టమౌతోంది. ౧౯౫౩వ సంవత్సరం డిశంబరు వరకు జిల్లాలోపల ౧౫౫ కేసులు కొట్టిపెయ్యబడ్డాయి. ఒక్కొక్కరిపైనా ౧౦, ౧౧ కేసులు మోపి, తేనిపోని కేసులు పెట్టి జైల్లో పెట్టడం జరుగుతోంది. ఒక్కొక్కరిపైనా ౧౦, ౧౧ కేసులు ఎందుకు మోపు తున్నారంటే ఒక కేసు కొట్టిపెయ్యబడినా ఇంకొక కేసులో నయినా శిక్ష పొంది వాళ్ళు జైల్లో పెడుతారని అనే ఉద్దేశంతో ౧౦, ౧౧ కేసులు మోపుతున్నారు. ఆ విధంగా ప్రజా కార్యకర్తలపై తేనిపోని కేసులు పెట్టి బయటకు రాకుండా వారిని అణచుతున్నారు. సంగమ మొదలైన ౧౭ మందిపైన కేసులు నడిచి ౫ సంవత్సరాల తరువాత వాళ్ళకేసులు కొట్టిపెశారు. ఈ ౫ సంవత్సరాలు యీ ౧౭ గురించి జైల్లోనే పెట్టింది. ప్రభుత్వం కావాలని తేనిపోని కేసులు మోపి కార్యకర్తలను బయటకు రానియకుండా ప్రజలకు సహాయం చేయనివ్వకుండా జైల్లో పెడుతున్నారు. ప్రభుత్వం మొత్తం పాలనీ అవలంబిస్తోంది. కత్తికి తేనిపూనే పాలనీ అవలంబిస్తోంది. జైల్లో విడిచిపెడిమంది జబ్బులలో పడి వున్నారు. వారిని విడుదల చేయాలని రిజిస్ట్రేటు చేసినా విడుదల చేయడం లేదు. రజాకార్లు కాలంవాటి కేసులు కూడా ఇంకా నడుస్తూనే ఉన్నాయి. నల్లగొండ జిల్లాలో ౩౫ కేసులు నడుస్తున్నాయి. ఒక్కొక్కరిమీద ౬, ౭ కేసులు వరకు నడుస్తున్నాయి. నూటికి ఎనభైమందిని F.I.R. లో పేరు రాయకుండా ఉంచుతున్నారు. ఆ విధంగా F.I.R. లో పేరు రాయకుండా ఉంచి వారిని అన్ నౌన్డ్ (unknown) కమ్యూనిస్టులని, టెరరిస్టు కమ్యూనిస్టులని పేరులు పెట్టిపిలుస్తున్నట్లా వారిని జైల్లో పెడుతున్నారు. ప్రభుత్వం బుద్ధి పూర్వకంగా యీ పనులు చేస్తున్నారు. ఇదే ఈనాటి పాలనగా ఉన్నది. తిరుమలరావు, భీమిరెడ్డి నరసింహారెడ్డి, అంజురెడ్డి పెంకటరెడ్డి మొదలైన వారిపైన

కేసులు రహస్యంగా వుంచి, ఏమీ వారంటు లేకుండానే వారిని 'నోన్' కమ్యూనిస్టులని టెర్రరిస్టు కమ్యూనిస్టులని చెప్పి అరెస్టు చేయడం జరిగింది. వారిని ఎలాబరులో లరెస్టు చేసి జైల్లో పెట్టారు. F.I.R. లోనల పీరి పేరు లేదు. ప్రధానంగా ఈ పోలీసు పాలసీ యీ ప్రభుత్వం పాలసీ ఏమిటంటే, ముఖ్యంగా కార్యకర్తలను అందరినీ మొదట జైల్లో బంధించి వారిపైన తేనిపోని కేసులు మోపి, ఆ కేసులు ఋజువు కాకపోయినా అరెస్టువారికు జైల్లో పెట్టడం ప్రభుత్వ ఉద్దేశం అని బోధపడుతుంది. ఇటువంటి పాలసీని ప్రభుత్వము మారుకోవాలని చెబుతున్నాను. పూర్వం సైజాం ప్రభుత్వ కాలంలో పోలీసులు ఎక్కడదీని రహస్యంగా మహబూబునగర్ జిల్లా మున్నూర్ తీసుకువెళ్ళి జైల్లో పెట్టారు. ఆ విధంగా ఆ ప్రభుత్వం చేసినట్లే, యీనాడు కాంగ్రెసు ప్రభుత్వంకూడా అదే పాలసీ అమలంబిస్తోంది. దీనిని అట్టి ఆ ప్రభుత్వానికి యీ ప్రభుత్వానికి ఏమీ భేదము వుందో అర్థము చేసుకోవచ్చును. ఇటువంటి సంబంధ విధానాలను తప్పనిసరిగా ఉపసంహరించుకోవాలని కోరుతూ నా ఉపన్యాసం ముగిస్తున్నాను.

శ్రీ భగవానరావ బోరాలకర్ (వసమత్ జనరల్) :—అపాధ్యక్ష మహోదయ, కల సె అిస్ పులిస్ కె మహ్కమె కి మాంగొపర్ చర్చా హీ రహీ హై और कभी मेवरोने अबतक अपने ख्यालात का अजिहार किया। अगर कोअी अैसा महकमा है कि जिससे लागों का ज्यादा मे ज्यादा तालुक आता है तो वह पुलिस का ही महकमा है। मेरा ख्याल है कि हमारी गव्हर्नमेंट अिस् महकमे में जो तरक्की करनी चाहिये वह अभी तक नहीं की है। अिस् महकमे को सुधारने के लिये जो काम किया जाना चाहिये था वह अबतक सरकार नहीं कर सकी है और अिस् डिपार्टमेंट में जो रिश्तखोरी चलती है उसे भी गव्हर्नमेंट न रोक सकी है। यह अेक महकमा अैसा है कि जहां पर दिन भर में कअी दरखास्तें पब्लिक की तरफ से आती हैं, लेकिन पुलिस अुसपर ध्यान नहीं देती और जो लोग कोअी जुर्म करते हैं अुन्हों से रिश्त लेकर पुलिस अुन्हे छोड देती है।

मैने गुजिस्ता साल बजेट के वक्त भी बताया था कि पुलिस को हमें अच्छी तरह ट्रेनिंग देने की जरूरत है। हमारे पास ट्रेन्ड (Trained) पुलिस बहुत कम है, लेकिन अुस तरफ अबतक कुछ ध्यान नहीं दिया गया और कुछ तरक्की भी नहीं हुअी। परभणी जिले की हदतक तो मैं बता सकता हूं कि वहां के पुलिस अफसर जिस तरह काम कर रहे हैं वह काम करने के ढंग ठीक नहीं हैं। गव्हर्नमेंट को अिस् तरफ ध्यान देना चाहिये और अपना काम किस तरह ठीक से किया जाय अिस्की ट्रेनिंग पुलिस को देनी चाहिये, लेकिन जैसा काम जमहूरियत में पुलिस को करना चाहिय वैसा काम नहीं हो रहा है, यह मुझे अफसोस के साथ कहना पडता है।

दूसरी बात मुझे डिपार्टमेंटल अिनक्वायरी (Departmental enquiry) का जो तरीका है अुसके बारे में कहना है। यदि कोअी अफसर कुछ गलती करता है तो अुसकी अिनक्वायरी डिपार्टमेंट की तरफ से की जाती है। पहले भी यही तरीका था लेकिन आज मैं कहना चाहता हूं कि यह तरीका ठीक नहीं है। अिस् तरह से यदि अिनक्वायरी की जाती है तो वह बराबर नहीं होती है। मेरा अिस्के बारे में यह सजेशन है कि जो अिनक्वायरी होती है वह खुली अिनक्वायरी होनी चाहिये। यदि किसी अफसर के खिलाफ पब्लिक की तरफ से कोअी कंप्लेंट (Complaint) आती है तो अुसके बारे में खुली अिनक्वायरी होनी चाहिये। ओपन अिनक्वायरी (Open enquiry) करने से अिस्को को मालूम होगा कि हम कुछ कंप्लेंट करते हैं तो अुसके खिलाफ गव्हर्नमेंट क्या

कार्यवाही कर रही है। जब किसी अफसर की अनिक्वायरी डिपार्टमेंट के दूसरे अफसर करते हैं तो वह सब अेक दूसरे से मिले होते हैं, जिस लिये बराबर अनिक्वायरी नहीं होती है। जिस तरह से अनिसाफ होना चाहिये वैसा नहीं होता।

जिस तरह कभी वाक्यात में यहां पर रख सकता हूं। कंठेश्वर नामी अेक मौजे में वहां के सर्कल अनिस्पेक्टर बसमत और पूर्णा के सब-अनिस्पेक्टर के खिलाफ डी. वाय. अेस. पी. के पास कभी बार शिकायतें की गयीं, तहकिकात का वचन दिया गया लेकिन कुछ अॅक्शन (Action) नहीं लिया गया, अैसा नहीं होना चाहिये। हम गव्हर्नमेंट को अपनी गव्हर्नमेंट समझते हैं और अैसी चीजे होती हैं तो उनका अनिसाफ गव्हर्नमेंट को करना चाहिये। पब्लिक की भलाअी के लिये यह डिपार्टमेंट है और जिसका काम पब्लिक की भलाअी करना है। पब्लिक को तकलीफ होती है तो अुन्हे दूर करना चाहिये।

जिसके साथ साथ आज जो करप्शन सब जगह दिखाअी देता है। वैसा ही जिस डिपार्टमेंट में भी काफी करप्शन है। जिसको बंद करने का मसला हमारे सामने है। करप्शन बंद करने का काम सिर्फ गव्हर्नमेंट का है अैसा तो मैं नहीं कहूंगा। जिसके लिये यदि जरूरत हो तो कोअी बिल भी हाअुसमें लाया जाना चाहिये। लेकिन आज सिर्फ बिल लाकर यह मसला हल होनेवाला नहीं है। यह कोअी पार्टि पॉलिटिक्स का काम नहीं। जिसके लिये सब पार्टि के लोगों का जिस काम में हाथ बढाना चाहिये और गव्हर्नमेंट को भी सब लोगों की जिसमें मदद लेनी चाहिये। यह नॉन पार्टि (Non-party) मसला है। हमारे सारे समाज को ही यह मर्ज लगा है। अुसमें हर पार्टि के लोगों ने जिसे दूर करने के लिये कदम अुठाना चाहिये, यह अुनका फर्ज है। हम यदि कोअी काम करने जाते हैं तो आपकी सी. आय. डी. डिपार्टमेंट के लोग हमारे खिलाफ शिकायत करते हैं और अुनके पास हमारे खिलाफ रिपोर्ट करते हैं। हमारी कितनी ही कंप्लेंट होगीं लेकिन अुस तरफ कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता, और अुसमें अनिसाफ नहीं मिलता, लेकिन हमारे खिलाफ जरासी शिकायत आने पर फौरन सरकार की तरफ से कदम अुठाया जाता है। मेरा कहना यह है कि यह जो करप्शन का मसला है अुसके खिलाफ तो सबको मिलकर मुव्हमेंट (Movement) चलाने की जरूरत है। यह अेक बहुत सिरियस प्रॉब्लेम (Serious problem) है अैसा समझकर जिसको हल करने की कोशिश की जानी चाहिये।

में और अेक सजेशन (Suggestion) आपके सामने रखना चाहता हूं, वह यह है किजो रिपोर्ट्स जिस डिपार्टमेंट के बारे में गव्हर्नमेंट के पास आते हैं और जो कंप्लेंट्स आती हैं, अुनको देखने के लिये और अुनकी जांच करने के लिये सिर्फ गव्हर्नमेंट मशिनरी ही नहीं बल्कि गव्हर्नमेंट को जिसके बारे में सलाह देने के लिये और अनिक्वायरी करने के लिये अेक नॉन ऑफिशियल ऑडवाजरी कमिटी अपॉइंट (Apoint) करनी चाहिये और अुस कमिटी में यह तमाम मसले पेश होने चाहिये। जमहूरियत में जिस तरह पब्लिक का कोअॉपरेशन (Co operation) लेना बहुत लाजमी है। गव्हर्नमेंट आखरी डिसिजन (Decision) अपने हाथ में रख सकती है, लेकिन जिस तरह की अेक अडवायजरी कमिटी रखना बहुत जरूरी है, जिनको अड्वाय का अेतमाद हासिल है। जिस तरह से यदि गव्हर्नमेंट स्टेप (Step) लेगी तो हमारे यहां से करप्शन बहुत कम होगा। यह मर्ज हमारे सारे समाज में है। हमारे चीफ मिनिस्टर साहब कहते हैं

का यह ऐसा मर्ज है कि हम इसे पूरी तरह नहीं निकाल सकते आप यदि यहां से ही इसे नहीं निकाल सकते तो सारे हिंदुस्तान से यह मर्ज कैसे दूर होगा ? हैदराबाद गव्हर्नमेंट को अपनी पूरी ताकद लगाकर इसे दूर करना चाहिये । इसके लिये कानूनी स्टेप्स लेने की जरूरत हो तो वह भी लिये जाने चाहिये, इसके बारे में मैंने इसके पहले ही हाबुस के सामने एक रेजोल्यूशन लाया था, कि इसके बारे में हमें एक कानून बनाना चाहिये । गव्हर्नमेंट सर्वन्ट को अपनी मुव्हेबल (Movable) और इम्यूवबल (Immovable) प्रॉपर्टी की पूरी फेरिश्त गव्हर्नमेंट को देनी चाहिये, अतनाही नहीं बल्कि अपने जो करीब के रिलेटिव्हज (Relatives) हैं उनकि प्रॉपर्टी की भी लिस्ट गव्हर्नमेंट को देनी चाहिये । यह यदि किया जाय तो करप्शन कम हो सकता है और इससे शायद उसे रोकने में मदद होगी ।

डिपार्टमेंटल इनक्वायरी (Departmental enquiry) के बारे में तो मैंने पहले ही कहा कि यह तरीका ठीक नहीं है । अगर किसी अफसर के खिलाफ किसी ने कोबी दरखास्त दी है तो उसपर क्या अक्शन लिया जा रहा है यह उस आदमी को समझने का कोबी रास्ता नहीं है । किसी के खिलाफ क्या कार्यवाही की गयी जिसकी अितला उस कंप्लेंट करने वाले को नहीं मिलती । उस आदमी को नौकरी पर से निकाल भी दिया तो उस दरखास्त देनेवाले को मालूम नहीं होता कि यदि डिपार्टमेंटल इनक्वायरी किसी बात में होकर कुछ शिकायत साबित हुयी और उस अफसर का तबादला उसी कारण दूसरी जगह किया गया तो उस कंप्लेंट करनेवाले को कुछ मालूम नहीं होता । अफसर भी वह बात छिपाकर रखता है और यदि किसी ने पूछा कि आपका तबादला कैसे हुवा तो कहता है कि यह तो रूटिन मॅटर (Routine matter) है, तबादला होना चाहिये था जिस लिये हुवा । यदि ऐसे अफसरों को क्या सजा दी जाती है यह अगर अब्बाम को मालूम हो तो उसका असर अब्बाम में अच्छा होता है और वे समझते हैं कि हम शिकायत करते हैं तो उसपर मुनासिब अक्शन लिया जाता है, और जिसके खिलाफ अक्शन लिया जाता है उसे भी एक तरह का अब्बाम का डर रहता है और उसपर एक तरह का मॉरल चेक (Moral check) रहता है ।

अब पुलिस ट्रेनिंग के बारे में मैं कुछ कहना चाहता हूं । आज पुलिस के ट्रेनिंग का जो मेयार है उसे बढ़ाने की जरूरत है । खास कर जब हमारे यहां जमहूरी हुकूमत आयी है तो जमहूरित में पुलिस को कैसा बर्ताव रखना चाहिये इसके लिये उन्हें खास ट्रेनिंग की जरूरत है और दूसरे डिसिप्लिन (Discipline) की ट्रेनिंग भी हमारे यहां देने की जरूरत है । जिस तरह बांबे में पुलिस को नयी ट्रेनिंग देने के लिये और उनकी अफीशियन्सी बढ़ाने के लिये काफी कोशिश की जाती है वैसे हमारे यहां भी होनी चाहिये । बांबे में वहां के पुलिस अफसरों को खास ट्रेनिंग के लिये स्कॉटलैंड याडों में भेजा जाता है और वहां के अफसरों को भी यहां बुलाकर उनसे ट्रेनिंग दिलवाने का अितेजाम किया जाता है । जिस तरह का तरीका हमारे यहां अभी तक नहीं है । यह तरीका हमारे यहां भी शुरू करना चाहिये, जिससे पुलिस की अफीशियन्सी बढ़ेगी ।

मेरा सुझाव है कि जिसके लिये एक ऑल पार्टी कॉन्फरन्स (Conference) बुलायी जानी चाहिये ताकि सब लोग एक जगह बैठकर हमारे पुलिस डिपार्टमेंट में अफीशियन्सी बढ़ाने के लिये क्या किया जाना चाहिये इसके बारे में सोच सकें आज हमारे अफसर डी. सी. और डी. असे. पब्लि की जो रिपोर्ट आया करती है उस पर डिपेंड (Depend) रहते हैं लेकिन

یہ طریقہ ٹھیک نہیں ہے۔ آپ کو کچھ ایسی مشینری تیار کرنی چاہیے کہ ان افسروں کے علاوہ ان کے مقامی لوگوں کے پاس سے ہی آپ کے پاس رپورٹس آتے رہنے چاہیے۔ ایک ہی رپورٹ پر آپ کو ڈپنڈ رہنا نہیں چاہیے۔ اس طرح کیا جائے تو آپ سہی مالومات حاصل نہیں کر سکیں گے۔ کرپشن کے لیے گورنمنٹ ہی ذمہ دار ہے ایسا تو میں نہیں کہتا ہوں، گورنمنٹ کے ساتھ اس معاملے میں جو ممبر بیٹھے ہیں وہ بھی کرپشن کے لیے ذمہ دار ہیں۔ اس لیے دونوں کو مل کر اس کرپشن کو روکنے کی کوشش کرنی چاہیے۔

مسٹر ڈپٹی اسپیکر۔ ڈسکشن چھ بجے تک جاری رہیگا اسکے بعد چھ بجے سے منسٹر صاحب متعلقہ جوابی تقریر کریں گے۔

شری کے۔ وینکٹ رام راؤ (چنا کونڈور)۔ منسٹر صاحب کیلئے ایک گھنٹہ کافی ہے۔

مسٹر ڈپٹی اسپیکر۔ وہ کم از کم دیر گھنٹہ چاہتے ہیں اور ووٹنگ (Voting) کیلئے آدھے گھنٹہ کی ضرورت ہوگی اسلئے چھ بجے ڈسکشن ختم ہونا چاہیے۔

منسٹر فار ہوم، لا اینڈ ری ہیبیلیٹیشن (شری دگبیر راؤ بندو)۔ میں سمجھتا ہوں کہ ووٹنگ اور جوابی اسپیچ (Speech) کیلئے دو گھنٹہ کی ضرورت ہوگی۔

مسٹر ڈپٹی اسپیکر۔ اس لحاظ سے چھ بجے ڈسکشن ختم کرنا ہوگا۔ آنریبل ممبرس پانچ پانچ منٹ میں اپنے خیالات کا اظہار کریں تو سب کو اظہار خیال کا موقع ملے گا۔

Shri G. Sreeramulu: Persons who have given cut-om-tions should be allowed to speak, whether for one minute or five minutes. There should be democratisation.

شری بی۔ ڈی۔ دیشمکھ (بھوکردن۔ عام)۔ اگر آج ساڑھے آٹھ بجے تک بیٹھیں تو اچھا ہوگا۔

مسٹر ڈپٹی اسپیکر۔ نہیں۔ چھ بجے تک ڈسکشن ہوگا اور دو گھنٹے جوابی تقریر اور ووٹنگ کیلئے کافی ہونگے۔

شری بی۔ ڈی۔ دیشمکھ۔ مسٹر اسپیکر سر۔ ڈیمانڈ نمبر ۱۸ کے بارے میں جو کٹ موشن میں نے پیش کیا ہے اس بارے میں زیادہ گہرائیوں میں نہ جاتے ہوئے میں صرف ڈیمانڈ نمبر ۱۸ کے بارے میں اپنے خیالات کا اظہار کرونگا۔ ایڈمنسٹریشن آف جسٹس (Administration of Justice) کے بارے میں مجھے یہ کہنا ہے کہ اس جمہوری دور میں عدالتوں کے بارے میں حکومت کا یہ نظریہ رہے تو مناسب نہیں ہے۔ کئی لوگوں نے اس بارے میں اظہار خیال کیا ہے کہ عوام کیلئے انصاف زیادہ سے زیادہ مستحق ہونا چاہئے بلکہ اگر ہوسکے تو عوام کیلئے انصاف مفت ہونا چاہئے۔ ہم دیکھتے ہیں کہ اس جمہوری دور میں عدالتوں کے بارے میں جو تبدیلی لائی جاتی چاہئے وہ نظر نہیں آرہی ہے۔ رسوم عدالت و طلبانہ میں کافی اضافہ کیا گیا ہے۔ حیدر آباد میں

پہلے ۶ فیصد رسوم عدالت لیا جانا تھا۔ سنہ ۱۹۵۱ء سے رسوم عدالت میں دو گونہ اضافہ ہو گیا ہے۔ ملک کے جو غریب طبقات ہیں انکو انصاف کے حاصل کرنے میں اس کی وجہ سے دشواری ہو رہی ہے۔ اور انکے لئے انصاف سہنگا ہو گیا ہے۔ وہ رسوم عدالت اس قدر زیادہ مقدار میں داخل نہیں کر سکے اسلئے انصاف سے محروم ہونا پڑتا ہے۔

یہ ایسے مسائل ہیں کہ اسطرح حکومت کو نوجہ کرنی چاہئے۔ میں جوانان طلبانہ کے متعلق عرض کرونگا کہ ایک طرف تو حکومت حقیقت پسندی اور انصاف پسندی کا دعویٰ کرتی ہے اور دوسری طرف عدم مساوات کا بہ حال ہے۔ جوانان طلبانہ کا مسئلہ جبکہ سابقہ حکومت کے پیش نظر رہا ایسی صورت میں آج کی وزارت اسکو اپنی نظر سے کیسے اوجھل کر سکتی ہے۔ کریمنٹر کے جوانان طلبانہ نے ۱۹۰۱ء - جولائی کو ایک درخواست دی تھی۔ جوانان طلبانہ ایسے لوگ ہوتے ہیں جن پر عدالت کی کارکردگی کا دارو مدار ہوتا ہے۔ مقدمات کے دوران کو کم کرنے میں انکی کارگزاری کو زیادہ دخل ہوتا ہے اگر انکے گریوننس (Grievances) کو نظر انداز کیا جائے تو اس سے عدالتی نظام متاثر ہوگا۔ اور اس سے بدنامی کا اندیشہ ہے کہ یہ گورنمنٹ ایسی ہے کہ جو لوگ بیس بیس میل دیہاتوں میں جاتے ہیں اور جنکو سفر کی مصیبتیں برداشت کرنا پڑتا ہے اور جو مقدمات کے بعجلت تصفیہ میں مدد دیتے ہیں انکو وہ مراعات بھی نہیں دئے جاتے جو مستقل ملازمین کو دئے جاتے ہیں۔ کئی مرتبہ یہ مسئلہ ہائیکورٹ کے زیر غور رہا ہے۔ ہمارے سابق چیف جسٹس شری راجندر نائک نے بھی وعدہ کیا تھا کہ وہ اس مسئلہ پر سنجیدگی کے ساتھ غور کریں گے اور انکو دوسرے ہم مرتبہ ملازمین کے مائل بیسک پے ٹی۔ اے اور ڈی۔ اے۔ ڈریس - چھتیاں بیاج وغیرہ دئے جائیں گے لیکن افسوس کہ عدالت کی جانب سے انصاف کا دعویٰ تو کیا جاتا ہے لیکن ان بیچاروں کے معاملہ میں کوئی توجہ نہیں کی گئی اور اس قسم کی ناانصافی ہو رہی ہے۔ مجھے امید ہے کہ اس بارے میں ضرور کوئی ایسا اقدام کیا جائیگا جو اس دیرینہ شکایت کو رفع کر سکے۔

نقل نویس - نقل نویسوں کی عدالتوں میں کیا حالت ہے انکو ماہانہ ۱۰ یا ۱۵ روپیہ اجرت ملتی ہے۔ ہائیکورٹ نے متعدد گشتیات جاری کئے کہ نقل نویسوں کی تعداد ۱۰-۱۵ سے زیادہ نہ ہونی چاہئے۔ لیکن آج عدالتوں میں دو ہزار سے زیادہ نقل نویس ہیں جو مصیبت میں مبتلا ہیں۔ اگر آپ انکی تعداد کو کم کرنا چاہتے ہیں۔ انکو ریگولرائز (Regularise) کرنا چاہتے ہیں اور ان سے زیادہ کام لینا چاہتے ہیں تو ضرور لیجئے لیکن انکو ایک ملازم کی حیثیت سے زندہ رہنے کیلئے جو معمولی پے (Pay) دینی چاہئے وہ تو دیکھئے۔ میرا خیال یہ ہے کہ انکا معیار تنخواہ ایک میٹر کیولیٹ کلرک سے کم نہ ہونا چاہئے۔ اور وہ جملہ مراعات جو دوسرے اہلکاروں کو دئے جاتے ہیں انہیں بھی دئے جانے چاہئیں۔ ۵۰ تا ۱۲ کا تھرڈ گریڈ انہیں دیا جانا چاہئے۔

دوسری چیز لینگویجس (Languages) کے بارے میں میں عرض کرونگا کہ حال میں جو اعلان کیا گیا ہے وہ لائق ستائش ہے۔ یہ کوئی نئی بات نہیں ہے۔ بمبئی

اور سی۔ پی۔ اسٹٹس میں یہ عملدرآمد پہلے سے چلا آ رہا ہے۔ ہمارے ہاں عوامی حکومت آنے کے بعد تین سال گزرنے پر آج یہ اعلان کیا گیا ہے تو کوئی تعجب کی بات نہیں ہے۔ یہ تو بہت پہلے ہی ہو جانا چاہئے تھا۔ خیر میں اسکا خیر مقدم کرتا ہوں۔ عدالتی نظام کی حد تک دیہاتوں میں ولج یونٹ (Village unit) بنا کر یا تعلقہ بندی کے ذریعہ جو زبان وہاں رائج ہے اسکو رائج کیا جاسکتا ہے دونوں زبانیں رائج کرنے میں عدالتوں کو دشواری ہوگی۔ اسلئے ڈسٹریبیوشن آف تعلقاز آن لنگوئسٹک بیسس (Distribution of Taluqs on linguistic Basis) عدالتی کام کے تعلق سے کیا جائے تو آسانی ہوگی۔ یہ کام مشکل نہ ہوگا۔

تیسری چیز میں ہاؤس کے سامنے یہ رکھنا چاہتا ہوں کہ عدالت میں گشتی نشان ۳ جاری ہے اور حال میں متعدد گشتیات اجراء کی گئی ہیں۔ لیکن افسوس کا مقام ہے کہ خود ہائیکورٹ میں کئی مقدمات ملتویات میں پڑے ہوئے ہیں۔ ہزاروں مثلیں تصفیہ طلب ہیں۔ سات سات سال کے مقدمات زیر دوران ہیں جو فیصلہ نہیں ہوئے ہیں۔ چیف جسٹس اپنے ماتحت عہدہ داروں کے کام کی نگرانی کرتے ہیں اور انہیں ہدایت کرتے ہیں کہ مقدمات ملنوی نہ رہیں۔ زیادہ عرصے تک مقدمے کا دوران نہ بڑھنے پائے لیکن خود ہائیکورٹ کی یہ حالت ہے کہ ہزاروں مقدمات زیر دوران ہیں۔ یہاں کوئی توجہ نہیں کیجاتی۔ پولس کے بارے میں بہت کچھ کہا گیا ہے لیکن میں صرف اتنا کہوں گا کہ پولس کے اڈمنسٹریشن میں ایسی بنیادی تبدیلیوں کی ضرورت ہے جس سے افیشینسی (Efficiency) میں اضافہ ہو اور بجٹ میں دس فیصد کمی ہو سکے۔ اس بارے میں ایک سنجیشن ایک آرریبل ممبر نے رکھا تھا کہ آئی۔ جی۔ پی کی جو اسپیشل برانچ ہے اسکو ختم کر دینا چاہئے اور تین برانچس کی بجائے دو رکھ کر کام لیا جاسکتا ہے۔ پولس ٹریننگ اسکول بیدر اور عنبر پیٹھ لائینس کے بارے میں بھی ہم غور کر سکتے ہیں کہ انکو کس طرح ری آرگنائز (Reorganise) کرنا چاہئے۔ ۱۰ نمپری کلرکس آئی۔ جی۔ پی کے دفتر میں رکھے گئے ہیں انکی ضرورت نہیں ہے۔ اور اس طرح آڈٹ پارٹی کو بھی ختم کرنا چاہئے۔ سٹی پولس کے بارے میں بھی سوچا جاسکتا ہے کہ اسکو ڈسٹرکٹ پولس سے ملا کر کس طرح ری آرگنائز کیا جاسکتا ہے۔ ایچ۔ ایس۔ آر۔ پی کی پولس میں تخفیف کے ذریعہ ہمارے مالیہ میں کمی ہو سکتی ہے۔ تین بٹالینس (Battalions) کو گھٹا کر دو کو ایک جا کیا جاسکتا ہے۔ اگر اس طرح کیا جائے تو بہتر ہوگا اور حیدرآباد و سکندرآباد کی پولس کو ملا کر ری آرگنائز کیا جاسکتا ہے تو ایسا کیا جانا چاہئے۔ اور ایک چیز مجھے یہ کہنا ہے کہ ٹرانسپورٹ کا اسپیشل سیکشن (Special Section) جو ہے اس بارے میں بھی حکومت کو توجہ کرنی چاہئے میں سمجھتا ہوں کہ وقت کے لحاظ سے مجھے تفصیلات میں جانے کا موقع نہیں ہے۔ آر۔ ٹی۔ ڈی کے بارے میں میں اپنے خیالات مختصراً ہاؤس کے سامنے رکھتا ہوں۔ کہا جاتا ہے کہ آر۔ ٹی۔ ڈی کی جانب سے شلٹرس (Shelters) بنائے جا رہے ہیں۔ لیکن جو مراعات آر۔ ٹی۔ ڈی کی جانب سے حیدرآباد سٹی میں رکھے گئے ہیں وہ تعلقات میں نہیں ہیں۔ مجھے

حیرت ہوتی ہے جب یہ کہا جاتا ہے کہ مراعات دئے جارہے ہیں سکندر آباد اسٹیشن پر میں نے دیکھا ہے کہ جو بسس رات میں نائٹ اوٹ (Night out) پر جاتے ہیں انکے ڈرائیورس اور کنڈکٹرس بسس ہی میں سوتے ہیں۔ ایسے ۲۰-۲۵ لوگ سو رہے تھے۔ آنریبل ممبرس چاہیں تو جا کر دیکھ سکتے ہیں۔ ان لوگوں کو سردی گرمی کا اسطرح مقابلہ کرنا پڑتا ہے۔ پورے اضلاع میں نائٹ اوٹ پر جانے والوں کے لئے کوئی انتظام نہیں ہے۔ محض بجٹ میں تو انکے لئے مراعات کیلئے رقم رکھی جاتی ہے۔ لیکن وہ تجاویز عمل میں نہیں آتیں۔ آنریبل ممبرس ڈسٹرکٹ کے اوقات سے اچھی طرح واقف ہیں۔ آنریبل ممبرس کو معلوم ہے کہ پاسبانجس کیلئے بھی کوئی اسٹانڈ نہیں بنائے جاتے۔ انکے لئے کوئی شلٹر نہیں ہے میں اپنی اورنگ آباد سٹی کا ذکر کرتا ہوں۔ وہاں پاسبانجس کیلئے کوئی شلٹر نہیں ہے۔ نہ لیٹرن نہ ہے نہ کوئی اور سہولت۔ پاسبانجس کو کہیں ایک منٹ ٹکنے کی گنجائش نہیں ہے۔ جس طرح عربستان میں قافلہ ریت اور دھوپ میں ٹھہرتا ہے۔ اس طرح پاسبانجس کو دھوپ اور پانی میں ٹھہرنا پڑتا ہے۔ کہیں کوئی جھاڑ کا سایہ مل جاتا ہے۔ تعلقوں میں کوئی شلٹر نہیں بنائے گئے ہیں۔ بسوں پر ہیوی رش (Heavy rush) رہتا ہے لیکن اسکا کوئی بندوبست نہیں کیا جاتا۔ میں کہوں گا کہ جس طرح ریلوے کے بارے میں سنٹرل اڈوائزری کمیٹی ہے آرٹی۔ ڈی۔ کے بارے میں بھی عوام کی مشکلات کو حل کرنے کے لئے ایک مرکزی اڈوائزری کمیٹی بنائی جائے۔ اور اس کے لئے عوام کا تعاون حاصل ہو۔ ان چند خیالات کے ساتھ میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں۔

مسٹر ڈپٹی اسپیکر۔ اس سے پیشتر کہ دوسری تقریر شروع ہو میں یہ واضح کرنا چاہتا ہوں کہ ہمارے پاس صرف دیڑھ گھنٹہ ہے۔ اور ۱۰-۲۰ آنریبل ممبرس تقریر کرنا چاہتے ہیں۔ میرا یہ سچیشن ہے کہ آئندہ ہر ممبر کو ۵-۱۰ منٹ دے جائیں۔ اس سے کچھ زیادہ ممبرس کو موقع مل سکیگا۔ اگر سب ممبرس اس سے متفق ہوں تو اس طریقہ کو اڈاپٹ (Adopt) کیا جائے گا۔

شری جی۔ سری راملو۔ آئندہ ڈیمانڈ سے اس طرح کا عمل کیا جا سکتا ہے۔
مسٹر ڈپٹی اسپیکر۔ بہر حال ممبرس کم سے کم وقت لیں۔

* شری جی۔ سری راملو۔ مسٹر اسپیکر سر۔ پولیس کے ڈیمانڈ پر میرا کٹ موشن ہے اور آنریبل ہوم منسٹر کے ڈیمانڈس سب سے زیادہ رقم کے ڈیمانڈس کے لحاظ سے دوسرے درجہ پر ہیں۔ ان کا ڈیمانڈ ۷ کروڑ ۱۹ لاکھ کا ہے۔ ان کے ڈیمانڈس کے ہیڈس (Heads) بھی امپارٹنٹ ہیں۔ اور امن کا تعلق دیش کے حالات کو سدھارنے اور حکومت کے رویہ کے بارے میں ہے۔ اس لحاظ سے یہ اہم مسائل ہیں۔ اور ان کے بارے میں ضروری باتوں کو کانگریسی حکومت کے علم میں لانا ضروری ہو جاتا ہے۔ میرا کٹ موشن الکشن کے مد پر ہے۔ اس پر میں اپنے خیالات کا اظہار کروں گا۔

گزشتہ سال باقی الکشن پر ۲۷- ہزار کا خرچہ بنا یا گیا ہے اور اس سال بھی اس کے لئے ۲۵ ہزار روپے رکھے گئے ہیں۔ مجھے نہیں معلوم کہ کونسی جگہ خالی

ہوگی اور وہاں پر الکشن لڑنے کی نوبت آئیگی۔ اگر کانگریس پارٹی اکائی کو ملحوظ رکھتے ہوئے پہلے ہی دور اندیشی سے کام لے اور پہلے ہی سے نوجوانوں کا انتخاب کرے تو اس کی نوبت ہی نہیں آتی۔ اور ٹریزری پر اس کا بار نہیں پڑتا میں ایشور سے یہ پرار تھنا کروں گا کہ اس کی نوبت ہی نہ آنا چاہیئے۔

اس سلسلے میں یونین سے قابل واپسی رقم دو لاکھ ساڑھے چہتر ہزار روپے بتلائی گئی ہے۔ یہ کونسے مد کی بابتہ ہے اور کب سے قابل واپسی ہے آنریبل ہوم منسٹر اس کا جواب دیں۔

کنٹریبوشن ٹو میونسپالٹیز (Contribution to Municipalities) کے لئے تقریباً (۲۰۵۷۲) روپے ہوتے ہیں۔ ممکن ہے یہ الکٹورل رولس کی تیاری کے بارے میں ہوں۔ مجھے صحیح پتہ نہیں ملا۔ اس کی بھی وضاحت ہونی چاہیئے۔ ٹاؤن کمیٹیز وغیرہ کے لئے جو الکٹورل رول تیار ہوتے ہیں یا جو دیگر اخراجات ہوتے ہیں اگر وہ واپس دئے گئے ہیں تو الکشن کے مد میں کوئی ایٹم مل سکتا ہے۔ میں اس کی وضاحت چاہتا ہوں۔ جہاں کہیں بھی الکشن ہوئے ہیں ان میں رولنگ پارٹی کا رویہ ایسا رہا کہ اس سے آئندہ آنے والوں کے لئے رولنگ پارٹی نے بری مثال قائم کی ہے۔ وہاں ان دنوں منسٹرس خواہ مخواہ دورہ نکال کر پہنچ جاتے ہیں۔ اور وہاں اپنے اثرات۔ حکومت کی مشینری۔ کلکٹر۔ ڈپٹی کلکٹر۔ پولیس۔ پٹیل اور سوٹر یہ سب استعمال کئے جاتے ہیں۔ رولنگ پارٹی کے لئے یہ عمل نازیبا اور ناموزوں ہے۔ ہم امید کرتے ہیں کہ آئندہ الکشن میں رولنگ پارٹی اس امر کو ملحوظ رکھیگی کہ وہاں منسٹرس نہ جائیں۔ اور اگر جائیں تو اپنی سوٹر کار اور جھنڈا چھوڑ کر ایک آرگنائیزر کی طرح جیسے کہ وہ پہلے تھے ویسے ہی جانا چاہیئے۔ چیف منسٹر نے کہا ہے کہ

“A Minister is 24 hours a Minister”

میں مانتا ہوں۔ لیکن انہیں عوام کے سامنے اپنی غیر جانبداری کی مثال چھوڑ جانا چاہیئے۔ میں نہیں سمجھتا کہ ہمارے منسٹرس جو ایسے سچیشن سنکر اثر نہ لینے کے عادی ہو چکے ہیں وہ ان باتوں کا بھی خیال کر سکتے ہیں۔ لیکن پھر بھی میری پرار تھنا ہے کہ الکشن کے زمانے میں وہ الکشن کے مقاموں پر سرٹیفیکیٹس تقسیم کرنے پر ریڈ دیکھنے یا زراعت وغیرہ کا انسپکشن کرنے یا گوداموں کا معائنہ کرنے یا اسی قسم کے کام نکال کر وہاں نہ پہنچ جائیں۔ وہاں اس طرح پہنچ جاتے ہیں اور جب ان کی آؤبھگت کے لئے عوام جمع ہوتے ہیں یا ان کے پاس کوئی رپرزنٹیشن آتا ہے تو برس موقع انہیں فوراً پبلک میٹنگ میں تبدیل کر لیا جاتا ہے۔ وہاں سے منسٹر کی پوزیشن چینج ہو جاتی ہے اور وہ تحصیل کچہری کے سامنے تقریر شروع کر دیتے ہیں۔ وہاں اس طرح کام نکالے جاتے ہیں۔ سیت سینڈھیوں کو بلایا جاتا ہے اور پبلک میٹنگ کی جاتی ہے۔ یہ ہیں آپ کے کرتوت۔ یہ کام ہوگا تو اس کا لازمی نتیجہ یہ ہوگا کہ عوام اس سے متاثر ہوں گے۔ میں کہوں گا کہ اس سے وہاں سوٹروں میں جاکر اثر استعمال کرنے سے کوئی تبدیلی ہونے

والی نہیں ہے۔ عوام کی بھلائی کے لئے کچھ کیجئے۔ الکشن کے بارے میں میں آج ہی کا واقعہ بنلاتا ہوں۔ آج لینڈ امپرومنٹ بورڈ کے انتخاب کے سلسلے میں مجھے آنے میں دیر ہوگئی اور میں صرف آدھا منٹ پہلے یہاں آسکا۔ اس کے برخلاف رولنگ پارٹی کے ممبرس کو لینے کے لئے جیپ کار۔ میں نمبر کوٹ کر سکتا ہوں۔ ایم ایل ایز کوارٹرس سے انہیں جمع کر کے لایا گیا۔ رولنگ پارٹی عوام کے پیسے کا مصروف اس طرح کرتی ہے۔ لیکن عوام کا پیسہ اس طرح خرچ نہیں کیا جاسکتا۔ آج آپ کے ہاتھ میں اقتدار ہے اس لئے اب اسے اس طرح استعمال کر رہے ہیں۔ جھنڈے کو باندھ کر نہیں رکھے جیسا کر کے سوتوں کو جگا کر ان کے دروازے کھٹکھٹا کر ووٹ دینے کے لئے لایا جاتا ہے۔ اس پر میں سخت احتجاج کرتا ہوں۔ اسی لئے میں کہتا ہوں کہ حکومت کی مشنری کا اثر اس قسم کے کاموں سے ہونے والا نہیں ہے۔ یہ گاندھی جی کا نام لینے والوں پر دھبہ ہے۔ دور دراز مقامات پر رہنے والوں کو بھی یہ سہولت دیجئے اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ الکشنس میں رولنگ پارٹی کا رویہ کیا رہتا ہے۔ اس طرح کے عمل سے الکشن کا مطلب ہی فوت ہو جاتا ہے۔ اور آپ پر طرفداری کے کلنک کا جو ٹیکہ لگ چکا ہے وہ ہمیشہ کے لئے رہیگا۔ میں امید کرتا ہوں کہ آنریبل ہوم منسٹر جو ان واقعات سے اچھی طرح واقف ہیں۔ اس بارے میں اقدامات کریں گے۔

مجھے پولس کے بارے میں یہ کہنا ہے کہ

The police should be the custodians of the honour, life and property of the people.

مگر پولس جس گاؤں میں جاتی ہے تو وہاں لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ بلا نازل ہوگئی۔ خطرہ آگیا۔ ان لوگوں کو ۲۵۔ روپیئے تنخواہ دی جاتی ہے۔ الونسس ملا کر جملہ ۴۰ روپیئے دئے جاتے ہیں۔ وہ ایسی حرکت کرنے پر مجبور ہو جاتے ہیں جس سے ان کا پیٹ بھرے۔ اس لئے جو لوگ بڑی بڑی تنخواہیں پارہے ہیں ان کی تنخواہیں کم کر کے چھوٹی تنخواہیں پانے والوں کی تنخواہ کو بڑھانا چاہیئے۔ لیکن رولنگ پارٹی تو اس پر سوچنے کے لئے تیار ہی نہیں ہے۔ ان لوگوں کی معاشی حالت اس قدر پست ہے۔ انہیں کوئی خاص ٹریننگ نہیں دی جاتی۔ اس طرح انہیں رکروٹ کرنے سے کوئی کام ہونے والا نہیں ہے۔ وہ موضع میں پہنچتے ہیں تو پہلے پیٹ بھرنے کے لئے مرغی مانگتے ہیں ساھوکار سے اچار۔ املی بغیر پیسے دئے حاصل کر لیتے ہیں۔ بٹی چاکری تو اب تک چل رہی ہے۔ ان کے خلاف رپورٹ کرتے ہیں تو کہا جاتا ہے کہ کچھ نہیں ہو سکتا۔ اوپر کے آفیسر کے پاس شکایت کی جاتی ہے تو ان کا یہ رویہ رہتا ہے کہ وہ اپنے ماتحت کو بچا لینا چاہتے ہیں اگر کوئی شکایت کرتا ہے تو کہا جاتا ہے :-

“I welcome your complaints and shall see that something is done in the matter.”

ایسا کہنے والے کئی آفیسر ہیں۔ آنریبل ہوم منسٹر اس پر توجہ کریں۔

آنریبل ہوم منسٹر کی ہمدردی کی وجہ سے انہوں نے کچھ کیسز کی انکوائری

का आर्डर दिया जिस की وجه से म - ० - ० लोग मिर्रे तعلقे मिर्रे दश्मन होग्ये हैं - मिर्रे
ये नहिन कहें सकतें के हरेतعلقे मिर्रे इसा होता है लेकिन अस के बावजूद अस बारें मिर्रे
() फैक्ट-फाइंडिंग कमिटी ()
जो लोग शकایتें करते हैं - रास मिर्रे रीपोर्ट करते हैं तो अन्कवैरि के लैरे किस
अस के पास जाता है जिस के खलफ शकایت की गयी है - अस के फिक्शंस अन्वैकेशन
के लैरे नान ऑफिशियल का कमिशन रकहा जायें तो बेत अच्चा होगा - अन्को - अये वगैरे
दिना चहियें ताके वे वहाँ जाकर काम कर सकें - अज पुरे हाउस के म्बात का अक्बास
मिर्रे है के पुरेस बराबर वही काम करते जा रहें हैं जिस के खलफ एवाम को शकایت है -
अस से सवफ़ त्हायर होता है के पुरेस के रीवे मिर्रे कोयी त्बदिली नहिन होयी - अस नक्ते चीनी
से भी अस के रीवे मिर्रे कोयी फुरक नहिन होता तो ये बात तेजब है -

श्रीमती आशाताजी वाघमारे (वैजापूर) :—अध्यक्ष महोदय, मी माननीय गृहमंत्र्यांचे लक्ष
दोन तीन मुद्द्यांकडे वेधू अिच्छिते. प्रथम महत्वाची गोष्ट अशी कीं रस्ता वाहतुकीसाठी शहरांतून
जी व्यवस्था आहे, ती सर्व जिल्ह्याच्या ठिकाणी व्हावयास पाहिजे. कारण खेड्यातून चार पांच
मैल चालत येऊन लोकांना बस स्टॅंडवर झाडाखाली बसावे लागते. तसेच स्त्रियांनाहि झाडा-
खालीच बसावे लागते. जर त्या स्त्रीजवळ लहान मुल असले, आणि बस भरून आली तर, जेथे
दूध मिळत नाही व पाणी मिळत नाही अशा ठिकाणी, त्या स्त्रीला अन्हांत झाडाखाली बसावे
लागते. म्हणून बस स्टॅंडवर लोकांना बसण्यास व आश्रय घेण्यास जागा असणे अत्यंत महत्वाचे
आहे. या कडे गृहमंत्री लक्ष देतील अशी मी अपेक्षा करते.

दुसरी महत्वाची गोष्ट म्हणजे अशी आहे, आणि ती मोठ्या दुःखाने सांगावी लागते, कीं पोलीस
आमच्या संरक्षणासाठी असतात, पण जर कुंपणानेच शेत खाऊन टाकले तर त्याला काय अपाय ?
अशी पोलीस संरक्षकांची गोष्ट आहे. मला असे म्हणावयाचे आहे कीं, आज तुमचे कुंपणच शेत
खात आहे. या दोन वर्षांच्या काळांत पोलीस खात्यावरील खर्च निम्नाने कमी झालेला आहे.
आज पोलीसावरील खर्च तीन कोटी चौवीस लक्ष आहे. हा खर्च होणारच, कारण तो समाजाच्या
संरक्षणासाठी होत आहे, आणि पोलीस हे समाजाचे संरक्षक आहेत. पण ही गोष्ट पोलीसांना
अद्याप शिकवली गेली नाही असें मोठ्या दुःखाने म्हणावे लागते. कोणत्याहि ठिकाणी मग ती
अख्खादी यात्रा असो किंवा अख्खादा समारंभ असो, तेथे व्यवस्थेसाठी पोलीस असतात. आमच्या
येथे मुंबई प्रांताप्रमाणे दारूबंदी नाही. तेव्हां पोलीस अशा प्रसंगी दारू पिऊन अुभे असतात.
मला मोठ्या खेदाने म्हणावे लागते कीं अशा ठिकाणी जेव्हां स्त्रिया येतात, तेव्हां त्यांची सम्यतेची
वागणूक नसते. कारण आपण त्या ठिकाणी आलेल्या महिलांच्या संरक्षणासाठी आलो आहोत
ही जाणीव पोलीस अधिकाऱ्यांना नसते. मी विधान सभेत बोलत आहे, तेव्हां त्यांच्या वागणुकी
आणि वर्तनाचे वर्णन करणे योग्य होणार नाही. पण मला अवेढेच सांगावयाचे आहे कीं त्यांची
वागणूक अत्यंत असम्यतेची असते. याकडेहि गृहमंत्र्यांनी लक्ष द्यावे अशी माझी त्यांना आग्रहाची
विनंती आहे.

तिसरी गोष्ट अशी आहे की, या वर्षी स्त्री पोलीसवर सरकारने खर्च केला आहे. हैदराबाद मध्ये ४० स्त्री पोलीस आहेत. पण त्या फक्त हैदराबाद आणि सिकंदराबादसाठीच आहेत. मला नम्रतेने असे सुचवावयाचे आहे की प्रत्येक जिल्ह्यांच्या ठिकाणी त्यांनी अंक महिला पोलीस सब-इन्स्पेक्टर नियुक्त करावी. कारण स्त्रियांची चौकशी करताना पुरुष पोलीस फारच असभ्य पणाने वागतात. मी अंक जेल व्हिजिटर (Jail Visitor) असल्यामुळे मला माहित आहे. मी तेथील स्त्रीकैद्यांना विचारले, तेव्हा असे दिसून आले की अशा चौकशीमुळे त्या स्त्रिया अतक्या बिघडल्या आहेत की त्या आता सुधारणे शक्य नाही. म्हणून जर त्यांची चौकशी करण्यासाठी स्त्रीपोलीस असल्या तर त्यांना जाणीव राहील की आपणहि अंक स्त्री आहो व त्या पुरुष पोलीसांभितका त्रास त्यांना देणार नाहीत. शिवाय स्त्रियांची चौकशी पुरुषाकडून होणे हे देखील योग्य नाही.

मुंबयी मद्रास आणि मध्यप्रदेश येथे ज्या प्रमाणांत स्त्रीपोलीसांवर खर्च केला जातो त्या प्रमाणांत आमच्या येथे केला जात नाही. म्हणून आमच्या येथे त्या खर्चात वाढ झाली पाहिजे. आम्ही या दोन वर्षांत आमचे पोलीसांचे बजट अध्यावर आणले आहे, पण पुढच्या वर्षी स्त्री पोलीसांवरचे बजट चौपटीने वाढले पाहिजे अशी मी अपेक्षा करते. ज्याज्या ठिकाणी पोलीस स्टेशन आहे तेथे अंक स्त्री पोलीस अधिकारी नेमला जातील अशी आशा करून मी आपले भाषण दिलेल्या वेळांत संपविते.

* श्री के. विन्कट राम राऊ - मॅजिस्ट्रेट सर - हारम साने आज عدالت का बजट पेश हे -
अगर अस बजट कर दिकेहि तसेलुम हुताहे के तम एदालतु का बजट हती के हाईकोर्ट के सलसे मीं बेही और दिगर एभेदावों की तख्वाहों के सलसे मीं बेही हम दिकहेते हीं के बजट मीं زیادتی हुती जारही हे - لیکن جہاں عدالت اور عوام کے تعلق سے نظر ڈالتے ہیں تو معلوم हुताहे के गواहों के बेहतوں मीं کمی हुती जारही हे - مجھے اس سलसे मीं اعداد ایوان के سامنے رکهنے के لئے وقت نہیں हे - مختصراً آنریبل مॅजिस्ट्रेट سے یہ عرض کرنا हे के عدالتوں के اهم جز گواہ ہیں - اور ان के نالے سے یہ طرز عمل ٹھیک نہیں हे - اس کو تبدیل کرنے کی ضرورت हे - مीں اس پر اس قدر ہی کہتا ہوں -
اس کے بعد مीں یہ عرض کروں گا के یہ کہاجاتا हे के ”میان ایزمارٹل بٹ

لیٹیگیشن ایزماسارٹل،“ (Man is mortal but litigation is immortal)
یعنی مدعی اور مدعی علیہ مرجاتے ہیں لیکن مقدمہ نہیں مرتا - یہ مقولہ آج بھی صادق آتا हे - منصبی سے لیکر हाईकोर्ट تک یہی حالت हे - ایک حد تک مीں یہ ضرور مانتا ہوں के بقایا کام کو نکال دیا گیا हे - لیکن اب بھی بہت تیزی کے ساتھ اس سلسلہ مीں قدم اٹھانے کی ضرورت हे کیونکہ آج بھی سال ها سال کے مقدمات پڑے ہوئے ہیں - اس لئے اس پر توجہ کرنے کی سخت ضرورت हे -

اسکے ساتھ ساتھ پبلک پراسیکیوٹرس (Public prosecutors) کے سلسلے مीں مجھے یہ عرض کرنا हे - تمام اضلاع مीں انکا تقرر عمل مीں آیا हे - لیکن آپ کا طرز عمل ان کے ساتھ کیا हे - جس طرح رکشا مीں بیٹھنے کے بعد چار آنے دے کر چلے جاتے ہیں اسی طرح کا عمل ان کے ساتھ بھی کیا جاتا हे - انکا تعلق کن سے हे -

طبقہ و کلا سے ہے۔ انٹلکچوئلس سے ہے پبلک پراسیکیوٹرس ایڈوکیٹ جنرل سے لیکر اضلاع کی عدالتوں میں تک کام کرتے ہیں۔ لیکن ان کی زندگی تین تین سال کیلئے بڑھائی جاتی ہے۔ تو سرویس کے تعلق سے جو انسرنٹی خاصکر نیچے کی عدالتوں کے تعلق سے ہے وہ غور مکرر کے قابل ہے۔ ابھی ابھی مجھے یہ معلوم ہوا ہے کہ ایڈوکیٹ جنرل کے تحت جو پبلک پراسیکیوٹرس کام کرتے ہیں وہ ۱۲-۱۵ سال کا تجربہ رکھتے ہیں۔ لیکن انکو نوٹس دی گئی ہے۔ ان لوگوں کے بارے میں پولس ایکشن سے پہلے یہ اطمینان دلایا گیا تھا کہ انفارمٹی ہی سہی یہ وثوق دلایا گیا تھا کہ ہر کے تیر انکو پنج میں ریکروٹ کیا جائے گا۔ لیکن اس کے باوجود بھی یہ ان سرنٹی و بوسی ہی قائم ہے۔ اور آج حیدرآباد میں خود جو شخص بارہ سال تک کام کر چکا ہے اسکو نوٹس دی جاتی ہے۔ ایسا حکم عدالت کی جانب سے دیا جاتا ہے یا آنریبل منسٹر غور و خوض کے بعد دیتے ہیں مجھے علم نہیں ہے۔ لیکن اس چیز کو میں پرزور طریقہ پر ایوان کے سامنے رکھنا چاہتا ہوں جن لوگوں کو بار کے اہم ممبر ہونے کی وجہ سے سرویس میں لیا گیا ہے ان کے ساتھ یہ پرتاؤ قابل اعتراض ہے اور اس سلسلے میں حکومت کی پالیسی غور مکرر کی محتاج ہے۔

اس کے بعد ایک معمولی چیز کورٹس (Courts) کے تعلق سے کہتا ہوں۔ یہاں ہائیکورٹ کے اونچی اونچی عمارتیں موجود ہیں لیکن جولیٹنگنس آتے ہیں ان کے لئے کیا فسیلیٹیز ہیں۔ جس طرح نئے پل پر فٹ پاتھ ہے ویسا ہی فٹ پاتھ انکے لئے بھی ہے۔ انکے لئے فسیلیٹیز کچھ بھی نہیں ہیں۔ جب کورٹ فیس کے نام سے لیٹنگنس آپکے خزانے میں پیسہ جمع کرتے ہیں تو انکو فسیلیٹیز بھی ملنا چاہئے۔

اسکے ساتھ ساتھ یس۔ پی۔ اوز۔ (S.P.Os.) کے سلسلے میں یہ کہنا ہے کہ وہ ایڈوکیٹ جنرل کے تحت نہیں ہوتے۔ ایک خوددار آدمی پہلے تو یہ نہیں تسلیم کرتا کہ وہ ڈی۔ یس۔ پی کے تحت کام کرے۔ ایسے لوگ جن کی وکالت اچھی نہیں چلتی وہ ۲۵۰ روپے کیلئے یس۔ پی۔ اوز کے تحت کام کرتے ہیں۔ لیکن انکے ساتھ ڈی۔ یس۔ پی کا کس قدر نازیبا سلوک ہوتا ہے کہنے کیلئے وقت نہیں ہے۔ میں صرف اتنا ہی کہتا ہوں کہ جس طرح ڈی۔ یس۔ پی ہیڈ کانسٹیبل کے ساتھ سلوک کرتے ہیں ویسا ہی انکے ساتھ بھی سلوک کرتے ہیں۔ یہ ناقابل برداشت ہے۔ اسلئے وہ چاہتے ہیں ایڈوکیٹ جنرل کے تحت ہی انکو رکھا جائے۔ اور اس پر بھی یہ حالت ہے کہ تین تین سال کیلئے تقررات ہوتے ہیں۔ تو میں یہ عرض کر رہا تھا کہ پولس ڈپارٹمنٹ کے تحت انہیں رکھنے کی ضرورت نہیں ہے۔ کیونکہ جب مستقل سرکاری ملازمین کی طرح ان پر آپ فرائض عائد کرتے ہیں تو حکومت پر یہ لازم آجاتا ہے کہ انکو فسیلیٹیز بھی ویسی ہی ملنا چاہئے جیسی کہ دیگر ملازمین کو دی جاتی ہیں۔

اس کے بعد میں پولیس کے طرز عمل اور رویہ سے متعلق کہتا ہوں۔ اس کے متعلق ہم کو بولنے کی اور آپ کو سنتے کی عادت ہو گئی ہے۔ سوالات کے موقع پر بھی یہی کہا جاتا ہے یہ ”بھی صحیح نہیں ہے۔ یہ بھی صحیح نہیں ہے۔“ اس سلسلہ میں

بنیادی وجوہات پر غور کرنے کی ضرورت ہے۔ میں ۷۰ روپیٹے ہانے والے پولیس کانسٹیبل کو ذمہ دار نہیں گردانتا۔ لیکن حکومت کی جو پالیسی ہے اس پر توجہ دلانا چاہتا ہوں۔ عوام اور حکومت کے ناتے سے جو پالیسی ہے اس سلسلہ میں مجھے زیادہ تفصیلات بنانے کی ضرورت نہیں ہے۔ میں اس بجٹ ہی کو لیتے ہوئے یہ کہوں گا کہ ہوم ڈپارٹمنٹ نے انٹی کمیونسٹ ورک کے لئے ۲۰۰ تا ۳۰۰ کا ایک کلرک اور عملہ رکھا ہے۔ جو ڈیموکریٹک پارٹیز ہیں ان کے خلاف کام کرنے کے لئے خاص طور پر ایک سکشن رکھنے کی کیا ضرورت ہے۔ کیا اس طریقہ سے ڈیموکریسی کے بیل بوئے بڑھنے والے ہیں۔ کیا ان طریقوں سے ڈیموکریسی کی بیخ کنی نہیں ہوتی۔ اس کے علاوہ اضلاع میں کیا ہوتا ہے میں وہ بھی بتلانا چاہتا ہوں۔ وہاں معمولی خطوط بھی وقت پر نہیں ملتے۔ ہمیں ہمارے اخبارات تک نہیں ملتے۔ تو پھر یہ کس کا شکار ہوتے ہیں۔ یہ آپ کے پولیس ڈپارٹمنٹ میں سنسر کا شکار ہوتے ہیں۔ میں خود اپنا تجربہ بتلاتا ہوں کہ پولیس کے سنسر کا شکار ہو کر میں خطوط مجھ تک نہیں پہنچتے۔ اپوزیشن کے ساتھ حکومت کی کیا پالیسی ہوتی چاہیے اس پر غور کیا جانا چاہیے کیونکہ اپوزیشن پارٹیز کے ساتھ حکومت کی جو پالیسی ہوتی ہے وہی عوام کے ساتھ بھی ہوگی۔ آج حکومت کے جو وزراء ہیں ان کے آنکھ۔ کان اور ناک ہے۔ اخبارات میں یہ تمام چیزیں لائی جاتی ہیں لیکن پھر اپوزیشن پارٹیز کے سلسلہ میں دیہات میں جس قسم کی ذہنیت کا بیج بویا گیا ہے اسی کو میں اس کی جڑ بنیاد قرار دیتا ہوں کیونکہ حکومت کی اس پالیسی کی وجہ سے ہی پولیس پارٹی ایسی ہو گئی ہے۔ اور یہ رویہ اختیار کیا ہے۔ اس سلسلہ میں اس طرف کے بعض آنریبل ممبرس نے تقریریں فرمائیں اور یہ کہا کہ آپ یہ تو کہتے آئے ہیں اس کے بجائے کچھ کنسٹرکٹیو سجیشنس (Constructive Suggestions) دیجیئے۔ بہت سے کنسٹرکٹیو سجیشنس ہیں بشرطیکہ سننے کے لئے کان ہوں۔ میں یہ کہوں گا کہ یہاں جو قانون بنایا جاتا ہے ممبروں (Number one) محکمہ جو اس کی خلاف ورزی کرتا ہے وہ پولیس ہے۔ اس پر توجہ کریں تو بہت سی شکایات خود بخود کم ہو جائیں گی۔

اس کے بعد میں یہ عرض کروں گا کہ ضابطہ فوجداری جس کو انگریزوں نے اپنی غیر مستحکم حکومت چلانے کے لئے عوام پر لادنے کی کوشش کی وہ ویسا ہی قائم ہے۔ اگر آج کوئی حکومت کا ذمہ دار ہے تو سب سے پہلے چیف منسٹر۔ اس کے بعد کلکٹر اور اس کے بعد سب انسپکٹر کیونکہ انہیں اس قسم کے وسیع اختیارات ہوتے ہیں کہ وہ کیا نہیں کر سکتے۔ انہیں وسیع اختیارات ضابطہ فوجداری کے تحت دئے گئے ہیں۔ اسی کا نتیجہ ہے کہ وہ ان اختیارات کا مس یوز (Misuse) کرتے ہیں۔ اپوزیشن پارٹیز کو دبانے کی کوشش کی جاتی ہے لیکن ساتھ ساتھ اس کا رفلکشن (Reflection) عوام پر بھی پڑتا ہے۔ اور اشانتی (अशान्ति) میں جانے والے افراد اس سے اپنی جیب گرم کرنے کی کوشش کرتے ہیں۔ یہ تمام چیزیں اس کی جڑ بنیاد ہیں۔ اس طرح سے انہیں آج غیر معمولی اختیارات حاصل ہیں۔

جس شخص کو چاہے گرفتار کر سکتے ہیں۔ اور اس کے ساتھ جو چاہے کر سکتے ہیں۔ یہ اختیارات جو پولیس کو دئے گئے ہیں ان میں تبدیلی کی ضرورت ہے۔ اس کے ساتھ ساتھ جب پولیس کی جانب سے کوئی مقدمہ دائر ہو اور وہ ناکام ہو جائے تو ان لوگوں کے خلاف ایکشن لینا چاہیئے جو اس قسم کے جھوٹے مقدمات پیش کرتے ہیں۔ پولیس کے حکامان کی یہ عادت ہو گئی ہے کہ جس کسی پر چاہیں مقدمہ دائر کر دیں اور اس کو عدالت کی کشاکشی میں پھنسائیں۔ اس کے ساتھ ساتھ رولنگ پارٹی اور پولیس میں کیا نعلق ہے اس کو بھی میں ایوان کے ملاحظہ میں لانا چاہتا ہوں۔ نہ روزمرہ کی عام شکایت ہے۔ جہاں پولیس گڑبڑ کرتی ہے اس کے ساتھ ساتھ وہاں کانگریس والے بھی رہتے ہیں۔ میں ہر کس و ناکس پر اس کا الزام عائد نہیں کرتا بلکہ بعض راکشیپ ہوتے ہیں ان کی حد تک میرا یہ کہنا ہے۔ میں جنگوں کا ایک واقعہ ایوان کے ملاحظہ میں لانا چاہتا ہوں۔ ایک پنچایت کمیٹی مقرر ہوئی تھی اور مشترکہ زراعت کر کے وہاں کے چنے کی پیداوار کو فروخت کیا اور اس رقم سے وہ لوگ ایک اسکول اور ایک دیول تعمیر کرتے ہیں وہاں اسکول بلڈنگ کے ساتھ ساتھ ایک مڈل اسکول کا قیام بھی عمل میں لایا گیا۔ بد قسمتی سے وہاں کوئی کانگریسی ورکر نہیں ہے وہاں کا دیشمکھ کانگریس کا صدر ہے اور وہاں کا پروہت کانگریس کا سکرٹری ہے۔ یہ دونوں مل کر پولیس میں شکایت کرتے ہیں کہ جس شخص نے یہ اسکول بنایا ہے وہ بدعاش ہے۔ اس کے بعد آپ کے (۱۰۱) اور (۱۱۰) پروٹیبو سکشنس اس کے لئے ناگ سانپ بن کر آتے ہیں۔ اس کو مقدمہ کی کشاکشی میں مبتلا کرتے ہیں۔ ایک دفعہ مقدمہ خارج ہو جاتا ہے تو مکرر مقدمہ دائر کرتے ہیں۔ ہوتا یہ ہے کہ پولیس سب انسپکٹر جو ہوتے ہیں وہ اوپر کے طبقہ سے ہی تعلق رکھتے ہیں۔ دیشمکھوں اور پٹیل پٹواریوں اور فیوڈل سکشن ان کے روٹس رہتے ہیں۔ اگر ان کے پاس گاؤں کا کوئی بھی بڑا آدمی اگر کچھ شکایت کرتا ہے تو اس کے لئے ان کے دل میں ہمدردی کی لہریں موجیں مارتی ہیں۔ عوام کی شکایت وہ لوگ نہیں سنتے۔ کس بھونڈے اور غلط طریقہ پر آپ کے پروٹیبو سکشنس استعمال ہو رہے ہیں اس کی میں نے ایک مثال آپ کے سامنے پیش کی۔ صرف اسکول کی تعمیر کرنے کے سلسلہ میں اس پر (۱۱۰) کے تحت مقدمہ چلایا جاتا ہے۔ میں پوری ذمہ داری سے کہتا ہوں پرچہ وغیرہ منگا کر آرہیل منسٹر دیکھ سکتے ہیں۔ اس طریقہ سے خود عدالتوں کو بھی متاثر کیا جاتا ہے۔ اگر (۱۱۰) کے تحت کوئی مقدمہ خارج ہو جاتا ہے تو پھر اس کے بعد پولیس انسپکٹر کانگریس کے پریسیڈنٹ سے لیکر منصفی تک سب لوگوں کو متاثر کرتا ہے۔ دراصل وہاں کے نام نہاد کانگریسی یہ چاہتے تھے کہ چنے کی پیداوار ہڑپ کر لی جائے۔ پی۔ ڈی۔ یف والے یہ چاہتے تھے کہ اس پیداوار کا نصف نکال کر اسکول کی تعمیر میں خرچ کیا جائے۔ کانگریس کے پریپوزل کی پولس تائید کرتی ہے اور اس کے ساتھ ساتھ عدالتوں کو بھی متاثر کیا جاتا ہے۔ اس سلسلہ میں مرافعہ بھی کیا گیا ہے۔ لیکن میں یہ عرض کروں گا کہ جہاں کہیں پروٹیبو سکشنس کا اس طرح بیجا استعمال ہوتا

ہے وہاں پولیس کے عہدہ داروں کو اس کا ذمہ دار گردانا چاہیئے تاکہ اس طرح کے غیر ذمہ دارانہ حرکات عمل میں نہ آسکیں۔ اور اس کا انسداد ہو۔

شری بسن گروہ (لنگسگور)۔ مسٹر اسپیکر سر۔ پولیس ڈپارٹمنٹ کے بجٹ پر میرا ایک کانسی ٹیونسٹل آبجکشن ہے۔ اڈمنسٹریشن آف جسٹس کے مد میں دس لاکھ سات ہزار روپیہ جو بتائے گئے ہیں میں سمجھتا ہوں کہ وہ پورے ہائی کورٹ کے بنائے گئے ہیں۔ حالانکہ (۷۱-۷۲) میں صرف ہائی کورٹ کے جسٹس کی سیلیریز اور ان کے الاؤنس کے بارے میں چارجڈ (Charged) ہے۔ لیکن پورے ہائی کورٹ کے اکسپینڈیچر کی ووٹنگ اس میں نہیں آتی۔ کیونکہ یہاں ہم ڈسکشن کر سکتے ہیں اور اسٹیبلشمنٹ پر ووٹ نہیں دے سکتے۔ اس کا یہ مطلب ہو سکتا ہے۔ مگر کانسی ٹیونسٹل کے لحاظ سے میں سمجھتا ہوں کہ ہائی کورٹ کے جسٹس کی سیلری اور ان کے الاؤنس کے بارے میں چارجڈ اکاؤنٹ ہو سکتا ہے۔ مگر دوسرے اکسپینڈیچر بھی اس میں آتے ہیں۔ اس طرح سے بجائے چارجڈ اکاؤنٹ (۲۴۱۱۱۰) ہو سکتے ہیں۔ باقی ادراکسپینڈیچر (Other expenditure) ہو سکتے ہیں۔ اس لئے میں سمجھتا ہوں کہ اس میں تبدیلی ہونا لازمی ہے۔

دوسری چیز یہ ہے کہ حال ہی میں گورنمنٹ کی اس پالیسی کا اظہار ہوا تھا کہ ہر نعلیہ پر ایک منصفی قائم کی جائے۔ لیکن ابھی تک اس کا انتظام نہیں ہوا۔ اور اس کے برخلاف گلبرگہ ضلع میں سے ایک منصفی کم کرنے کی پالیسی کا اظہار گورنمنٹ کی جانب سے ہوا ہے میں سمجھتا ہوں کہ یہ ایک تکلیف دہ چیز ہے۔ کیونکہ ہر تعلقہ کے ہیڈ کوارٹر پر ایک منصفی کا ہونا لازمی ہے نا کہ ہر تعلقہ میں کافی سہولت مل سکے۔ ورنہ رعایا کو تکلیف ہوگی۔ گلبرگہ ضلع میں تعلقہ جیورگی ایسا تعلقہ ہے اگر وہاں کی منصفی کو کم کیا جائے تو جیورگی کے لوگوں کو کم از کم ۸۰ میل کا فاصلہ طے کر کے گلبرگہ آنا پڑیگا۔ درمیان میں پل نہ ہونے کی وجہ سے بارش کے زمانے میں ان لوگوں کو بڑی تکلیف ہوتی ہے۔ شاہ پور سے یادگیر اور یادگیر سے ہوتے ہوئے گلبرگہ آنا پڑتا ہے۔ اس کی وجہ سے نہ صرف عوام کو بلکہ گورنمنٹ کو بھی زیادہ اکسپینڈیچر ہوتے ہیں۔ پولیس والوں کے آنے جانے کا خرچہ۔ گواہوں کو طلب کرنے کا خرچہ وغیرہ اس قسم کے اکسپینڈیچر زیادہ ہوں گے۔ میں آنریبل منسٹر سے عرض کروں گا کہ شاہ پور اور جیورگی کے لئے ایک منصفی شاہ پور میں قائم کی جائے تو اچھا ہوگا۔ اگر آنریبل منسٹر اس کے متعلق غور کریں تو اس تعلقہ کی رعایا کی تکلیف کم ہو جائیگی جو اب تک تکلیف اٹھا چکی ہے۔

تیسری چیز یہ ہے کہ حال ہی میں یہ بھی ظاہر کیا گیا تھا کہ تعلقہ الند۔

کم۔ سیڑم۔ تاندور میں کورٹ لینگویج (Court language) مرہٹی قرار دی گئی ہے۔ اور بیدر ضلع میں سون پور۔ بیدر۔ ہمناباد۔ ظہیر آباد اور ملکھیر کو مرہٹی زبان کا علاقہ قرار دیا گیا ہے۔ میں کرنائک کی طرف سے حکومت سے یہ عرض

کرنا چاہتا ہوں کہ کرناٹک کے تعلق سے حکومت حیدرآباد نا انصافی کر رہی ہے۔ اس واسطے کہ ہمارے پاس بیدر ضلع میں احمد پور اور نلنگہ چھوڑ کر پورے ضلع کرناٹک کے تسلیم کئے گئے ہیں۔ اس طرح گلبرگہ کو بھی کنڑی ضلع تسلیم کیا گیا ہے۔ رائچور میں بھی عالم پور اور گندوال کو چھوڑ کر پورے ضلع کو کرناٹک تسلیم کیا گیا ہے۔ یہ چیز خود کانگریس کے رزولیشن میں درج ہے۔ اس کے باوجود میں نہیں سمجھتا کہ بیدر کو اس طرح سے مرہٹواڑہ اور تلنگانہ میں کیوں بٹوارہ کیا جا رہا ہے۔ گلبرگہ جو خاص طور پر کنڑی ضلع ہے اس میں سے چار تعلقوں کی کورٹ لینگویج تلگو یا مرہٹی قرار دی گئی ہے۔ ہائی پاور کمیشن کے آنے سے پہلے ہی کرناٹک کی رعایا پر اس قسم کا انبائے کرنے کی ایک کانسپائریسی (Conspiracy) معلوم ہوئی ہے۔ اگر آپ اردو کو کورٹ لینگویج سے نکال کر دوسری ریجنل لینگویج کو اس کی جگہ قائم کرنا چاہتے ہیں تو میں آپ سے یہ صاف عرض کروں گا کہ احمد پور اور نلنگہ کو چھوڑ کر بیدر کی کورٹ لینگویج کنڑی رکھئے۔ پورے گلبرگہ ضلع میں کنڑی رکھئے اور رائچور میں عالم پور اور گندوال کو چھوڑ کر کنڑی لینگویج قائم کیجئے۔ اگر ایسا آپ نہیں چاہتے ہیں تو میں سمجھتا ہوں کہ یہ بالکل نا انصافی ہوگی۔ اس کا تصفیہ تو ہائی پاور کمیشن کو کرنا چاہیئے۔ اور بہا شاواری پرانتھ کا باؤنڈری کمیشن جو نرٹس کرے اس میں کسی قسم کی تبدیلی نہ ہونی چاہیئے۔ اگر ایسا نہ ہوا تو کرناٹک کی جتنا جواب تک بھی حیدرآباد حکومت کی نا انصافی برداشت کر رہی ہے وہ ان چیزوں کے خلاف پروٹسٹ کریگی۔ اور اپنے حقوق حاصل کرنے کے لئے پیس فل مینس (Peaceful means) اڈاپٹ کریگی۔ پہلے کی حکومت نے بھی کرناٹک کی جتنا کے لئے کوئی سہرلت نہیں دی تھی اور آج کی حکومت میں بھی مہاراشٹرا اور آندھرا دونوں کے انٹیرسٹس ہی زیادہ ہیں۔ کرناٹک کے جو کچھ بھی گریونس اور ڈیمانڈس ہیں ان کو نظر انداز کیا جا رہا ہے۔ میں کچھ اور چیزیں دوسرے آئٹم کے وقت عرض کروں گا لیکن فی الوقت کورٹ لینگویج کے بارے میں میں یہ صاف عرض کرنا چاہتا ہوں کہ ہائی پاور کمیشن کے تصفیہ تک اور حیدرآباد کاؤس انٹگریشن ہونے تک اسٹیٹس کو (Status Quo) میں نہیں کیا جائے۔ اور ان علاقوں میں بتدریج اردو کو نکال کر کورٹ لینگویج کو کنڑی میں تبدیل کیا جائے۔ اگر اس کے خلاف کچھ ہوگا تو کرناٹک کی جتنا اس کی ذمہ دار نہیں ہوگی بلکہ حیدرآباد اسٹیٹ کی حکومت اسکی ذمہ دار ہوگی۔

اس کے علاوہ ایک اور چیز مجھے کہنی ہے۔ کرناٹک میں جو بسنس ڈپوز ہیں وہاں لوگوں کے ٹھہرنے کا انتظام نہیں ہے۔ بہت سے آنریبل منسٹر ہمنآباد اور گلبرگہ تشریف لاتے ہیں۔ اور یاد گیر سے ہو کر شولا پور وغیرہ جاتے ہیں انہوں نے دیکھا ہوگا کہ جہاں جہاں بس اسٹانڈ ہیں وہاں لوگوں کے ٹھہرنے کے لئے کافی انتظام نہیں ہے۔ یاد گیر تعلقہ میں جس جگہ گورنمنٹ کے بس آتے ہیں اور جس جگہ سے گزرتے ہیں وہاں ٹھہرنے کا انتظام نہیں۔ کم از کم وہاں ٹین شیلڈس کا بھی انتظام نہیں ہے۔ جس کی وجہ سے بارش میں بہت تکلیف

ہوئی ہے۔ اس لئے یاد گیر اور ہمنما آباد میں وہاں کی رعایا کو ٹھہرنے کے لئے انتظام ہونا چاہیئے۔ تاکہ گرما۔ سرما اور بارش میں سہولت مل سکے۔ اس کے علاوہ یہ بھی میں عرض کروں گا کہ جہاں کہیں بسس میں ہم جاتے ہیں.....

Mr. Deputy Speaker : The time is over.

شری شانتا بائی - مسٹر اسپیکر سر - میرے اٹھنے کے ساتھ میرے بھائی دیشپانڈے ہنس رہے تھے -

یہ آپ کی مہربانی ہے۔ کل سے پولیس بجٹ پر بارش کی طرح ہر شخص بحث کر رہا ہے۔ صرف مجھے پانچ منٹ دئے گئے ہیں۔ اس کی پابندی کرنا ہے۔ مجھے اس سلسلے میں تھوڑے ہی پائنٹس رکھنا ہے۔ مرہٹی میں ایک کہاوت ہے -

“दर वर्षा प्रमाणे गणपती येतो”

اسی طرح ہر سال پولیس بجٹ پر سب سے زیادہ بحث ہوتی ہے اور اسی پر گالیوں کے گولے بارش کی طرح برسائے جاتے ہیں بجٹ میں پچھلے دو سال سے کمی ہورہی ہے۔ لیکن اس کے باوجود بعض آئربیل ممبرس جو ذمہ داری کے ساتھ ایک لاکھ عوام کی نمائندگی کرتے ہیں بار بار یہ دہراتے رہتے ہیں کہ پولس کے خرچہ میں کمی کرو۔ کیا میں تھوڑی دیر کے لئے پوچھ سکتی ہوں کہ پولس کو کم کرنا حقیقت میں ٹھیک ہوگا۔ پولس ہماری حفاظت کا کام کرتی ہے اس کو کم کریں تو بد امنی زیادہ ہونے کا امکان ہے۔ گزشتہ وغیرہ پر اعتراض کیا جاتا ہے۔ اس قسم کے اعتراضات برابر دو سال سے کئے جارہے ہیں۔ میں یہ کہنا چاہتی ہوں کہ آپ لوگ ذمہ دار لوگ ہیں اس طرح کی باتیں نہیں کرنی چاہئے۔ اور میں پراتھنا کرتی ہوں کہ اس سال کے بجٹ کو آپ لوگ منظور کر لیں۔ میں آئربیل ہوم منسٹر کا شکریہ ادا کرتی ہوں کہ انہوں نے پولس ڈپارٹمنٹ میں عورتوں کی بھرتی کی ہے۔ چالیس عورتوں کا تقرر اس میں کیا گیا ہے۔ میرا کہنا یہ ہے کہ انکی ذمہ داری ان پر لادنی چاہئے۔ انکو کوئی ذمہ دارانہ کام دینا چاہئے۔ میں سمجھتی ہوں کہ سی۔ آئی۔ ڈی۔ میں عورتیں زیادہ بہتر طریقے پر کام کر سکتی ہیں اسلئے اس میں انکو زیادہ حصہ دینا چاہئے۔ اور سی۔ آئی۔ ڈی۔ میں انکو کام کرنے کا موقع دیا جائے تو وہ اچھی کارگزاری کر دکھائیں گی۔ میں ہر ماہ جیل کی وزٹ (Visit) کرتی ہوں۔ میں دیکھتی ہوں کہ بہنوں کو ۱۰۔۱۰۔۱۵۔۱۵ سال کی سزا دی جاتی ہے۔ میں سمجھتی ہوں کہ اگر سی۔ آئی۔ ڈی۔ میں ہماری بہنوں کو لیا جائے گا تو وہ اچھی طرح سے جانچ کرینگی اور صحیح رپورٹ دیں گی۔ میں پراتھنا کرتی ہوں کہ ہماری چالیس بہنوں کو اس میں لیا گیا ہے لیکن اب اور زیادہ بہنوں کو لیا جائے۔ ہر ضلع میں انکے نا کے رکھنے چاہئیں۔ اگر اس پر اپوزیشن کی طرف سے اعتراض ہو تو میں یہ کہوں گی کہ عورتیں جتنا کام کر سکتی ہیں آپ لوگ نہیں کر سکتے۔ (Laughter) صحیح کہوں تو آپ لوگوں کو غصہ آسکا۔ گذشتہ دو سال سے اس بجٹ پر جو گالیاں اور برسات کی طرح باتوں کا جو چھڑکاؤ کیا جا رہا ہے

اس طرح اس سال نہیں ہونا چاہئے۔ میں آنریبل منسٹر صاحب کو پھر مبارکباد دیتے ہوئے کہوں گی کہ سی۔آئی۔ ڈی۔ میں عورتوں کو زیادہ سے زیادہ بھرتی کرنا چاہئے۔ میں اپوزیشن پارٹی کے بھائیوں سے کہوں گی کہ بغیر کسی اعتراض کے اس سال کا بجٹ منظور کر دیں لیکن عورتوں کے لئے بجٹ میں گنجائش ہونی چاہئے۔ (Laughter) کیوں کہ عورتیں ہی دیش کے مسائل کو حل کر سکتی ہیں۔ ہر بات میں عورتیں آگے بڑھ رہی ہیں۔ میں بھی عورت ہوں اسلئے کہتی ہوں کہ عورتوں کو زیادہ موقع دینا چاہئے۔ (Laughter) بلکہ میں تو یہ کہوں گی کہ عورتوں کو انسپکٹرس اور آئی۔ جی۔ پی۔ کی پوسٹس (Posts) بھی دینا چاہئے۔ چالیس عورتوں کو لفٹ۔ رائٹ (Left Right) کرنے کیلئے لیا گیا ہے یہ کافی نہیں ہے۔ میں کہوں گی کہ زیادہ سے زیادہ اونچے پوسٹ (Post) عورتوں کو ملنا چاہئے۔ میں اپوزیشن پارٹی سے کہوں گی کہ اس بجٹ کو منظور کر لیں تو آئندہ آپ کے مسائل ٹھیک طور پر حل ہوسکیں گے۔

శ్రీమతి. ఆరుట్ల కమలాదేవి: (ఆలేరు) :

అధ్యక్షా, మహాశయూ,

ఇదే మూడవ సంవత్సరం బడ్జెటు. పోలీసుపైన కొద్దిగా డబ్బు తగ్గించారని చెప్పి మనం యీనాడు పోలీసు మినిష్టరుగారిని మెచ్చుకోవడం గాని, వారికి వందనాలర్పించడంగాని మన బాధ్యత కాదు. ఈ సంవత్సరం బడ్జెటులో పోలీసుపైన ఖర్చు కొంత తగ్గించారు. నిజమే కాని ప్రతి సంవత్సరం ఏవిధంగా అయితే పోలీసుకు ఖర్చు పెంచుతూ వచ్చారో అదే విధంగా ఇప్పుడు కొద్ది కొద్దిగా తగ్గిస్తూ వచ్చారు. ఈ రోజున హోంమంత్రిగారు ఒక ప్రశ్నకు జవాబుచెబుతూ ౧౯౪౩వ సంవత్సరం పోలీసుకు ౫౦ లక్షలు ఖర్చు పెట్టబడిందని చెప్పారు. ౧౯౪౪వ సంవత్సరంలో ౫౯.౨ లక్షలవరకు యీ పోలీసు ఖర్చును పెంచుతూ వచ్చారు. ఏదో కొద్ది మొత్తము తగ్గించినంత మాత్రమున పూర్తిగా పోలీసుపై ఖర్చు తగ్గించారని కాదు. ౧౯౪౩ వ సంవత్సరం నుండి ౧౯౪౩ వ సంవత్సరం వరకు అంటే ఈ వది సంవత్సరాలలోను ౫౦ లక్షల నుండి ౫౯.౨ లక్షలవరకు పోలీసు ఖర్చును పెంచడం జరిగింది. పోలీసు యాత్రను అయిన తరువాత కూడా రజాకార్లు వరిపాలన తరువాత కూడా, చివరకు కాంగ్రెసు పరిపాలనలో కూడా, మూడు సంవత్సరాల కాంగ్రెసు ప్రభుత్వకాలంలో కూడా పోలీసుపై ఖర్చును పెంచుతూ వచ్చారు. దానిని బట్టి యీ సంవత్సరం కొద్దిగా తగ్గించినంత మాత్రమున నిజంగా పోలీసు ఖర్చును తగ్గించారా అనేది చూడాలి. అనాడు పోలీసులు కాజులినన్నే యూనియన్ నుంచి తప్పించుకొన్నారు. ఇప్పుడు వారిని తగ్గించడం వల్ల వదిలక్షల అరపైబదివేల డబ్బు మిగిలింది. ౩ జెటాలియన్స్ లో ఒకటి తగ్గించారు. అందువల్ల ౭ లక్షల ౫౪వేల మిగిలాయి. రైల్వేలను సెంటర్ తీసుకోవడంవల్ల రైల్వే పోలీసు ఖర్చు తగ్గి అందువల్ల కొంత డబ్బు మిగిలింది. ఈ విధంగా వీనిపైన మిగిలింది దాదాపు ౨౦ లక్షల డబ్బు. అంతేగాని, గ్రామాలలోపల పోలీసును తగ్గించారా, గ్రామాలలోని క్వంటంప్ తగ్గించారా, అనేది అలోచించాలి. ప్రతి గ్రామంలోపల ఇదివరకు ఎంతమంది పోలీసులు ఉన్నారో ఇప్పుడు అంతమంతో ఉన్నారని ఇదివరకు ఎన్ని క్వంటంప్ ఉన్నాయో ఇప్పుడు అన్నీ ఉన్నాయి.

క్యాంప్స్ను తగ్గించలేదు, పోలీసును తగ్గించలేదు. ప్రజలను అసహ్యించుకునే పోలీసులు అతాగే ఉన్నారు. ౧౯౫౩ వ సంవత్సరం వరకు పోలీసుపై ఏదైతే ౫౯౨ లక్షలవరకు ఖర్చు పెడుతున్నారో అందులో నుంచి ౨౦ లక్షలు తగ్గించినంత మాత్రమున సరిపాడు. ౧౯౫౨ వ సంవత్సరములో అప్పటి అవసరము కోసము బయటించి పోలీసును తప్పించుకొని పోలీసు ఖర్చును పెంచాము. ఇప్పుడు ఆ అవసరము అయిపోయింది. కాబట్టి తిరిగి ౧౯౪౩ వ సంవత్సరమునాటి లేక ౧౯౫౦ వ సంవత్సరము నాటి పోలీసు ఖర్చువరకు తగ్గిస్తే సరిపాతుంది. కాబట్టి, ౧౯౪౩, ౧౯౫౦ వ సంవత్సరాలలో ఎంతైతే పోలీసుకు ఖర్చుపెట్టారో అంతవరకు తగ్గించాలి. అంతేగాని, ౨౦ లక్షలు తగ్గించినంత మాత్రమున సరిపాడు. నిన్న ఒక ప్రశ్నకు జవాబు చెబుతూ హోంమంత్రి ముహినుబాద్ లో ఒక పోలీసు సబ్-ఇన్ స్పెక్టరు రేప్ (Rape) చేసిన విషయం నిజమేనని ఒప్పుకొన్నారు. పోలీసులు ఇటువంటి అత్యాచారాలు చేస్తుంటే, యీ పోలీసు శాఖను సహజంగానే యెడం మంచిది గాదు. ఆడ పోలీసులను పేస్తే ఇటువంటి అత్యాచారాలన్నీ పోతాయని అంటున్నారు. ఆడపోలీసులను పేసినంత మాత్రాన ఇవి పోవు. ఈ నాడు అధికారంలో ఉన్న పార్టీ పాలనీ మారాలి. ఈ పార్టీయొక్క పద్ధతి మారాలి. ఆడపోలీసును పేయడం అవసరమే. ఆడ పోలీసులు కావాలని మేము కోరాము. ఇప్పుడు వున్న పోలీసులను తగ్గించి కొంతమంది ఆడపోలీసులను ఏర్పాటు చేయాలి. ఇప్పుడు ఉన్న పోలీసులను తగ్గించకుండా అదనంగా పోలీసులను ఏర్పాటు చేసి ఎక్కువ ఖర్చుపెట్టడము కాదు. ఈ నాడు ఆడవారు మంత్రియై కూర్చున్నారు. ఈనాడు ఆడవారు మంత్రియై సీట్లలో కూర్చుని ఎంత చేస్తున్నారో, పోలీసులలో ఆడవాళ్ళను తీసుకొన్నా అంతే చేస్తారు. ఆడవాళ్ళు వచ్చినంత మాత్రమున పోలీసు పాలనీగాని, ప్రభుత్వ పాలనీగాని, మారదు. అయితే, ఇప్పుడు వున్న పోలీసును తగ్గించకుండా కొత్తగా ఆడ పోలీసులను ఏర్పాటు చేసి హెచ్చు డబ్బును పోలీసుపైన ఖర్చుపెట్ట వలసిన పనిలేదు. ఈనాడు వున్న పోలీసులను తగ్గించి కొంతమంది ఆడపోలీసులను నియమిస్తే అత్యాచారాలు కొంతవరకు తగ్గవచ్చును.

ఆర్. టి. డి. విషయం చూస్తే,—పోయిన సంవత్సరం స్ట్రైక్ (Strike) జరిగింది. ఆ సందర్భంలో పోలీసుకు ౯౫వేల రూపాయలు ఖర్చు పెట్టారు. పోలీసులను ఆ సందర్భంలో పిలిపించి ఆ ఖర్చు పెట్టారు. ఆర్. టి. డి. కి ఎంత ఆదాయం వస్తుంది? ఖర్చు పోగా ౩.౨ లక్షల వరకు స్ట్రైమిగిలుతుంది. యిక్ వల్ల శాంత నష్టము వచ్చినా ౩.౨ లక్షల వరకు పిగిలింది. వారు బోనసు కావాలని కోరితే, అందుకు అంగీకరించడం లేదు. వారు బోనసు కావాలని కోరినంత మాత్రాన ఇల్లెగల్ (Illegal) అంటూ ౧౬ రోజులు జైతం ఇవ్వలేదు. కాని వారు స్ట్రైక్ చేస్తే పోలీసులను పిలిచి వార్షిక్రింద ౯౫వేల రూపాయలు ఖర్చు పెట్టడానికి మాత్రం ఒప్పుకొన్నారు. వారు మూడుమాసాలు బోనసు కోరితే ఒక నెల బోనసు అయినా ఇవ్వలేదు. స్ట్రైక్ చేసిన రోజుల డబ్బును కూడా ఇంతవరకు వారికి ఇవ్వలేదని విన్నాం.

ఆర్. టి. డి. లో సామానులు పెట్టేవారు హమాలీలను గురించి కొన్ని విషయాలు చెబుతాను. బస్సులో నెకండుక్లాసు చార్జీలు వున్నాయి. ప్రజలు బస్సు చార్జీలనే ఇవ్వలేని స్థితిలో వున్నారు. అసలు బస్సు రోడ్లను తగ్గించాలి. చిన్న మూటను పైన పడవేయటానికిగాని క్రిందకు దింపటానికి గాని హమాలీలు రెండు అణాలు తీసుకొంటున్నారు. సామాన్య ప్రజలు అసలే బస్సుచార్జీలు ఇవ్వలేని స్థితిలో ఉంటే యీ డబ్బునుకూడా ఎత్తా ఇవ్వారు. రైల్వేలో పెద్ద-పెద్ద మూటలను

* شری رنگ راؤ دیشمکھ - مسٹر اسپیکر سر۔ آج پولس کا ڈیمانڈ ایوان کے سامنے زیر بحث ہے۔ پولس کا وجود اس لئے رکھا جاتا ہے کہ وہ ملک میں لا اینڈ آرڈر (Law & Order) مینٹین (Maintain) کرے۔ لیکن افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ پولس میں خود لا اینڈ آرڈر نہیں ہے۔ چنچولی کے واقعہ سے اس بات کا پتہ چلتا ہے کہ پولس عوام کیلئے نہیں ہے۔ پولس عوام کا پیسہ کھاتی ہے لیکن عوام کو کچلنے کیلئے اپنا اثر استعمال کرتی ہے۔ اپنی قوت استعمال کرتی ہے۔ حکومت نے اپنی رپورٹ میں بتایا ہے کہ سنہ ۵۲ ع کے مقابلہ میں سنہ ۵۳ ع میں جرائم کی تعداد میں کمی ہوئی ہے۔ سنہ ۵۲ ع میں مرڈرس (Murders) کی تعداد ۶۵۸ تھی اور سنہ ۵۳ میں ۴۹۸۔ اس طرح رپورٹ میں بتایا گیا ہے اور مسٹر صاحب نے بھی بیان کیا ہے۔ اس طرح کی غلط رپورٹس چھپتی ہیں۔ پنگلی میں پر بھنی کے قریب قتل کی واردات ہوئی۔ پولس تفتیش برابر کرتی ہے اور نہ گواہوں کو برابر تلاش کرتی ہے۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ مقدمات خارج ہو جاتے ہیں۔ ایک طرف تو آپ یہ کہتے ہیں کہ پولس لا اینڈ آرڈر مینٹین کرنے کیلئے ہے اور دوسری طرف انکی یہ حالت ہے۔ ڈسٹرکٹ کے مقابلہ میں حیدرآباد کی آبادی ۱۰ لاکھ ۵۵ ہزار ۸ سو ۷۴ ہے۔ مدراس کی آبادی ۱۴ لاکھ ہے اور وہاں کا ایریا (۷۷۸) اسکوئر مائلس (Square miles) ہے۔ وہاں (۳۷۴) پولس انتظام کیلئے رکھی جاتی ہے یہاں کی آبادی ۱۰۔ ۱۱ لاکھ ہے اس کے باوجود (۵۲۶۶) پولس انتظام کے لئے رکھی جاتی ہے۔ کیا یہ پولس عوام کی بہلائی کے لئے رکھی گئی ہے یا حکومت کو سنبھالنے کے لئے رکھی گئی ہے۔ میں کہوں گا کہ یہاں کی پولس میں کمی ہونی چاہئے۔ ڈسٹرکٹس میں جو بد انتظامی ہو رہی ہے۔ اس کو ہم نے با رہا پیش کیا ہے۔ پر بھنی ضلع کے واقعات یہاں کئی مرتبہ بیان کئے گئے ہیں۔ وہاں پولس کا خود ڈاکوؤں وغیرہ

میں ہاتھ ہے یہ چیز ڈی - یس - پی - کی رپورٹ اور تفتیش میں خود ظاہر ہوئی ہے ۔

ڈسٹرکٹ کا ایریا بڑا ہونے کے باوجود وہاں پولس کم رکھی جاتی ہے ۔ اورنگ آباد جسکا ایریا (۶۴۵۵) مربع میل اور پاپولیشن (۱۱۸۳۳۸۵) ہے وہاں پولس کی اسٹرنٹھ (۱۶۷۴) ہے ۔ پرہنی میں جسکا ایریا (۴۸۳۶) مربع میل ہے ۔ اور آبادی (۱۰۹۹۴۵) ہے ۔ پولس کی اسٹرنٹھ ۸۶۱ ہے اس کے برعکس شہروں میں زیادہ پولس رکھی جاتی ہے ۔ تاکہ یہاں جو عوامی تحریکیں اٹھتی ہیں انہیں کچلا جائے ۔ میں تلنگانے کا حال بتلاتا ہوں ۔ نظام آباد کا ایریا (۲۷۸۰) مربع میل اور آبادی (۷۷۳۰۷۷) ہے وہاں پولس کی اسٹرنٹھ (۸۹۴) ہے ۔ اس سے عوام کی عزت و آبرو کا تحفظ نہیں ہو سکتا ۔ میرا حکومت پر یہ الزام ہے ۔ اور پھر آپ نے الگ الگ ڈویژنس رکھے ہیں ۔ پرہنی نانڈیڑ نظام آباد میں ایک ایک ڈویژن ہے ۔ بیدر گلبرگہ وغیرہ میں دو دو ڈویژنس ہیں ۔ میرا یہ کہنا ہے جہاں دو دو ڈویژنس رکھے گئے ہیں وہاں دو کے بجائے ایک ڈویژن رکھی جائے ۔ اس طرح کافی بچت بھی ہو سکتی ہے ۔ تلنگانہ میں عوامی تحریکوں کو کچلنے کیلئے جو پولس اسٹیشن قائم کئے گئے تھے انہیں اٹھالینا چاہئے اور جہاں رابری (Robbery) اور ڈکیتی کی وارداتیں زیادہ ہوتی ہیں وہاں انہیں قائم کرنا چاہئے ۔

ایک اور بات مجھے یہ کہنی ہے کہ پولس کمشنرس آفس پر ۱۰ لاکھ روپے خرچ ہوتے ہیں یہ بہت زیادہ ہے ۔ حیدرآباد اور سکندرآباد میں تو ہر قسم کی سہولتیں مہیا کی جاتی ہیں ۔

مٹی پولیس کے تحت ۳۴ ٹرکس ۔ موٹر سیکلس ۳۱۰ ۔ جیبس کارس ۶۰ اور دیگر قسم کی کاروں وغیرہ ہیں ۔ اس کے باوجود انتظام برابر نہیں ہوتا ۔ ان پر کافی پیسہ خرچ کیا جاتا ہے ۔ ہر قسم کی سہولتیں حاصل ہیں ۔ اور پھر مجھے یہ بھی کہنا ہے کہ جو جیب کارس ۱۲-۱۳ ہزار میں خریدی گئی تھیں انہیں ایک دو سال چلا کر پولیس کے عہدہ داروں کو ایک ایک ہزار دو دو ہزار میں اقساط پر دیا گیا ۔ اس طرح انہیں یہ موٹریں مفت دی گئیں ۔ اور حکومت کا پیسہ اس بے دردی سے پانی کی طرح بہایا جاتا ہے ۔ ایسے ۳۰۰ جیب کارس فروخت کئے گئے ہیں ۔ میں آنریبل ہوم منسٹر سے درخواست کروں گا کہ وہ ان کارس کو حاصل کر کے پبلک آکشن کریں ۔ اس سے حکومت کو فائدہ ہو سکتا ہے ۔ اگر پولیس کے لوگوں کو ضرورت ہو تو وہ پبلک آکشن میں لے سکتے ہیں کیوں کہ مارکٹ میں ان جیب کارس کی قیمت ۲۰۵۰ ہزار سے کم نہیں ہے ۔

آر۔ ٹی ۔ ڈی کے بارے میں مجھے کہنا ہے کہ پرہنی میں آر ۔ ٹی ۔ ڈی کے بسن چلانے کی ضرورت ہے ۔ آنریبل منسٹر کے ڈپارٹمنٹ نے خود اپنی رپورٹ میں یہ لکھا ہے اور یہ خود رپورٹ میں کہا گیا ہے ۔ وہاں مناپلسٹس عوام کو لوٹ رہے ہیں ۔ لیکن کہا جاتا ہے

The question of extension of R. T. D. to Parbhani District is under consideration.

کہ یہ فائبر ایر پلان میں انڈر کنسیڈریشن ہے ۔ پرہنی میں مناپلسٹس

جا سکتی ہے۔ جنتور میں ڈھو بنا کر - جنتور سے سیلو بسٹ - جنتور سے پرہنی - جنتور سے
اندول سرویس چلائی جاسکتی ہیں۔ وہاں عوام کے پیسہ کو خرچ کر کے نئی روڈ
بھی بنائی گئی ہے۔ لیکن مناپلیسٹس فائلڈ اٹھا رہے ہیں۔ میں آنریبل منسٹر سے
یہ مطالبہ کروں گا کہ وہ مناپلیسٹس کو جو پرمٹس دے گئے ہیں وہ کینسل بھی کر سکتے
ہیں۔ آپ نے انہیں جنم بھر کے لئے تو پرمٹ نہیں دیا ہے۔ یہ وہاں کے عوام کا مطالبہ
ہے۔ اس بارے میں دلچسپی لیکر ضروری کارروائی کرنا چاہئے۔ مجھے یہ بھی کہنا ہے
کہ جو ۱۱۰ نئے بس خریدے گئے ہیں ان میں ہر ایک پر ۴۰۰ روپے کا نقصان ہوا
ہے۔ آنریبل منسٹر اس پر توجہ کریں۔ میں آخر میں یہی کہوں گا کہ پرہنی میں بس
سرویس چلانے کے بارے میں حکومت جلد سے جلد کارروائی کرے۔

The House then adjourned for recess till Thirty five
minutes past Five of the clock.

The House reassembled after recess at Thirty five
minutes past Five of the clock.

[Mr. Deputy Speaker in the chair.]

శ్రీ వి. రామారావు : (కామారెడ్డి, రిజర్వుడు).

అధ్యక్ష మహాశయా,

నేటి సమస్య పోలీసు సమస్య. ఈ పోలీసు బడ్జెటుపై అనేక మంది గౌరవ సభ్యులు
చర్చించారు. అయితే ఈ చర్చ చాలా తీవ్రంగా ఉన్నది. అసలు ఈ పోలీసు యొక్క డ్యూటీకి
కారణమేమిటి? పోలీసు ఎవరికొరకు వుంచబడ్డది. అని కూడా మనం ఆలోచించ వలసి
యున్నది. ఇదే ఆలోచిస్తే మనకు ఒక విషయం తేటగా తేలుచున్నది. అదేమంటే యిప్పుడు
రామారావు ప్రతి సంవత్సరం పోలీసు తక్కువ అవుతోంది. ఈ సంవత్సరంకూడా తక్కువ
అయినది. ఇదే మనం ఎంతో గర్వించవలసిన విషయం. దీనిని గౌరవించడానికి బదులు మనం
ద్వైతీకరణం, క్రిటికైజ్ చేయడం ఎంతమాత్రం మంచి విషయం కాదన్నమాట. మన హైదరా
బాదు స్టేటులో అనేకమైన టువంటి జాలుములు అల్లరులు జరిగినవి. అందువలన హైదరాబాదు
స్టేటులో వుంచబడినటువంటి పోలీసు ఇండియాలో ఏ స్టేటులోనూ లేదన్నమాట. హైదరాబాదు
స్టేటులో ఆర్మీ (Army) కానీ, పోలీసుగానీ చాలా ఎక్కువగా వుండటానికి కారణం
హైదరాబాదు స్టేటులో అనేకమైన జాలుములు జరిగాయి. అవి వీటి జాలుములు అంటే
రజాకార్లు, జాలుము, కమ్యూనిస్టు జాలుము ఇవిగాక హైదరాబాదు ఎక్స్‌రెజీం ఇండియా ప్రభుత్వ
ముతో పోరాడడానికి పిలిపిటరీని పెంచారు. కాబట్టి హైదరాబాదు స్టేటులో పూర్వం ఆర్మీ,
పోలీసు, ఎక్కువగా వుండేది. సరే ఇప్పుడు పోలీసు మన హైదరాబాదు స్టేటులో ఎంత వున్నదంటే
ఇంకా-రెజింట్ ఆర్మీ ౨౫ వేల పిల్లల, రెజింట్ ఆర్మీ ౨౫ వేల పైచిలుకు, రెజింట్ ఆర్మీ
౨౫ వేల పిల్లల వుండే రెజింట్ ఆర్మీ ౨౫ వేలకు వచ్చింది. ౫౦-౫౦ లో ౨౬౬ దాకా వచ్చింది.
కాబట్టి హైదరాబాదు స్టేటులో మొదట ఆర్మీ వున్నట్లు మిగతా ఏ స్టేటులోనూ తేకుండా

వుండేది. ఆ ఆర్మీ అంతా యిప్పుడు రూపం లేకుండా పోయింది. ఆ నాడు, అంత ఆర్మీ ఎందుకొరకు పెట్టబడింది ? మన ఇండియన్ యూనియన్ తో హైదరాబాదు స్టేటు ఎదుర్కొనేందుకు పెట్టబడింది. అనంతరము ఇండియన్ యూనియన్ తో హైదరాబాదు స్టేటు కలిసి పోయిన తరువాత ఆ ఆర్మీ రూపం లేకుండా పోయింది. అదే ప్రకారం ఆ నాడు పోలీసు కూడా మిలీటరీ, పాయగా, సర్ప్లెజాన్ మరియు రెగ్యులర్, ఇర్రిగ్యులర్ అంతా కలిపి దాదాపు ఒక లక్ష ఫారు (Force) హైదరాబాదు స్టేటులో వుండేది. ఇది ఇండియన్ యూనియన్ తో కొట్లాడడానికి ఆ ఎక్స్-రెజిమ్ (Ex-regime) పెట్టింది. ఆ ఎక్స్-రెజిమ్ పోయిన తరువాత కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం హైదరాబాదు స్టేటులో ఏర్పడిన తరువాత అనేక చర్యలు తీసుకొని మెల్లమెల్లగా, దొర్లనాలు తగ్గిన తరువాత, మిలీటరీని, పోలీసును తక్కువచేస్తూ వచ్చింది. అయితే ఈనాడు పోలీసు ఇప్పుడు ఎంత వున్నదంటే,—పోలీసు అంటే సివిల్ పోలీసు, తరువాత ఆరమ్డ్ పోలీసు—మొత్తం 30 పేలు పైన వున్నది. అనగా పూర్వం ఒక లక్ష ఉన్నది—యిప్పుడు దాదాపు 30 పేల వరకు వచ్చినది అన్నమాట. ఇది చాలా సంతోషించవలసిన విషయం. ఈ సంవత్సరం లోపల దొర్లనాలు ఇంకా తగ్గిపోతే పోలీసుకూడా యింకా తగ్గిపోతుంది. పోలీసు ఎక్కువగా వుండటంవల్ల ట్రైజరీ టంచెస్ కుగాని కాంగ్రెసు ప్రభుత్వమునకుగాని ఏవిధమైన టువంటి తాధం లేదు. పోలీసును వుంచడం వలన ప్రజలకు తాధం. పోలీసు బడ్జెటు అంటే ప్రజల బడ్జెటుని మనము అనుకోవలసివున్న దన్నమాట. అటు గౌరవ సభ్యులలో ఒకరు రూరల్ ఏరియాలో పోలీసు ఎక్కువగా వుందన్నారు. ఒకరు అర్బన్ ఏరియాలో పోలీసు ఎక్కువుందన్నారు. అర్బన్ ఏరియాలో వుండటానికి కారణమున్నది. రూరల్ ఏరియాలో ఉండుటకు కారణమున్నది. ఇండియాలో రెండు చోట్లలోనే అర్బన్ ఏరియాలో ఎక్కువ వున్నది. ౧. హైదరాబాదు, ౨. కాశ్మీర్, ఈ పట్టణాల్లో పోలీసును ఎక్కువ పెట్టవలసి వచ్చింది. ఇండియాలో ఈ రెండు స్టేటులలో వున్నంత పోలీసు మిగతా ఏ స్టేటులోనూ లేదన్నమాట. తెలంగాణాలో కమ్యూనిస్టు యాక్టివిటీస్ (Communist activities) వలన ప్రజలకు ఎంతో నష్టం కలిగింది. ఆనరబుల్ ఆలేరు మొంబరుగారు మాట్లాడుతూ పల్లెప్రాంతాలలో పోలీసు క్యాంపు ఎక్కువగా వున్నాయని చెప్పారు. అవి ఏమీ తగ్గలేదని కూడా చెప్పారు. అప్పుడు ఎంతవరకైతే అక్కడ అల్లరులుంటాయో అంతవరకు అక్కడ పోలీసు వుంటుందన్నమాట.. ఇంకొక విషయం మేముంటే ప్రక్క రాష్ట్రంలో ఎక్కువ ఏరియా వున్నదని, అక్కడ పోలీసు తక్కువవున్నదని చెప్పారు. ఆ లెక్కప్రకారం చూసినా మన పోలీసును చూచి గౌరవించ వలసినదే. ఎందుచేతనంటే మన స్టేటులో వున్నటువంటి పోలీసు చాలా ఎఫీషియంట్ (Efficient) పోలీసు అనుకో వాలి. ఎందుచేతననగా మన హైదరాబాదు స్టేటులో వున్న క్లైములు చూడండి, ఇతర స్టేటులలోని క్లైము చూడండి. మన హైదరాబాదు స్టేటులోని క్లైమును గురించి ఏమి చెప్పారో చూడండి

“ From the point of crime position, in Hyderabad, cognisable crimes reported in 1950-51 is 1,04,655 while the figures for the previous year is 1,11,084 which works out to 5.5 crime incidents per thousand of population in 1950-51. The figures for Madras for 1950 are 12.9 per thousand of population and in Madhya Pradesh, 7 per thousand of population.”

మన హైదరాబాదు ప్రేటులో పోలీసును ఎక్కువ పెట్టడం వల్లనే క్రైముకూడా తగ్గి పోయాయనే విషయం తెలుసుకొని మనం సంతోషించవలసి యున్నది. అంతేకాకుండా మన హైదరాబాదు ప్రేటులో డెకాయిటీస్ (Dacoities), రాబరీస్ (Robberies), మర్డర్లు (Murders) తగ్గిపోయాయి. ఔరంగాబాదులో చూచినట్లయితే ౧౯౫౨లో ౨౬ డెకాయిటీస్ వుంటే ౧౯౫౩ లో ౮ మాత్రమే వున్నాయి. ఈ ప్రకారం ఢిల్లీలో ౧౯౫౨లో ౨౧ వుంటే ౫౩ లో ౮ వున్నాయి.

వర్షనీలో ౧౯౫౨ లో ౧౫—౧౯౫౩లో — F

నాందేడ్ లో „ ౪— „ ౧౫

గుల్బర్గా „ ౪౪— „ ౧౫

ఉస్మానాబాద్ „ ౩౦— „ ౬

బీదర్ „ ౩౯— „ ౬

ఆదితాబాద్ „ ౩౫— „ ౨

రాయచూర్ „ ౨౨— „ ౩

మహబూబ్ నగర్ „ ౫౫— „ ౮

మెదక్ „ ౩౦— „ ౮

నిజామాబాద్ „ ౨౪— „ ౮

హైదరాబాదు జిల్లా „ ౩౦— „ ౭

నరంగల్ ద. „ ౧౭— „ ౫

నరంగల్ ఉ. „ ౪౭— „ ౪

నల్ గొండ „ ౩౦— „ ౪

కరీంనగర్ „ ౩౬— „ ౨

హైదరాబాద్ నగరం „ ౪— „ —

రైల్వే పోలీసు „ ౫— „ ౨

[MR. SPEAKER IN THE CHAIR.]

ఈ ప్రకారం ౧౯౫౨ లో క్లైమ్సు ౫౦౦ వుంటే ౧౯౫౩ లో ౧౦౦ వున్నాయి. ఇంత తగ్గిపోయినందుకు మనం ఎంతో సంతోషించవలసి యున్నది. పోలీసు ఎఫిషియంట్ అయినది. పోలీసు ఎఫిషియంట్ కాకపోతే ఇంతమంది అప్రజిషన్ సభ్యులు ఈ అసెంబ్లీలోకి రాలేకపోయే వారన్నమాట. పోలీసు తొలివిగాను, న్యాయంగాను పని చేసినందుననే న్యాయంగా ఎటెక్షన్స్ జరిగి అప్రజిషన్ సభ్యులు రాగలిగినారన్న మాట. కమ్యూనిస్టు చేతుల్లోనే ప్రభుత్వం వుంటే ఒక్క కాంగ్రెసు సభ్యుడు కూడా రాలేకపోయేవాడన్నమాట.

ఇంకొక విషయం. "What Communists have done to the Harijans?" అనేది. కమ్యూనిస్టులు హరిజనులకు మెహర్బాన్ చేశామని చెప్పుకుంటున్నారు. నిజానికి హరిజనులకు కమ్యూనిస్టులు చేసినటువంటి సేవ ఏమిటి? మేము తెలంగాణాలో, ఈ అసెంబ్లీ పెట్ట కపూర్వం, తిరిగి చూశాము. కమ్యూనిస్టులు హరిజనులకు అనేకమైనటువంటి మోసాలు చేశారని మేము గా. మెంబరు సికిందరాబాదు రిజర్వడుసీటు, S.R. బాబయ్య, D.రాజయ్య, దళితజాతీయకులు, దళితజాతీ సంఘాద్యులు S. ఉత్తయ్యగారి ధన సహాయంతో తెలంగాణాలో పర్యటనముచేసి అక్కడ హరిజనుల పరిస్థితులు చూసి తెలుసు కున్నాము. ఇక్కడ అప్పటినుంచి హైదరాబాద్ స్టేట్ దళితజాతీసంఘం స్థాపించి బాబూ జగజీవ్ రామ్ ఇక్స్ ప్రెక్షన్ ప్రకారం తెలంగాణాలో పర్యటన చేశాము. అక్కడ ఈ కమ్యూనిస్టులు హరిజనులకు అనేకమైనటువంటి మోసాలు చేసి వాళ్ళను అనేక బాధలు పాలు చేశారు, కమ్యూనిస్టులు రాత్రులందు పోయి హరిజనవాడల్లో వుండి దొంగతనాలు చేస్తూ, లూటీలుచేస్తూ వుండి, తొల్లివారితో పోలిపోయేవారు. తరువాత కమ్యూనిస్టులు చేసిన ఆ దురంతాలకు గాను పోలీసుల చేతుల్లో హరిజనులు పడిన అనేక కష్టాల పాలయ్యారు. ఈ ప్రకారం మొత్తం తెలంగాణాలో దాదాపు నూరు మంది యువకులు హరిజనులు చచ్చిపోయారు. వారి భార్యలు ముండా మోశారు. ఈ ప్రకారంగా హరిజనులను కమ్యూనిస్టులు అనేక విధాలుగా ఎక్స్ ప్రెషన్ చేసి అనేక కష్ట నష్టాలను కలిగించారు. ఒక ఉదాహరణ చెబుతాను, సేను తెలంగాణాలో పర్యటన చేసి నవ్వుడు ఆటోరు సమీపంలో సిద్ధంకి గ్రామానికి వెళ్ళాము.

శ్రీ. శ్రీ. శ్రీ దేశపాండే:— यह हरिजनों के बारे में बजट नहीं है, पुलिस के बारे में है। आंतरिम मेंबर कम्युनिस्टों और हरिजनों के बारे में कह रहे हैं वह आज के विषय से अलग है।

— شری شری جے ۔ اے ۔ سہیل راؤ ۔ پولیس کے بارے میں ہی بول رہے ہیں
— پولیس کو کمیونسٹوں کے سڈرس کی وجہ سے بڑھانا پڑا ۔

شری گوپال راؤ۔ اگر آئریبل ممبر یہ بتا سکتے ہیں کہ پولیس کی فائرنگ کی وجہ سے کتنے ہریجن مرے ہیں اور کمیونسٹوں کے فائرنگ سے کتنے ہریجن مرے ہیں تو اچھا ہے ۔

శ్రీ. వి. రామారావు : అందుకారకే చెబుతున్నాను. నిజానికి పోలీసు ఏమీ చేసింది? పోలీసు జాలుం చేసిందని అక్కడ సభ్యులు అనేకముగా మాట్లాడారు. నిజానికి పోలీసు చేసినదేమిటి, అక్కడ హరిజనులలో కమ్యూనిస్టులు ఆడిన నాటకమేమిటో తేట తెల్లంగా చెప్పాలనుకుంటున్నాను. మేము సిద్ధంకి గ్రామానికి పోయినప్పుడు అక్కడ హరిజనులంతా కూడా ఒక్కచోటికి తీసుకు వచ్చారు. అతనిని

شری کے انٹریڈی۔ اور صاف طور پر آریبل ہوم منسٹر صاحب کے سامنے پیش کرنا چاہتا ہوں۔ آج کل جو پولس کا ظلم اور برا رویہ روز بروز شدت اختیار کرتا جا رہا ہے اس میں اور گزشتہ پانچ چھ سال پہلے کی پولس کے رویہ میں کوئی فرق مجھے دکھائی نہیں دیتا۔

اسوقت جبکہ ایک مطلق العنان حکومت تھی اور لوگوں کی لڑائی اقتدار میں تبدیلی لانے کیلئے تھی تو پولس کا سپریس (Suppress) ہوسکتا تھا - اسکو میں سمجھ سکتا ہوں لیکن اب جبکہ لوگ بے روزگاری اور بھوک کے خلاف آواز اٹھاتے ہیں تو انکا سپریشن کرنے - انہیں دبانے کا جو طریقہ حکومت نے اختیار کیا ہے وہ قابل مذمت ہے - اسلئے میں آنریبل ممبر کی اسطرف توجہ دلانا چاہتا ہوں کہ بدلے ہوئے حالات میں پولس کے طرز عمل کو بھی بدلنے کی ضرورت ہے - کیونکہ جہاں عوام بھوکے ہیں جہاں وہ آگے بڑھتے ہیں اور یہ کہتے ہیں کارخانے والے ہمارے پیٹ پر ٹھوکر مارتے ہیں حکومت بجائے اسکے کہ انکو سہارا دیتی - انکو بندوق اور لاثقی سے مارتی ہے تو یہ بڑی شرمناک بات ہے - انکے رویئے کو بدلنا ضروری ہے - اس کے ساتھ ساتھ لوگوں میں یہ وشواس پیدا کرنا بھی ضروری ہے کہ پولس لا اینڈ آرڈر مینٹین کرنے کے لئے ہے - امن کا مطلب یہ نہیں ہے کہ لوگوں کے حقوق اور انکی مانگوں کو دبایا جائے بلکہ جو سیورسواکٹیویٹیز (Subversive activities) (تخریبی اعمال) ہیں انکو دبایا جائے لیکن انکی جائز مانگوں کو اس طرح لا اینڈ آرڈر مینٹین کرنے کے نام پر دبایا جائے تو وہ غلط ہے سرے سے غلط ہے - اسلئے حکومت سے مجھے یہ عرض کرنا ہے کہ پولس کے رویہ کو بدلے اور ڈیموکرائٹک میتھڈس (Democratic methods) جو عوام اختیار کرنا چاہتے ہیں انہیں اسکا موقع دیا جائے تب ہی لوگوں کو ڈیموکرائٹک پرنسپلس پر بھروسہ ہوسکتا ہے -

ایک اور نظریہ جو پولس ڈپارٹمنٹ میں ہے وہ یہ ہے کہ پولس ہلکی (Bulky) ہونا چاہئے - زیادہ ہونا چاہئے - یہ نظریہ بھی غلط ہے - میں یہ نظریہ ماننے والوں میں سے نہیں ہوں کہ پولس ہلکی ہونا چاہیے اور زیادہ ہونا چاہئے - بلکہ دراصل جو پولس فورس ہو وہ ایفیشنٹ ہونا چاہئے - وہ ناگہانی صورت حال کا مقابلہ کر کے اسپر قابو حاصل کرنے کے قابل ہونا چاہئے - لیکن آج یہ عام رجحان ہے اور یہ دیکھا جاتا ہے کہ پولس فورس کی تعداد کیا ہے - اس پر سے طاقت کا اندازہ لگاتے ہیں کہ ہماری پولس کتنی ہے میں کئی ایسی مثالیں بتلا سکتا ہوں کہ پولس زیادہ تعداد میں رہنے کے باوجود بھی چند لوگوں کا مقابلہ نہ کرسکی - اسلئے میں حکومت سے یہ اپیل کرنا چاہتا ہوں کہ لمیٹڈ فورس رکھیں لیکن وہ ایفیشنٹ ہو - انکی تنخواہیں زیادہ ہوں - انکے بہتے زیادہ ہوں ایسی صورت میں پولس امن قائم کرسکتی ہے اور لا اینڈ آرڈر مینٹین کرسکتی ہے -

تیسری چیز مجھے انٹیلیجنس ڈپارٹمنٹ (Intelligence Department) کے بارے میں عرض کرنا ہے - میں کہوں گا کہ یہ ایک فالتو ڈپارٹمنٹ ہے - انکا کیا کام ہے سوائے اسکے کہ پولیٹیکل ورکرس کا نام ٹوٹ کریں کہ کب میٹنگ ہونے والی ہے - کہاں ہونے والی ہے اسکی اطلاع دیں - آنریبل ممبر سنئر یہ بتلائیں کہ انٹی نیشنل اکیٹیویٹیز کے ضمن میں انہوں نے کیا کام کیا ہے - انہوں نے کیا ان ارتھ (In earth) کیا ہے - آج ہم یہ کہتے ہیں کہ دیشی میں کرپشن ہے -

رشتوں کا بازار گرم ہے۔ (یہ ایک انٹی نیشنل 'اکٹیوٹی' ہے خواہ کوئی بھی کرتا ہو) اسکو ان ارتھ کرنے کیلئے انٹلجنس ڈپارٹمنٹ نے کیا کام کیا۔ جس وقت کنٹرول تھابلاک مارکٹ میں مال فروخت ہوتا تھا تب انہوں نے کیا ان ارتھ کام کیا۔ آج ہم ان پر لاکھوں روپیہ صرف کرتے ہیں تو کس لئے؟ کیا اس لئے کہ مختلف پولیٹیکل پارٹیز اور کسان جو زمین داروں کے خلاف لڑتے ہیں اسکا ٹرٹ رکھا جائے۔ انکے کیریئرس (Carriers) کے ریکارڈس رکھے جائیں تاکہ انہیں پاسپورٹ نہ مل سکے کیونکہ انکے خلاف غلط ریکارڈ ہے۔ ان سب چیزوں کی جانب میں آنریبل منسٹر کو توجہ دلاؤں گا کہ ہمارے پولس ڈپارٹمنٹ میں ایک بڑی پری ورتن لائے اور ایسے لوگوں سے قریب لانے کی ضرورت ہے۔

دوسری چیز میں آر۔ ٹی۔ اے کے بارے میں عرض کروں گا۔ اس کے تعلق سے مجھے یہ بتایا گیا ہے کہ کچھ کرایہ کی سواریوں پر اس قسم کی پابندیاں عائد کی گئی ہیں۔ ریجنل گروپس بنائے گئے ہیں اور اس کے تعلق سے اجازت نامے عطا ہوتے ہیں۔ جہاں تک مال گاڑیوں کا سوال ہے پرمٹ وغیرہ لیئے جا سکتے ہیں۔ لیکن جہاں تک ٹیکسی سواری گاڑیوں کو ریجنل طور پر پرمٹ دینے کا سوال ہے میں اس سلسلہ میں وضاحت چاہتا ہوں۔ جو ڈسٹرکٹ گروپس قائم کئے گئے ہیں وہ غیر موزوں ہیں۔ مثال کے طور پر نظام آباد کے حد تک اجازت یافتہ جو اضلاع ہیں وہ محبوب نگر۔ نلگنڈہ۔ اور دوسرے ضلعے ہیں۔ حالانکہ اوس کے اطراف کے اضلاع تو کریم نگر۔ عادل آباد اور نانڈیڑ ہیں۔ جو بھی ٹیکسی سواری جاتی ہے اون ہی اضلاع کو جاتی ہے۔ مجھے یہ بتایا گیا ہے کہ اگر کوئی ٹیکسی نظام آباد سے ۱۰ میل کے فاصلہ پر مثلاً نرمل یا کورٹلہ جانا چاہے تو وہ اوس روز نہیں جا سکتی۔ بلکہ دوسرے روز پرمٹ حاصل کر کے جا سکتی ہے۔ یہ گروپنگ سسٹم میری سمجھ میں نہیں آیا۔ پہلے تو یہ سوچنا چاہئے کہ اس طرح ریجنس قائم کرنے کی کیا ضرورت ہے؟ لیکن اگر ایسا کرنا ضروری ہی ہو تو ریجنس کنٹینجٹ ایریاز کو بلا کر قائم کرنا چاہئے۔ آپ نے جو سسٹم قائم کیا ہے اوس کی وجہ سے پبلک بھی تکلیف محسوس کر رہی ہے اور سواری والے بھی محسوس کر رہے ہیں۔ اس جانب آنریبل منسٹر توجہ کریں۔ ایک اور چیز کی جانب توجہ دلا کر میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں۔ اور وہ ہے آر۔ ٹی۔ ڈی کے بارے میں۔ اس سلسلہ میں بہت سی چیزیں کہی گئیں۔ میں دو چار چیزیں ہی کہوں گا۔ فیر (Fair) کے سلسلے میں میں یہ سنجیشن دوں گا کہ ہم بھی بمبئی کی طرح یہاں پر ۹ پائی فی میل کرایہ مقرر کر سکتے ہیں۔ کیونکہ آئندہ ایک سال میں تو او۔س (O.S.) ختم ہونے والا ہے۔ او۔س ایک آٹھ جو لے رہے ہیں اوس کو گھٹا کر بمبئی کی طرح آئی۔ جی ۹ پائی کر دیں تو جو پیچیدگیاں بٹاون سے پیدا ہونے والی ہیں وہ دور ہو سکتی ہیں۔ اس کے علاوہ فیر میں وجہ سے ٹریفک میں اضافہ ہوگا۔ یہ جو کہا گیا ہے کہ چونکہ ٹریڈ چینل ڈس ایپر کمی کی (Trade channel disappear) ہوتا جا رہا ہے اس وجہ سے اس میں خسارہ ہو رہا ہے یہ غلط ہے۔ صحیح بات تو یہ ہے کہ اکنامک ڈپریشن کی وجہ سے میعار زندگی گھٹ رہا ہے۔ اور لوگ موٹروں میں سواری نہیں کر رہے ہیں۔ اس لئے

اگر کرایہ کم کیا جائے تو لوگ عام طور پر اس کو بسنا کر س گئے کہ سٹور میں سوار ہو کر جائیں۔ اس ڈیپارٹمنٹ میں کریسن اور ان افینینسی کی وجہ سے جو نقصان ہو رہا ہے اس کی جانب بھی آنریبل منسٹر کو توجہ کرنی چاہئے۔ یہ روز مرہ کی شکایت ہے کہ کنڈکٹرس اور بس کے متعلقہ آدمی پیسہ کھا لیتے ہیں۔ اور ٹکٹ وغیرہ اجرا نہیں کرتے۔ اس کو دور کرنے کے لئے ہمیں کوئی نہ کوئی فارمولہ بنانا چاہئے یہ دیکھنا چاہئے کہ کرایہ جو دیا جاتا ہے اس کے ٹکٹس جاری کئے جاتے ہیں یا نہیں اس کی برابر چکنگ ہونا چاہئے۔ ایک اور چیز مجھے ایوا کرٹی برابری (Evacuee property) کے سلسلہ میں کہنا ہے۔ لایق علی فارم پر کوئی نا نج سر مزدور تقریباً پندرہ سال سے کام کر رہے ہیں۔ لایق علی کے پاکستان جانے کے بعد وہ فارم ایوا کرٹی پر اپنی ہو گئی ہے۔ اور ایوا کرٹی برابری کے قانون کے تحت اس فارم کو سندھیوں اور دوسرے ریفریجیز (Refugees) میں الاٹ کیا جا رہا ہے۔ میں یہ عرض کروں گا کہ اس سلسلہ میں حکومت حیدرآباد حکومت ہند سے سفارش کرے کہ اس فارم کو اون پانچ چھ سو مزدوروں کے حوالے کیا جائے جو پندرہ سال سے اس پر کام کر رہے ہیں وہاں کی اراضی کو ڈولپ (Develope) کئے ہیں۔ اس فارم کو کلکٹیو فارم کی شکل دیکر اون لوگوں کو وہاں رکھنا چاہئے تاکہ وہ لوگ بے روزگار نہ بننے پائیں۔ اگر حکومت حیدرآباد حکومت ہند کو اس سلسلہ میں سفارش کرے کہ اس کو کلکٹیو فارم کی شکل دی جائے تو مناسب ہوگا۔ یہ کہہ کر میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں۔

شری. بھئی. ڈی. دیشاپانڈے :- میسٹر سپیکر سر، دو باتیں میں ہاؤس کے سامنے ارج کرنا چاہتا ہوں۔ پہلی بات یہ ہے کہ جنرل طریقے سے جو ڈسکشن ڈیمانڈز پر چل رہا ہے ہاؤس کے بارے میں تاجروں کے ہاں ہم محسوس کر رہے ہیں کہ کچھ ڈیپارٹمنٹس پر بھس نہیں ہو سکتی، مسالین جیل ڈیپارٹمنٹ ہے ہاؤس کے اوپر آج کوئی بھس نہیں ہو سکی، ایسی طرح سے ریہیوٹیشن کے مسئلے پر بھی کوئی ریمارک ہاؤس کے سامنے نہیں آ سکی۔ چند آنرےبل ممبروں سے مشورہ کرنے کے بعد میری یہ گنجائش ہے کہ آج ہاؤس کا وقت آٹھ بجایا ساڑھے آٹھ تک بڑھایا جائے تو مناسبت ہوگا۔

دوسری چیز یہ ہے کہ دو روز کے تاجروں کے بعد ہم یہ محسوس کر رہے ہیں کہ ڈیمانڈ وائج ڈسکشن رکھا جائے تو زیادہ مناسبت ہوگا تاکہ اہم بھس پر ہم فوکس کر سکیں۔ آئندہ کے لیے جب ڈیمانڈ رکھی جائے گی تب ڈیمانڈ وائج ڈسکشن رکھا جائے گا۔ لیڈر آف دی ہاؤس اس کو مانیں تو مناسبت ہوگا۔

میسٹر اسپیکر۔ بات یہ ہے کہ (۱۲۰) سے زیادہ موشن فارڈکشنس ہیں۔ اگر انکو ووٹ پر رکھا جائے تو میں سمجھتا ہوں کہ آپ نے جو آدھا گھنٹہ بڑھانے کی خواہش کی تھی اس سے بھی زیادہ وقت لگ جائے گا۔ کیونکہ چھ بجے سے ایک گھنٹہ ہوم منسٹر کو جواب کیلئے دینا پڑیگا۔ اس کے بعد موشن کو ووٹ پر رکھا جائے گا۔ اگر ہر موشن کے لئے آدھ منٹ بھی رکھا جائے گا تو ایک گھنٹہ اس کے لئے بھی لگے گا۔ دوسری چیز جو آپ نے کہی اس پر آئندہ جس روز ڈیمانڈس پیش ہونگے اس دن ضرور کنسلڈ کریں گے۔

شری نہ گمبراؤ بندو - مسٹر اسپیکر سر - میرے ڈیمانڈس پر جو بہت سے موشنس فار رڈکشن (Motions for reduction) آئے ہیں اون کے تعلق سے کل اور آج جو بحث ہوئی میں نے اوسکو کافی غور کے ساتھ سنا۔ میں نے یہ بھی محسوس کیا کہ بجز ایک دو اسپیکر کے عام طور پر تمام اسپیکر کا معیار کافی اونچا رہا۔ میں نے یہ بھی محسوس کیا کہ کئی آنریبل ممبرس نے اس بات کی کوشش کی کہ کچھ کنسٹرکٹیو ساجیشنس (Constructive suggestions) ہاؤز کے سامنے رکھے جائیں چنانچہ کافی محنت کے بعد انہوں نے کچھ ساجیشنس یہاں رکھے ہیں۔ میں سمجھتا ہوں کہ ایسی تقریروں سے ہمارے پورے ہاؤز کا اسٹینڈرڈ بڑھنا ہے اور مجھے بڑی مسرت ہوئی۔ چنانچہ میں اسکے لئے ہاؤز کو مبارکباد دیتا ہوں۔ میں اون تمام چھوٹی چھوٹی چیزوں کا جو کٹ موشن کے ذریعہ پیش کی گئی ہیں الگ الگ جواب دینے کے بجائے یہ مناسب سمجھتا ہوں کہ میں نے جو ڈیمانڈس پیش کئے ہیں اور ہر ڈیمانڈ کے تعلق سے جو امپارنٹ نقاط الگ الگ ممبرس نے یہاں پیش کئے ہیں اونکے بارے میں عرض کروں۔ میں نے جو ڈیمانڈ نمبر (۸) پیش کیا ہے وہ موٹروہیکل ایکٹ (Motor Vehicle Act) کے تعلق سے ہے۔ موٹروہیکل ایکٹ آل انڈیا ایکٹ ہے۔ اس کے بارے میں سوالات کے سلسلے میں غالباً کئی مرتبہ میں نے یہ بتایا ہے کہ موٹروہیکل ایکٹ ایک پرانا ایکٹ ہے جس میں ترمیم جو ابھی حکومت ہند کے زیر غور ہے۔ چنانچہ ایک امینڈمنٹ ایکٹ اس کے تعلق سے پیش کیا جا رہا ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ وہ جلد ہی پیش ہوگا۔ اس ایکٹ کے تحت ریجنل ٹرانسپورٹ اتھارٹیز (Regional Transport Authorities) اور اسٹیٹ ٹرانسپورٹ اتھارٹیز (State Transport Authorities) کی باڈیز بنائی گئی ہیں۔ خود میں نے بھی یہ محسوس کیا ہے کہ دراصل اس میں کافی ردیفنل کی ضرورت ہے۔ لیکن اس وقت میں اس کے بارے میں اتنا ہی کہہ سکتا ہوں کہ ریجنل ٹرانسپورٹ اتھارٹیز اور اسٹیٹ ٹرانسپورٹ اتھارٹیز ایکٹ کے خاص براویژنسس کے تحت ہم سمجھتے ہیں کہ اسی طرح سے عمل کریں۔ کئی ممبروں نے کہا کہ ایک ہی راستہ پر کامپٹیشن (Competition) کرنے کی اجازت دینا چاہئے اور اس طرح کی آزادی دینا چاہئے۔ لیکن اس ایکٹ کی اسپرٹ یہ ہے کہ اس طرح کا کامپٹیشن زیادہ نہیں ہونا چاہئے۔ اس کا یہ مطلب نہیں کہ کسی کو مونوپولی (Monopoly) دے دیا جائے لیکن زیادہ کامپٹیشن نہیں ہونا چاہئے۔ یہ خیال رکھنا ضروری ہے۔ دراصل موٹروہیکل ایکٹ کو کسی طرح متاثر کیا ہے تو اس قانون نے کیا ہے جو یہاں تھا۔ اور جس کے لحاظ سے آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کے مونوپولی ایسے راستوں پر لائی گئی جو کہ نوٹیفائی کئے گئے تھے عام طور پر یہ کہا جاتا ہے کہ کراس کٹری روڈس (Cross country Roads) پر بھی عام طور پر برمٹ دئے جاتے ہیں یہ چیز پبلک کی سہولت کے پیش نظر ضروری ہے کہ آر۔ ٹی۔ ڈی۔ کی نوٹیفائی راستوں پر جب وہ لوگ آجائیں تو اونکو اس راستے پر سے گزرنے کی اجازت دی جائے۔ یہ اجازت چند قواعد اور شرائط کے تابع ہوتی ہے اور ان شرائط کے تابع ہی اس طرح پرکٹ دئے جاتے ہیں۔ یہ دیکھا گیا ہے کہ اس کی وجہ سے آر۔ ٹی۔ ڈی کی

آمدنی متاثر ہوتی ہے۔ گڈس و ہیکل (Goods vehicles) کے سلسلے میں آرٹی۔ ڈی۔ پریجٹ کرتے ہوئے ایک آنریبل ممبر نے کہا کہ یا تو گورنمنٹ یہ پالیسی طے کرے کہ ہائوٹ بسس کو پیمٹ دئے جائیں یا گورنمنٹ خرد اپنے طور پر جس طرح پیسینجر بسس چلاتی ہے گڈس کیلئے بھی بسس چلائے۔ لیکن گورنمنٹ نے اس سلسلے میں یہ طے کیا ہے کہ گڈس و ہیکل ہماری طرف سے نہ چلائے جائیں۔ گو بہت سی بسس ہمارے پاس ایسی ہیں۔ لیکن وہ کام میں نہیں لائی جاسکتیں۔ اب یہ سرچا گیا ہے کہ اگر ان کو پاسینجر بسس میں کنورٹ (Convert) کیا جائے تو وہ بھی کام میں آسکتی ہیں۔ اس سلسلے میں یہ بھی کہا گیا کہ چونکہ انسپکٹروں کو پیمٹ دینے یا نہ دینے اور اس کی جانچ کرنے اور رپورٹ دینے کا اختیار ہوتا ہے اس لئے اس میں کافی بدعملی کی گنجائش ہے ایسی شکایتیں آتی ہیں اور میں اس قدر عرض کروں گا کہ جب کبھی کسی انسپکٹر کے بارے میں شکایت آتی ہے اس کی جانچ کی۔ ایسے کیس ہیں جن میں انکا تدارک کیا گیا ہے یا سزا دی گئی ہے۔ الکشن کے مہ کے لئے بھی میرا ایک ڈیمانڈ تھا۔ اس کے بارے میں بھی کہا گیا ہے۔ میں یہ وضاحت کرنا چاہتا ہوں کہ آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن نے اس بارے میں سوال بھی کیا تھا انہوں نے یہ بھی کہا تھا کہ گورنمنٹ آف انڈیا سے جو رقم آتی ہے اوسکے وضع جانے کے بعد پھر اتنے ڈیمانڈ کی ضرورت نہ تھی۔ لیکن میں نے پہلے بھی کہا تھا اور اب بھی یہ وضاحت کہہ دینا چاہتا ہوں کہ کم از کم ہمارے بجٹ میں یہ طریقہ رہا ہے کہ گورنمنٹ آف انڈیا سے جو رقم آتی ہے وہ کل کی کل ایک طرف جمع کر دی جاتی ہے۔ ڈپارٹمنٹ ہر کتنا خرچ ہوتا ہے اوسکو علیحدہ بتایا جاتا ہے۔ اور گورنمنٹ آف انڈیا سے جو رقم آتی ہے اسکو آمدنی کے مددات میں شامل کیا جاتا ہے۔ اور خرچ پورا پورا اس ڈیمانڈ میں بتایا جاتا ہے۔ میونسپالٹی کے تعلق سے ایک آنریبل ممبر نے جو کہا اوس سلسلے میں مجھے یہ عرض کرنا ہے کہ الکتورل رولس (Electoral Rolls) جو تیار ہوتے ہیں وہ اسی ڈپارٹمنٹ کی جانب سے تیار ہوتے ہیں۔ اس ڈپارٹمنٹ کا بالراست تعلق اگرچہ الکشن کمشنر سے ہوتا ہے لیکن اسکو ہماری طرف سے چلایا جاتا ہے۔ اس سلسلے میں خرچہ وہ بھی برداشت کرتے ہیں۔ ہم بھی برداشت کرتے ہیں۔ جو خرچہ اس مد کے تحت بتلایا گیا ہے وہ عملہ کا خرچہ ہے اور چھپوائی کا خرچہ ہے الکتورل رولس کی جانچ پڑتال کرنا۔ اوس میں رد و بدل کرنا اور اس کو ٹھیک ٹھاک کرنا یہ بھی اسی ڈپارٹمنٹ کا کام ہے۔ جب کبھی الکشن ہوتے ہیں اوسکے الکتورل رول کی پرنٹنگ وغیرہ کے لئے رقم کی ضرورت ہوتی ہے اس وجہ سے کچھ رقم اس کے لئے رکھی گئی ہے۔ ایک آنریبل ممبر نے اس سلسلے میں یہ بھی پوچھا تھا کہ کیا عنقریب کوئی الکشن ہونے والے ہیں۔ وہ تو کنٹینجینسیز (Contingencies) پر منحصر ہے۔ لیکن عام طور پر جو خرچہ ہوتا ہے وہ عملہ پر ہوتا ہے اور الکتورل رولس کی چھپوائی وغیرہ کے لئے ہوتا ہے۔

اس سلسلہ میں بحث کرتے ہوئے یہ بھی کہا گیا کہ کانگریس پارٹی اور منسٹرس کا عمل یہ ہے کہ وہ اپنی پوزیشن کا جو انہیں حاصل ہے ناجائز استعمال کرتے ہیں اور الکشن پر اثر ڈالنے کی کوشش کرتے ہیں لیکن میرے سامنے جو واقعات ہیں ان کے تحت میں یہ تسلیم کرنے کے لئے تیار نہیں ہوں کہ منسٹرس اپنی پوزیشن کا ناجائز طور پر اثر ڈالنے کی کوشش کرتے ہیں۔ ہاں یہ ضرور ہے کہ جو پوزیشن انہیں اپنی پارٹی کے لیڈر ہونے کی حیثیت سے حاصل ہے وہ زائل نہیں ہو سکتی۔ یہ صحیح نہیں ہے کہ محض منسٹر بننے سے وہ الکشن پر اثر ڈال سکتے ہیں۔ یہ بھی کہا گیا کہ منسٹرس سرکاری اخراجات سے الکشن پر اثر ڈالنے کے لئے جاتے ہیں۔ یہ صحیح نہیں ہے۔ منسٹر جب الکشن پرپزس (Election purposes) کے لئے جاتے ہیں تو اس کے اخراجات یا تو وہ خود برداشت کرتے ہیں یا ان کی پارٹی برداشت کرتی ہے۔ اس کی تمیز منسٹر کو ہوتی ہے کہ کون سے اخراجات کا بار سرکار پر عائد ہونا چاہیئے اور کون سے اخراجات کا بار پارٹی یا خود کو برداشت کرنا چاہیئے۔ جیسا کہ آنریبل ممبرس جانتے ہیں کہ یہاں اور سنٹرل گورنمنٹ میں یہ ہوتا ہے کہ جب کوئی لیڈر الکشن کے مقام پر جاتے ہیں تو ان کا کام ہے کہ اپنی پارٹی کی حمایت کریں۔ جب وہ وہاں جاتے ہیں تو یہ تو نہیں کہہ سکتے کہ تم دوسری پارٹی کو ووٹ دو۔ ظاہر ہے کہ وہ اپنی پارٹی کی حمایت میں کچھ کہتے ہوں گے۔ میں نہیں سمجھتا کہ اس میں کوئی ایسی بات ہے جو قابل اعتراض ہو۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

شری دگمبر راؤ پنلو۔ آخر الکشن کے سلسلہ میں یہ تو کہنا ہی پڑیگا کہ گورنمنٹ نے اب تک کیا کیا ہے اور آئندہ کیا کیا کریگی۔ یہ ضرور کہا جائیگا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے:—میں آپ سے ایک سوال پوچھنا چاہتا ہوں کہ ابھی سیڈیپتھ میں الیکشن ہونے والا ہے اور ہم نے سنا ہے کہ ڈیپٹی مینسٹر شکر دےو ساہب ابھی وہاں جا کر لوگوں کو اناج اور جمنی تھکسیم کرنے کا کام کرنے والے ہیں۔ یہ کام سوشل ڈیپارٹمنٹ کی طرف سے کیا جانے والا ہے تو ابھی اسی وقت یہ کام کیوں لیا جا رہا ہے کیا یہ فریئر الیکشن ہے؟ آپ کو ایک دو دن میں یہ بات دیکھنے کو ملے گی کہ وہاں پر اناج اور جمنی تھکسیم کی جاتی ہے۔

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے:—آج کل کے سلسلہ میں یہ تو کہنا ہی پڑیگا کہ گورنمنٹ نے اب تک کیا کیا ہے اور آئندہ کیا کیا کریگی۔ یہ ضرور کہا جائیگا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے:—آج کل کے سلسلہ میں یہ تو کہنا ہی پڑیگا کہ گورنمنٹ نے اب تک کیا کیا ہے اور آئندہ کیا کیا کریگی۔ یہ ضرور کہا جائیگا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے:—آج کل کے سلسلہ میں یہ تو کہنا ہی پڑیگا کہ گورنمنٹ نے اب تک کیا کیا ہے اور آئندہ کیا کیا کریگی۔ یہ ضرور کہا جائیگا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے:—آج کل کے سلسلہ میں یہ تو کہنا ہی پڑیگا کہ گورنمنٹ نے اب تک کیا کیا ہے اور آئندہ کیا کیا کریگی۔ یہ ضرور کہا جائیگا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

شرمتی شاہجہاں بیگم (پرگی) لیکن آپ ہی تو جنت بتاتے ہیں۔

شری دگمبراؤ بندو - اپنی پارٹی کی سپورٹ (Support) کرنا ان کا کام ہے۔

میں چاہتا ہوں کہ مجھے وہ موقع دیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—अन अल्लेक्शन के वक्त जानबूझकर ऐसा किया जाता है यह मेरा कहना है ।

شری دگمبر راؤ پنلو۔ وہ جو چیز ٹھیک سمجھتے ہیں وہ ضرور کہیں گے۔ میں نہیں سمجھتا کہ کوئی منسٹر جا کر کچھ اس قسم کا کام کرتے ہیں جو انہیں نہیں کرنا چاہیے۔ ایسا نہیں ہے۔ اور اگر وہ ایسا کرتے ہیں تو اس کے لئے چارہ کار موجود ہے۔ ٹرائیبونل (Tribunal) کے سامنے یہ مسئلہ جاسکتا ہے۔ لیکن میں نہیں سمجھتا کہ ہاؤز میں اس طرح یہ ڈیبٹ (Debate) کا مسئلہ بن سکتا ہے۔ یہ نہیں ہو سکتا۔ محض قیاس آرائی کر کے جو جی چاہے کہہ دینا درست نہیں ہو سکتا۔ نہ کہنا کہ آئندہ یہ ہونے والا ہے وہ ہونے والا ہے کچھ مناسب بات نہیں ہے۔ اس کے بعد میں جو ڈیشل ڈپارٹمنٹ، جیل اور پولیس کے بارے میں کچھ کہنے سے پہلے دو ایک مواد کے بارے میں کچھ کہوں گا۔ ایواکیو ڈپارٹمنٹ (Evacuee Department) اور ری ہیبیلیٹیشن (Rehabilitation) کے تعلق سے ڈیمانڈ نمبر ۷ اور ڈیمانڈ نمبر ۸ ہے۔ ایواکیو پراپرٹی کے تعلق سے ایک آنریبل ممبر نے کچھ سنجیشن دئے ہیں میں سمجھتا ہوں کہ ڈپارٹمنٹ نے یہ کوشش کی ہے کہ مقامی لوگوں کو جو وہاں کاشت کرتے ہیں زیادہ سے زیادہ فائدہ پہنچے اور ان کو زمینات دی جائیں۔ یہ سنٹرل ڈپارٹمنٹ (Central Department) کا سبجکٹ (Subject) ہے اور وہاں سے ابھی کوئی فیصلہ نہیں کیا گیا ہے۔ اگر وہاں سے یہ تصفیہ کیا جائے کہ یہ بیچ دینا چاہیے تو ریفوجیز (Refugees) کو بیچ دیا جائے گا اور اگر ریفوجیز خریدنے کے لئے تیار نہ ہوں تو کوآپریٹو فارمنگ (Co-operative farming) کے تحت دیا جائیگا اور لینڈ ٹیننسی کے قانون کے تحت عمل کیا جائیگا لیکن اس بات کی ضرور کوشش کی جائیگی جس کی جانب آنریبل ممبر نے اشارہ کیا ہے۔ ری ہیبیلیٹیشن کے تعلق سے ایک آنریبل ممبر نے فرمایا کہ جو طریقہ اختیار کیا گیا ہے وہ زیادہ مفید نہیں ہے۔ اس سے بہتر تو یہ ہوگا کہ ڈسٹرکٹ وائز (District-wise) کمیٹیاں بنائی جائیں اور یہ کام ان کے تفویض کیا جائے تاکہ وہ لوگ موقع پر جا کر تحقیقات کر کے فیصلہ کر سکیں کہ ناجائز قبضے ہوئے ہیں یا نہیں۔ میں نے خود ملٹری گورنمنٹ کے زمانے میں اس بات کی کوشش کی تھی اور اس کے بعد بھی کہ سرسری تحقیقات کے بعد قبضہ دہانی کے اختیارات کلکٹر کو دئے جائیں۔ میرا خیال تھا کہ اس قسم کا اختیار دینے کے بعد جو فیصلے ہوں گے ان سے جو فریق ناراض ہوگا وہ عدالت دیوانی میں رجوع ہو سکتا ہے۔ لیکن

Constitutional law اس زمانے میں یہ بات نہوسکی اور کانسی ٹیوشنل لا () لاگو ہو گیا اور ٹرانسفر آف پراپرٹی ایکٹ بھی لاگو ہو گیا۔

جس طرح ہندوستان کے دوسرے حصوں میں یہ قوانین لاگو ہوئے یہاں بھی لاگو ہو گئے اس کے بعد ہم کوئی آرڈیننس نکال سکتے تھے اور نہ کوئی ایسا قانون بنا سکتے تھے جو اس ایکٹ اور ان قوانین کو متاثر کرے اور کوئی ایسا فیصلہ کسی ایسے عہدہ دار کی طرف سے نہیں کیا جاسکتا تھا جو ڈیشل عہدہ دار نہ ہو۔ کسی عاملہ کے آفیسر کو ایسا اختیار نہیں دیا جاسکتا تھا۔ جب یہ دقت محسوس کی گئی تو کافی بحث و مباحثہ کے بعد ہم نے مناسب سمجھا کہ ایسے اشخاص کو جنہیں نا جائز طور پر پولیس ایکشن سے پہلے یا پولیس ایکشن کے بعد مداخلت کیا گیا ہے انہیں رلیف (Relief) کے طور پر دو تین طریقوں سے مدد کی جائے۔ ایک یہ کہ آپسی سمجھوتے کے تحت ایسا کر سکتے ہیں چنانچہ کئی کیسز میں اس طرح کا عمل کیا گیا ہے اور کالیابی ہوئی ہے۔ قبضہ واپس دلایا گیا ہے۔ البتہ کچھ ایسے کیسز ہیں کہ جن لوگوں کے قبضے ہو گئے ہیں وہ چھوڑنے کے لئے تیار نہیں ہیں۔ اس کے بعد ہم نے مناسب سمجھا کہ ایک ایسے شخص کو جو ان امور سے دلچسپی رکھتا ہے اور تجربہ رکھتا ہے اس کام کے لئے مقرر کیا جائے۔ چنانچہ ملا عبدالباسط صاحب کو جو ایک زمانے میں مجسٹریٹ تھے اور قانون کے جاننے والے ہیں اسپیشل ایڈوکیٹ (Special Advocate) مقرر کیا گیا۔ وہ ری ہیبیلیشن کے بارے میں بہت کچھ کوشش کر چکے ہیں اور دلچسپی سے ان امور کی جانب متوجہ ہیں۔ ان مقدمات کے لئے رسوم کی معافی کا بھی فیصلہ کیا گیا ہے۔ میں اتنا کہہ سکتا ہوں کہ ایسے مقدمات کی تعداد زیادہ نہیں ہے۔۔۔

شری سید حسن (حیدرآباد۔ سٹی)۔ کئی ہزار کیسز ہیں ایک صاحب کیسے فیصلہ کر سکتے ہیں۔

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ میرے سامنے جو کیسز آئے ہیں وہ ہزاروں کی تعداد میں نہیں ہیں۔ مجھے یہ سنکر تو وہ مقولہ یاد آتا ہے جو ایک مرتبہ اکبر یار جنگ بہادر نے کہا تھا۔ جب اون کے اجلاس پر یہ کہا گیا کہ اس سلسلہ میں ہزاروں نظائر ہیں تو انہوں نے جواب دیا کہ ہزاروں نظائر کے دیکھنے کی تو مجھے فرصت نہیں ہے البتہ ایک نظیر دیدیجئے۔ میں دیکھ لوں گا۔ اسی طرح ہزاروں کیسز ہیں کہنے سے تو کام نہیں چلے گا۔ تفصیلی طور پر جانچ کرنے کی ضرورت ہوتی ہے۔ آفیشل اور نان آفیشل لوگوں کے ذریعہ یہ کام عثمان آباد اور بیدر میں کیا گیا ہے۔ کلکٹروں نے کوشش کی ہے اور جو لوگ اضلاع تعلقے اور دیہات چھوڑ کر حیدرآباد چلے آئے ہیں اون کو آر۔ ٹی۔ ڈی کی بس میں اسپیشلی (Specially) لیجا کر ہم نے وہاں پھر سے بسایا ہے۔ جہاں تک تفصیلی رپورٹس کا تعلق ہے اون کی بناء پر میں کہہ سکتا ہوں کہ اب صرف چند مسائل تصفیہ طلب رہ گئے ہیں۔ وہ اتنے زیادہ نہیں ہیں کہ ان کی تعداد کو ہزاروں کی تعداد کہا جائے۔ جہاں تک ملا عبدالباسط صاحب کا تعلق ہے وہ

دلچسپی سے کام کر رہے ہیں۔ اب چالیس کیسز ان کے پاس ہیں۔ اس کے باوجود کیسز کی تعداد اور کام کے اعتبار سے حکومت کو اگر یہ معلوم ہو کہ ایک صاحب سے کام نہیں چلے گا اور کسی کو مقرر کرنے کی ضرورت ہے تو یقیناً کسی اور کو بھی مقرر کیا جائے گا۔ قبضہ دہانیوں کے کام کے ساتھ ساتھ جو دیگر لوگ متاثر ہوئے ہیں، بیوائیں وغیرہ جو پولیس ایکشن کے بعد یا اوس زمانے میں جب کہ گڑ بڑ تھی تو اون کو بیوہ فائدہ کے طور پر امداد دی جا رہی ہے اور یتیم بچوں کی پڑھائی کا انتظام کیا گیا ہے۔ وکٹوریہ میموریل آرفنج (Victoria Memorial Orphanage) میں ان کو رکھا گیا ہے۔ اس طرح سے کام کیا جا رہا ہے۔ یہ دراصل پانچ لاکھ کی جو مدد ہے اس میں ڈھائی لاکھ کی منظوری چاہی گئی ہے۔ اس کی وضاحت میں نے پہلے بھی کی ہے اور اب بھی کہتا ہوں کہ چھ مہینے کی حد تک یہ رقم مانگی گئی ہے۔ گورنمنٹ آف انڈیا سے جو نئی منظوری آئے گی تو اوس رقم کو لیں گے۔ اگر اس طرح ڈیمانڈ پیش نہ کیا جاتا تو رقم لیا پس (Lapse) ہو جاتی۔ یہ پوری رقم اس کام کے لئے خرچ ہوگی۔

اس کے بعد ایک چھوٹی سی مدد ہے جو معلوم ہوتا ہے کہ اکس کریمنل ٹرائبس (Ex-criminal Tribes) کے بارے میں ہے۔ یہ ۵۰ ہزار کی مدد ہے۔ اب تک جو خرچہ ہوا ہے یہ اوس سے کم ہے۔ اب جو خرچہ ہوگا وہ صرف نگرانی کی حد تک ہوگا۔ لنگل سٹلمنٹ کریمنل کالونی (Lingal Settlement criminal colony) کا اس طرح انتظام کیا گیا تھا کہ وہ پولیس کی نگرانی میں رہیں وہاں کے قبائلیوں کو تعلیم دینے اور اون کو روزگار کے حاصل کرنے کے طریقے بتانے کے لئے ایک چھوٹا سا عملہ رکھا گیا تھا۔ اب یہ زیر غور ہے کہ اس کو سوشل سروسز ڈپارٹمنٹ کے تفویض کرنا چاہئے۔ جس طرح کوپا جاتی کے لئے کیا گیا ہے۔ اسی طرح لنگل میں بھی یہ کوشش کی گئی ہے۔ جب یہ تصفیہ ہو جائے تو اس مدد کے تحت جو رقم رکھی گئی ہے وہ سوشل سروسز ڈپارٹمنٹ کے تحت منتقل کر دی جائے گی۔

شری. وئی. ڈی. دیشپانڈے :- یہ جو ۵۵ ہزار روپے اکس کریمنل ٹرائبز کے لئے مانگے جا رہے ہیں اس میں کچھ کام اب تک ہوا ہے یا نہیں؟ اب جسے آپ سوشل سروسز ڈپارٹمنٹ میں جمل کرنا چاہتے ہیں اس سے پہلے اس کے لئے کیا کام ہوا ہے یہ میں جاننا چاہتا ہوں۔

شری ڈی. جی. راؤ بندو :- اس کی منظوری کے بعد سوشل سروسز ڈپارٹمنٹ ان کی تعلیم وغیرہ کے سلسلہ میں کام کرے گا۔ اب بھی روپ میکنگ (Rope making) میٹ میکنگ (Mat making) وغیرہ کا کام ان کو سکھایا جاتا ہے۔

شری کے۔ وینکٹ رام راؤ :- کریمنل ٹرائبس ایکٹ (Criminal Tribes Act) منسوخ ہونے کے بعد اس کی کیا ضرورت ہے؟

شری ڈگمبر راؤ بندو - وہ ختم ہو گیا ہے لیکن اوس سے بالکل علحدہ اسپرٹ

(Spirit) میں ہیپی چورل افینڈرس بل (Habitual Offenders Bill) اس ہاؤز کے سامنے آچکا ہے جو اب سلکٹ کمیٹی میں ہے۔ وہ آج کل میں یہاں آجائے گا۔ اوس کے تحت بھی اس کی گنجائش ہے کہ ایسے لوگوں کو جو لنگال میں ہیں، گو وہ اکس کریمنل ٹرائبس کے افراد ہوں، ہیپی چورل افینڈرس کہنا درست نہیں ہے۔ اب سوشیل سروس ڈپارٹمنٹ کے تحت جس طرح کوپا لوگوں کے لئے کام کیا جاتا ہے اسی طرح یہ کام بھی ہوگا۔ میں سمجھتا ہوں کہ یہ جو خیال ہے بہت مناسب ہے۔

آرٹی۔ڈی۔ کے تعلق سے دو ڈیمانڈس ہیں۔ ایک ڈیمانڈ نمبر ۶۱ اور دوسرا ڈیمانڈ نمبر ۹۳۔ ڈیمانڈ نمبر ۹۳ چھتیس لاکھ دو ہزار کیپیٹل اکسپنڈیچر کیلئے ہے۔ آنریبل ممبرس بجٹ کا تفصیلی معائنہ کئے ہونگے تو انہیں معلوم ہوا ہوگا کہ ریونیوارنٹس (Revenue earnings) میں سے ہم نے اس کیلئے کوئی زیادہ رقم پرووائیڈ نہیں کی ہے جو ہمارے اخراجات سے بڑھکر ہو۔ صرف کیپیٹل اکسپنڈیچر کے طور پر یہ رقم بتلائی گئی ہے۔ اس میں وہ تمام اسکیمیں ہیں جن کے تحت بسس میں اضافہ ہونا ہے شلٹرس (Shelters) بنائے جاتے ہیں، پبلک ایمنیٹیز (Public amenities) پرووائیڈ کئے جاتے ہیں انکے لئے گنجائش نکالی گئی ہے۔ پہلے ہی اس پر توجہ کیجانی ضروری تھی۔ بس شلٹرس اور دوسرے ایمنیٹیز کیلئے خرچہ کیا گیا ہے۔ لیکن حالات کے لحاظ سے زیادہ توجہ نہیں ہوسکی یہ شکایت عام طور پر رہتی ہے کہ ریونیو انکم کے جو مددات ہیں اور جن سے کافی آمدنی ہوتی ہے ان میں لیبر کو بھی کچھ حصہ ملنا چاہئے۔ فطرتاً یہ ضرور خواہش رہتی ہے۔ لیکن گورنمنٹ کا یہ نظریہ رہتا ہے کہ جو ریونیوارنٹنگ ڈپارٹمنٹس ہیں ان میں بونس دینا یا لیبر کو بھی حصہ دار بنانے کا کوئی طریقہ نہیں ہوسکتا۔ ہاں جو سہولتیں دیگر ڈپارٹمنٹ کے لوگوں اور گورنمنٹ سرونٹس کو دی جاتی ہیں وہی سہولتیں آر۔ٹی۔ڈی۔ کو بھی ضرور دیجائیگی۔ اسلئے ایسا کوئی ڈیمانڈ مناسب نہیں۔ کچھ مطالبات ٹرائیونل کے حوالے کئے گئے ہیں اور اپیلیٹ کورٹ میں ہیں۔ اور زیر تصفیہ ہیں کچھ ایسی چیزیں ہیں جنکے بارے میں آر۔ٹی۔ڈی۔ لیبرس یونین کے لیڈرس کے متفق ہونے پر کچھ راستہ نکالا گیا ہے۔ اس کا ذکر میں نے اس سے پہلے کیا ہے۔ اس سلسلے میں بھی کچھ ہو رہا ہے۔ میں امید کرتا ہوں کہ اس کا کچھ نہ کچھ راستہ نکل آئیگا۔ لیبر یونین کی جو مانگیں تھیں حکومت نے انہیں دوسرے تہہ تسلیم کرلیا۔ کچھ تو ہماری گورنمنٹ بننے کے فوراً بعد ہی منظور کی گئی۔ اور اسٹرائیک کے بعد کچھ مانگیوں کا تصفیہ ہوا۔ اس کی وجہ سے بھی کافی رقم کا بوجھ ڈپارٹمنٹ پر پڑا۔ اسکے ساتھ حال ہی میں کچھ تجویزیں مان لی گئیں۔ ظاہر ہے کہ ہمارا جو گراس اونٹنگ (Gross earning) ہے اس میں کوئی خاص کمی تو نہیں ہوتی ہے۔ لیکن نٹ انکم میں جو کمی دکھائی دیتی ہے اس سلسلے میں دوسرے شعبے بھی ہیں اس میں ایک یہ بھی ہے کہ ہمارے اخراجات بڑھ گئے ہیں۔ کیونکہ اب اور ٹائم (Overtime) بھی دیا جاتا ہے فیکٹری ایکٹ لاگو ہو چکا ہے اس کی وجہ سے کام کے گھنٹوں کا تعین

ہو چکا ہے۔ اس سے بڑھ کر کوئی کام نہیں ہو سکتا۔ اگر کوئی کرنا ہے تو اسکو اور ٹام دینا پڑتا ہے۔ اس طرح جو چیزیں ہوئی ہیں ان کی وجہ سے خرچہ بڑھنا لازمی ہے۔ یہ بھی ایک سبب ہے جسکی وجہ سے ہم دیکھتے ہیں کہ ارننگس میں کچھ کمی ہوئی ہے۔ اس میں بھی صداقت ہے۔ انفرنچمنٹ (Enfringement) (دونوں طریقوں سے ہوتا ہے۔ پانسجریس تو اور لوڈ (Over load) ہوتے ہیں۔ محض اس خیال سے کہ ریٹ زیادہ ہونے کی وجہ سے آمدنی کم ہو رہی ہے یہ تصور صحیح نہوگا۔ دوسری طرف یہ کہنا بھی اس قدر صحیح نہیں ہے کہ سلپ (Slump) کی وجہ سے ایسا ہو رہا ہے۔ ہاں اس کی وجہ سے کسی قدر آمدنی متاثر ہوئی ہے کیونکہ میں نے فیگرس دئے تھے کہ سلپ کی وجہ سے یو۔ بی اور دوسرے اسٹیس میں کیا اثر ہوا۔ اور خود ریلوے میں کیا ہو رہا ہے۔ وہ فیگرس دیکھنے کے بعد یہ سمجھ سکتے ہیں کہ اس کا کیا اثر ہو رہا ہے۔ لیکن یہ کہنا صحیح نہیں کہ صرف اسی سبب کی وجہ سے اثر پڑ رہا ہے۔ باوجود اس کے کہ بسن اور لوڈ ہوتے ہیں آمدنی کم ہوتی ہے۔ ایسی صورت میں یہ سمجھنے کی کافی گنجائش ہے کہ اس میں کافی لوپ هولس (Loopholes) ہیں۔ جسکی وجہ سے جو پیسہ گورنمنٹ کی ٹریژری میں آنا چاہئے وہ دوسروں کے جیب میں چلا جا رہا ہے یہ تمام چیزیں ایسی ہیں جنکی طرف ڈپارٹمنٹ متوجہ ہے اور حال ہی میں ہم نے اس کے لئے ایک بورڈ بھی کانستٹیوٹ (Constitute) کیا ہے۔ وہ بورڈ ان تمام مسائل کے تعلق سے سوچ رہا ہے کہ کیا کیا جاسکتا ہے۔ اور آئندہ آرٹی۔ ڈی۔ کو کس طرح چلایا جائے انریبل ممبرس نے جو سجیشنس دئے ہیں ان پر ہمدردانہ غور کیا جاسکتا ہے۔

ایک چیز یہ کہی گئی کہ اگر ریٹ میں کمی کردی جائے تو ہماری آمدنی ممکن ہے بڑھ جائے گی۔ اوسکو ورک اوٹ (Warkout) کر کے دیکھا گیا اب آئی جی کرنسی میں فی میل ۳ ۱۰ پائی ریٹ ہے۔ بمبئی میں ۹ پائی آئی۔ جی فی میل لیا جاتا ہے۔ یہ ورک اوٹ کیا گیا کہ ہم بھی وہی ریٹ لین تو کیا ہوگا۔ معلوم ہوا ہے کہ اس سے سالانہ ۳۶ لاکھ روپے کی کمی ہوگی۔ اسکا مطلب یہ ہے کہ اب ہم جو پرافٹ لے رہے ہیں وہ بالکل ختم ہو جائے گا۔ اور آرٹی۔ ڈی کو نقصان میں چلانا پڑے گا۔ یہ حساب کر کے دیکھا گیا۔ پھر بھی میں ہاؤز کو یہ اطمینان دلانا چاہتا ہوں آر۔ ٹی۔ ڈی لاس میں نہ چلے بلکہ کم از کم اوسکی آمدنی اور خرچ برابر ہوں اسکا لحاظ کرتے ہوئے پبلک کے فائدہ کیلئے جو بھی کیا جا سکتا ہے اس پر ضرور غور کیا جائے گا۔ مجھے یہ بھی پتہ چلا کہ بمبئی میں جہاں ۹ پائی فی میل کرایہ لیا جاتا ہے وہاں بھی اس پر غور کیا جا رہا ہے کہ اس کو بڑھا کر ۱۰ پائی فی میل کرنا چاہئے کیونکہ اس شرح کے رکھنے سے نقصان ہوتا ہے۔ ایسی صورت میں سمجھتا ہوں کہ ہمیں اس پر کافی احتیاط کے ساتھ غور کرنے کی ضرورت ہے۔ اگر اس میں جسٹیفیکیشن (Justification) ہو کہ واقعی کمی کیجانی چاہئے تو ضرور اس پر غور کیا جاسکتا ہے۔

اب میں ان ڈیمانڈس کی طرف آتا ہوں جن کے متعلق جیسا کہ میں نے کہا انہیں ایک ایک گروپ سمجھنا چاہئے۔ جیل ڈپارٹمنٹ اور جوڈیشل ڈپارٹمنٹ۔ جوڈیشیل ڈپارٹمنٹ کے بارے میں آنریبل ممبرس کا اور خود میرا بھی یہ خیال ہے کہ جوڈیشری، ڈیموکریسی کی پک بون (Back bone) ہے۔ اور جہاں جوڈیشیل ڈپارٹمنٹ ایفیشینٹ ہو اور لوگوں کو اس پر اعتاد ہو تو میں سمجھتا ہوں کہ وہاں ڈیموکریسی کے پتھنے کی کافی امید ہے۔ یہ عام طور پر سمجھا جاتا ہے۔ اسٹانڈرڈ کے بارے میں کہا گیا۔ یہ واقعہ ہے کہ ہم جس دور سے گذر رہے ہیں اس کے لحاظ سے لوگوں میں جو معیار پیدا ہو جانا چاہئے تھا اس میں کمی ہے پھر بھی میں یہ نہیں سمجھ سکتا کہ اسٹینڈرڈ بالکل ہی گرا ہوا ہے حال ہی میں چیف جسٹس حیدرآباد نے تفصیلی دورہ کر کے متصفیوں کا معائنہ کیا۔ اور پورے حالات دیکھنے کے بعد وہ جس نتیجہ پر پہنچے اس کے لحاظ سے انہوں نے سچیشن تیار کئے ہیں۔ ان میں سے کئی سچیشن پر عمل بھی ہو رہا ہے۔ انہوں نے پہلی بات یہ کہی کہ محض جوڈیشیل آفیسرس ہی نہیں بلکہ ہمارے پاس کے لائرس (Lawyers) اور قانون کا پیشہ کرنے والوں کا اسٹینڈرڈ جب تک نہ بڑھ گیا عدالتوں کا اسٹینڈرڈ بھی بڑھنا مشکل ہے۔ اس لئے انہوں نے بارہا اصرار کیا کہ جب تک انگریزی میں کام نہ لوگوں کو رغبت پیدا نہیں ہو سکتی۔ ان لوگوں کو انگریزی بات کرنا نہ بھی آئے تو کم از کم وہ اس قابل تو ہو جائیں کہ آئندہ پیروی تو کر لے سکیں۔ اور کچھ سمجھ تو لیں۔ وہ یہ سمجھ لیں کہ لا رپورٹ میں کیا لکھا ہے۔ سپریم کورٹ یا دوسرے ہائیکورٹس کے کیا ججمنٹس (Judgments) ہیں انہیں معلوم ہونا چاہئے۔ کیونکہ اس کا کرنٹ لٹریچر (Current literature) جو کچھ بھی ہے وہ انگریزی ہی میں ہے۔ آج کوئی دوسری زبان ایسی نہیں ہے جس میں پورا لٹریچر ہو۔ ہمارے پاس عدالتوں میں آئین دکن یا دکن لا رپورٹ یا جو کچھ بھی ہیں وہ پرانے اصولوں پر ہیں۔ وکلاء صاحبان اور ججس اتنا اسٹینڈرڈ تو رکھیں کہ انگریزی میں جو ججمنٹس آتے ہیں انہیں سمجھ جائیں۔ کرنٹ ججمنٹس کیا ہیں؟ کس مسئلہ پر سپریم کورٹ نے کیا کیا ہے؟ امتحان وہ انگریزی میں پاس کریں یا نہ کریں یہ الگ بات ہے۔ لیکن ان کا معیار اتنا بلند ہونا چاہئے کہ یہ چیزیں سمجھ سکیں۔ اور اگر معیار اتنا بلند نہ ہو تو یہ عدالتوں پر اثر کرتے بغیر نہیں رہ سکتا۔ وکلاء جب بحث کی تیاری کر کے آتے ہیں تو اس کا اثر لازماً عدالتوں پر پڑتا ہے۔ وہ سمجھتے ہیں کہ کیا مسائل ہیں اور کس طرح ان کا فیصلہ کرنا چاہئے۔ اگر مباحث ہی پیدا نہ ہوں تو ظاہر ہے کہ کوئی ایسا فیصلہ جس کو اسٹینڈرڈ سمجھ سکیں، نہیں ہو سکتا۔ یہ باتیں ایک دوسرے پر اثر کرنے والی ہیں۔ لائرس کا بھی اسٹینڈرڈ بڑھانے کی ضرورت ہے۔ امتحان کی حد تک چیف جسٹس نے ایک دو گروپس میں ناکام رہنے والوں سے متعلق جو طے کیا ہے اس کا مطلب یہ نہیں تھا کہ ان لوگوں کو فائدہ نہ پہنچے۔ لیکن انہیں کم از کم اتنی انگریزی تو آجائے کہ کرنٹ لٹریچر سے وہ واقف ہو سکیں۔

جب تک یہ نہ معلوم ہو ہمارا اسٹینڈرڈ نہ بڑھ سکے گا۔ قانونی کتابوں کی فراہمی کے سلسلے میں اسٹینڈرڈ کمیٹریز (Standard commentaries) اور کچھ ماہ اس کے لئے رکھا گیا ہے جس سے ہر عدالت میں قانونی کتب خریدی جاسکتی ہیں۔ چیف جسٹس نے ۳۳ عدالتوں کی ایک فہرست بنائی ہے جہاں عدالتوں کے مکانوں کا یہ حال ہے کہ جج چھتری لیکر بیٹھتے ہیں کیونکہ ان پر بھی اوپر سے پانی ٹپکتا ہے۔ یہ ایسا مسئلہ ہے۔ جسکا تعاقب مالیات سے ہے اور اس کے لئے ہمیں کوئی نہ کوئی راستہ نکالنا پڑتا ہے۔ گورنمنٹ نے یہ سوچتے ہوئے ایسی ۷ عدالتوں کو، جہاں بیٹھنا بھی ناممکن تھا، تعمیر کرنے کا پروگرام بنایا ہے۔ اور میں امید کرتا ہوں کہ اس سال یہ انتظام ہو جائے گا۔

طلبانہ وغیرہ جیسے امور سے متعلق کچھ باتیں کہی گئیں۔ اس سے بڑھکر میں یہ کہتا ہوں کہ گواہوں کے بارے میں بھی پوچھا جاسکتا ہے۔ حالات اتنے بدلے ہوئے ہیں کہ ہم کو پھر سے تمام چیزوں پر نظر ثانی کرنے کی ضرورت ہے۔ یہ ایک ایسا مسئلہ ہے جو گورنمنٹ آف انڈیا کے زیر غور ہے۔ میں یہ بھی کہہ سکتا ہوں کہ ہمارے کریمینل پروسیجر کوڈ کے سلسلہ میں اور دوسرے جوڈیشل پروسیجرس کے سلسلہ میں حکومت ہند کے پاس اس طرح کی یوجنا ہے۔ ہوم منسٹر کی جانب سے اس طرح کہا گیا ہے۔ اور میں سمجھتا ہوں کہ جلد ہی پروسیجرس میں بھی تبدیلی ہو جائیگی جس کی وجہ سے جو جو پیچیدگیاں معلوم ہوتی ہیں وہ رفع ہو سکتی ہیں۔ اس وجہ سے میں سمجھتا ہوں کہ ہمیں جوڈیشل ڈپارٹمنٹ کے تعلق سے مایوس ہونے کی وجہ نہیں ہے۔ ہمارے پاس آج کم از کم ایسے لوگ ہیں جن پر کافی بھروسہ ہونا چاہیئے۔ وہ مستعد ہیں۔ سمجھدار ہیں اور حیدرآباد کے جوڈیشل ڈپارٹمنٹ کی ترقی ان کے پیش نظر ہے۔

ایک بات جو مجسٹریٹس کے تعلق سے کہی گئی اور میں بھی اس میں صداقت دیکھتا ہوں۔ وہ یہ کہ جب ان کے سامنے کوئی واقعہ آتا ہے تو خود ان کو انیشیٹیو (Initiative) لینا چاہیئے۔ یہ بات نہیں ہوتی۔ مجسٹریٹ کو ایسے اختیارات ہیں۔ پروسیجر کوڈ میں ہیں۔ میرا تجربہ ہے کسی جگہ ایسا ذکر آیا تو تذکرتا میں نے کہا کہ یہ بات ہے۔ آپ کو اختیار ہے اور آپ ایسا کر سکتے ہیں تو انہوں نے یہ کارروائی شروع کردی مجسٹریٹ کو جو کریمینل کوڈ کے تحت اختیارات ہیں ان کو پبلک کے مفاد کے لئے استعمال کرنا چاہیئے ورنہ پہلے زمانہ میں یہ رجحان تھا کہ جو چالانی مقدمات ہوتے ہیں ان میں لازمی طور پر سزا ہونی چاہیئے اور کوئی استغاثے کا مقدمہ ہو تو وہ خارج ہونا چاہیئے۔ عام طور پر یہ سمجھا جاتا تھا کہ جو لوگ استغاثہ داخل کئے ہیں وہ کامیاب ہوں گے۔ بہر حال مجسٹریٹس کو میں نے اس بارے میں توجہ دلائی ہے کہ مجسٹریٹ کو اپنی یہ ذمہ داریاں سمجھنا چاہیئے جو مقدمات استغاثہ کے ہوتے ہیں یا معمولی مقدمات ضرور وغیرہ کے ہیں ان میں اگر کوئی

سچائی معلوم ہو تو کڑی سے کڑی سزا دینا ضروری ہے۔ کیونکہ اگر مجسٹریٹ اس طرف رجوع نہوں تو ظاہر ہے کہ پبلک موریل (Public morale) پر یہ بھی اس کا برا اثر پڑتا ہے۔

شری عبدالرحمن (ملک پیٹھ) - عدالتوں کی زبان کے تعلق سے حکومت کی کیا پالیسی ہے ؟

شری دگمبر راؤ بناو - معاف کیجئے - میں کہنے والا ہی تھا - زبان کے تعلق سے کچھ غلط فہمی ہوئی ہے - جیسا کہ میں نے کہا معیار اونچا کرنے کے لئے ہمارے چیف جسٹس کا یہ رجحان ہے کہ لائرس کو انگریزی جاننا چاہیئے اور جوڈیشل افسرس کے لئے تو یہ لازمی ہے کہ انگلش میں فیصلے لکھیں - بیانات لینے کے سلسلے میں اڑوس پڑوس کے اسٹیشن میں جو عمل ہوتا ہے ایسا عمل یہاں نہیں ہوتا - دراصل یہ پریسیجر ہونا چاہیئے کہ گواہ جس زبان میں بولتا ہے اسی زبان میں بیان قلمبند کیا جائے تب ہی ہمکو اصلیت معلوم ہو سکتی ہے - اس کا ایک ڈبل ریکارڈ اس طرح تیار ہونا چاہیئے کہ ایک تو گواہ کی لینگویج میں ہو اور دوسرے انگلش میں ہو کیونکہ پریسائیڈنگ آفیسر (Presiding officer) انگریزی سمجھتا ہے - دوسرے سررشتہ دار، پیشی کا اہلکار یا ٹرانسلیٹر ہوگا وہ اس زبان میں بیان قلمبند کریگا جس زبان میں کہ گواہ بولتا ہے - ہائیکورٹ سے اس بارے میں کافی مراسلت کے بعد یہ مان لیا گیا ہے کہ پبلک انٹرسٹ کس میں ہے گواہ کو بھی یہ معلوم ہونا چاہیئے کہ میں نے جو بیان دیا وہ ٹھیک ہے کیونکہ آخر میں تو یہ لکھا جاتا ہے کہ ”گواہ نے بیان سنکر صحت تسلیم کی“، ظاہر ہے کہ اسی لینگویج میں یہ بیان لکھا جانا چاہیئے - اس حد تک غور کیا گیا اور یہ طے کیا گیا کہ جہاں پر جو لینگویج بولی جاتی ہے اس میں بیان قلمبند کرنا چاہیئے - اس کی ڈبل انٹری (Double entry) ہو البتہ پریسائیڈنگ آفیسر بیان کو انگلش میں نوٹ کر سکتا ہے - لیکن جو اصل بیان ہوتا ہے وہ اسی زبان میں قلمبند ہونا چاہیئے اس میں ایک دقت یہ ہے کہ ہر جگہ ہر لینگویج کا انتظام تو نہیں ہو سکتا - اس وجہ سے یہ سمجھا گیا کہ جس ایریا میں جو کورٹ کام کرتا ہے اسی لحاظ سے یہ عمل ہونا چاہیئے - تب کورٹس کے لحاظ سے غور کیا گیا - فرض کیجئے کہ ریلوے مجسٹریٹ کا کورٹ ہے یا حیدرآباد کا کوئی کورٹ ہے یا اسپیشل مجسٹریٹ کا کورٹ ہے جہاں پر ریاست بھر کے مقدمے آتے ہیں تو وہاں پر کونسی لینگویج رکھی جائیں ؟ تو وہاں کے لئے سب لینگویجس رکھی گئی ہیں جسے ہندی ہے - اردو ہے تلگو - سرہی اور کڑی ہیں - ریلوے مجسٹریٹ کے پاس ان سب لینگویجس کا انتظام ہوگا - حیدرآباد میں خاصکر اردو ہندی اور تلگو کا انتظام ہوگا - تو ایسی کوئی خاص تشویش نہ ہونا چاہیئے جس کی وجہ سے یہ خیال پیدا ہو جائے کہ کسی لینگویج کو دبانے کی کوشش ہو رہی ہے - اس میں لینگویجک پرائیویس (Linguistic provinces) کا کوئی مسئلہ نہیں ہے بلکہ ولجیں اور

تعلقوں کے لحاظ سے جہاں پر جو زبانیں بولی جاتی ہیں ان کا انتظام کیا گیا ہے۔ چنانچہ ضلع نانائیڈ میں ایک تعلقہ ایسا ہے کہ جہاں پر تین زبانیں بولی جاتی ہیں نووہاں ان کا انتظام کیا گیا ہے۔ اس کا پریس نوٹ عنقریب ہی شائع ہونے والا ہے۔

شری سرن گروہ انعامدار (اندولہ - جیورگی) - ضلع گلبرگہ تعلقہ سیڑم اور النہ میں کنڑی کا انتظام ہے۔ میں نہیں سمجھتا کہ النہ اور سیڑم میں کنڑی بولنے والے ہیں۔

شری دگمبر راؤ بندو - دونوں انتظامات ہیں تاکہ کسی کو بہ احساس نہ ہو۔ النہ میں کنڑی میں انتظام رکھا گیا ہے اور فیگرس دیکھ کر ہی رکھا گیا ہے۔ معلوم یہ ہوا کہ سنہ ۱۹۵۱ء کے سسٹمز کے لحاظ سے ہائیکورٹ نے ایسا عمل کیا۔ لیکن جب ہائیکورٹ کو توجہ دلائی گئی تو ہائیکورٹ اور حکومت کے ارکان نے بیٹھ کر غور و خوص کیا اس امر کے پیش نظر کہ لنگوئسٹک پریفرنس دینا نہیں ہے بلکہ عوام کو سہولت دینا ہے اس لحاظ سے جہاں پر دو لینگویجس بولی جاتی ہیں وہاں دو کا انتظام کیا گیا اور جہاں تین بولی جاتی ہیں وہاں تین کا انتظام کیا گیا۔ اس طرح سے.....

شری ڈی. ڈی. دیشپانڈے :- کسی لینگویج کو ریکگنائیج کرنے کے لیے کیا پراسیڈر رکھا گیا ہے؟

شری دگمبر راؤ بندو - عام طور پر یہ خیال رکھا گیا ہے کہ کم سے کم ۳۰ پرسنٹ تک کسی لینگویج کے جاننے والوں کی آبادی ہوگی تو اس کا بھی لحاظ کیا جائے۔ لیکن بعض جگہ کچھ ایسا ہوتا ہے کہ ایک دو ہی مواضع ہیں جیسا کہ آنریبل ممبر نے سمجھایا تھا انہیں کسی اور تعلقہ سے متعلق کر دیں تو کوئی دقت نہوگی۔ اس تعلق سے آنریبل ممبرس کو تشویش کی ضرورت نہیں ہے۔

شری ماتی اشاٹاچی واہمارے :- کینوٹ، مانیکگڈ، راجورا یہی مراثی سुरू کئے آہے کای؟

شری دیگمبر راؤ بندو :- کوٹہ؟

شری ماتی اشاٹاچی واہمارے :- کینوٹ و مانیکگڈ راجورا یہی مراثی سुरू کئے آہے کای؟

شری دگمبر راؤ بندو - کنوٹ اور راجورہ دونوں میں مرہٹی ہے۔ البتہ بوتھ جو بائی لنگویل (Bi-lingual) ہے وہاں انتظام نہیں کیا گیا ہے کیونکہ ایسا انتظام نہیں کیا جا سکتا تھا۔ لیکن ہمارے سامنے یہ چیز تھی کہ پبلک کا مفاد ملحوظ رہے اور جیسا کہ میں نے کہا جہاں دو لینگویجس ہیں وہاں عموماً دونوں لینگویجس کا انتظام کیا گیا ہے۔ حیدرآباد میں تو ہندی - اردو - تلگو - مرہٹی - کنڑی پانچوں زبانوں کا انتظام کیا گیا ہے۔

شری کٹا رام ریڈی :- کیا یکم اپریل سے اس پر عمل ہوگا؟

شری دگمبر راؤ بندو - ہاں وہ نوٹیفیکیشن آجائے گا۔ میں سمجھتا ہوں کہ جوڈیشل ڈپارٹمنٹ کے تعلق سے ایک اہم چیز رہ گئی تھی جس کی یاد دہی کے لئے میں آنریبل ممبر کا مشکور ہوں۔

شری عبدالرحمن - میں اس سلسلہ میں مبارکباد بھی دیتا ہوں کہ حکومت اس ضمن میں بہت اچھی پالیسی اختیار کر رہی ہے۔

شری دگمبر راؤ بندو - اس کے بعد جیل ڈپارٹمنٹ کے تعلق سے یہاں کچھ کہا گیا ہے۔۔۔

شری شرن گوڑہ - میرا ایک کانسٹیٹیوشنل آبجکشن (Constitutional objection) ہے۔ ہائی کورٹ کے اخراجات ۱۰ لاکھ ۷۰ ہزار روپیہ بتلائے گئے ہیں۔ سارلیز کے بارے میں چارجڈ اکاؤنٹ (Charged account) ہوسکتا ہے لیکن دوسرے اخراجات کے متعلق میرا اعتراض تھا کہ ان پر ووٹ نہیں دیا جاسکتا۔

شری دگمبر راؤ بندو - وہ ووٹبل (Votable) ہے۔ اور اسی لحاظ سے ان پر کٹ موشنس بھی آئے ہیں۔

شری جی. ڈی. دیشاپانڈے :- انکا کہنا ہے کہ صرف چیف جسٹس اور انکے मामले تک ہی چارجڈ ہونا چاہیے لیکن یہاں انکے باقی اکسپنڈیچر کو بھی چارجڈ بتایا گیا ہے یا نہی؟ کیونکہ ہائی کورٹ کا خرچ چارجڈ بتایا گیا ہے ویسا نہیں ہونا چاہیے تھا۔ اس کے لیے دو ہسٹری بنانے چاہیے۔

شری دگمبر راؤ بندو - ایسا نہیں ہے بلکہ ہائی کورٹ جو ہوتا ہے اس کا ایک خاص پوزیشن رکھا گیا ہے اور پورے جوڈیشل ڈپارٹمنٹ پر انٹنسٹیشن اور فنانس کے نقطہ نظر سے ہمارا کنٹرول ہے۔ دوسری ماتحت عدالتوں پر انٹنسٹیشن کنٹرول ہے۔ ہائی کورٹ جس بھی جب مقرر ہوتے ہیں انہیں سپریم کورٹ کے مشورہ سے پریسڈنٹ مقرر کرتے ہیں اور اس پر راج پریکٹ کی بھی رائے لی جاتی ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ گورنمنٹ کی رائے لی جاتی ہے۔ کانسٹیٹیوشن کے تحت ہائی کورٹ سپریم کورٹ کے تحت سمجھے جاتے ہیں۔ دوسری جو عدالتیں ہیں ان کے تعلق سے ہاؤز کے سامنے ڈیمانڈس رکھے جاتے ہیں۔ کیونکہ فینانس بھی ہمارے پاس سے ہی جاتا ہے۔ چونکہ آل انڈیا اسکیم کے تحت اس طرح کا عمل ہوا ہے میں سمجھتا ہوں کہ وہ ٹھیک ہی ہوا ہے۔

جیل ڈپارٹمنٹ کے تعلق سے میں یہ عرض کر رہا تھا کہ کچھ چیزیں ایسی کہی گئی ہیں کہ جس کے بارے میں کم از کم آنریبل ممبرس آف دی ہاؤز کو میں سمجھتا ہوں کہ کوئی شکایت نہ ہونی چاہئے تھی۔ میں یہ دیکھتا ہوں کہ جو اصلاحی چیزیں جیل میں کی گئی ہیں ان سے فائدہ ہوا ہے۔ ممکن ہے کچھ تاح تجویزے ان دنوں کے پہلے کے ہوں گے اور ابھی ان کا اثر ذہنوں پر ہو۔ لیکن میں دعوت دیتا ہوں کہ وہ جیل جائیں۔ لیکن برے معنوں میں نہیں۔۔۔۔۔

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :- क्या व्हिजीटर के तौर पर नहीं रखा जा सकता ? जिसके लिये सिर्फ जल ही जाना पड़ेगा ?

(Laughter)

श्री दगंबर राव बंदो - आप دونوں طریقوں سے جا سکتے ہیں - آپ قریب سے دیکھنا چاہتے ہیں تو جیل جا کر بھی دیکھ سکتے ہیں - (Laughter) اس کا موقع مل سکتا ہے - لیکن مجھے یقین ہے کہ آنریبل ممبر پھر سے جائیں ، چاہے کسی حیثیت سے جائیں تو ان کو یقیناً فرق نظر آئے گا اس کے بعد وہ مطمئن ہو جائیں گے کہ کم از کم ہم نے کچھ قدم ترقی کی طرف اٹھایا ہے اور جو ایمینیٹیز دئے گئے ہیں اس کے متعلق میں نے الگ الگ اوقات میں قیدیوں سے بات چیت کر کے بھی پوچھ لیا ہے - حال ہی میں اگر ریکارڈ چل فارم کھولا گیا وہاں پر بھی کوئی ۳۰-۴۰ ایسے لوگ ہیں جنہیں لائف سنٹنس (Life sentence) ملا ہے یا کافی بڑی مدت کی سزا میں لاک اپ (Lockup) ہیں اون کے متعلق یہ جانچ کرنے کے بعد کہ وہ بھاگ نہ جائیں گے اون کے لئے وہاں بیکار کس کا انتظام کر کے کھیت کے کام پر لگایا گیا ہے - انہوں نے بہت خوشی سے کام کیا ہے اور میں نے دیکھا ہے کہ اپنی محنت سے قیدیوں نے چار پاؤلیاں تیار کی ہیں - انہوں نے کافی اچھا کام کیا ہے وہ دیکھنے کے قابل ہے - میں کوئی ایسی چیز تو آپ کے سامنے رکھنا نہیں چاہتا کہ محض تعریف ہی تعریف ہو - لیکن میں ضرور یہ چاہتا ہوں کہ آپ سنٹرل جیل جا کر دیکھیں - سکندر آباد جیل جا کر دیکھیں - یہ دیکھنے کے بعد اور اطمینان کرنے کے بعد مجھے یقین ہے کہ آنریبل ممبر اس معاملہ میں میری تائید کریں گے - اور وہ سمجھیں گے کہ ہم نے جو اقدام اٹھایا ہے وہ اچھا اور ترقی کی طرف ہے ...

श्री. गोपिडी गंगारेड्डी (निर्मल आम) :- तालूकेजात में जो रिमांडज रखे जाते हैं और उनको जो तकलीफ होती है उसके बारे में आपने कुछ नहीं बताया ।

श्री दगंबर राव बंदो - جن لوگوں کو زیر دویافت رکھا جاتا ہے ان کے بارے میں ...

श्री. गोपिडी गंगारेड्डी :- जिन लोगों को तालूकेजात में रखा जाता है उनके बारे में ।

श्री दगंबर राव बंदो - میں تعلقہجات کے یلیوں کے بارے میں کہہ رہا ہوں - تعلقہ منصہ میں ہم نے لاک اپس (Lock ups) دئے ہیں پہلے وہ لاک اپس تحصیل کے تحت تھے - تعلقہ جیل میں اون کو ہی رکھا جاتا ہے جن کے مقدمات چل رہے ہوں - اگر تعداد کافی پڑھ جائے تو ڈسٹرکٹ میں منتقل کیا جاتا ہے - تمام مقدمات پر تو اون کے لئے مکان کا انتظام نہیں ہو سکا - لیکن ہر جگہ جس طرح پرووائڈ (Provide) کیا گیا ہے اسی طرح اونکو بھی پرووائڈ کیا گیا ہے - بہتہ اور کھانے پینے کی چیزوں میں کوئی فرق نہیں ہے - البتہ بعض جگہوں پر عبارتوں کی تکلیف ہے - اس کے لئے یہ سوچا جا رہا ہے کہ عارضی طور پر ہم کیا کر سکتے ہیں -

شری کے۔ ایل۔ ڈسمہاراؤ (یلندو۔ عام)۔ ریفارمس آنے کے بعد بھی قیدیوں سے برقعہ انداز سے لے کر آفیسر تک کے گھروں پر کام لیا جاتا ہے۔

شری دگمبراؤ بندو۔ میں نے ایسی شکایت نہیں سنی ہے۔ البتہ کھیتوں پر کام لیا جاتا ہے۔ باؤلیوں پر کام لیا جاتا ہے۔ پانی وغیرہ نکالنے کے لئے۔ یا جیل کے برتن اور کپڑے وغیرہ دھونے کا کام لیا جاتا ہے۔

شری کے۔ ایل۔ ڈسمہاراؤ۔ آفیسر ذاتی کاموں کے لئے اون کو آرڈرلی (Orderly) کے طور پر رکھ لئے ہیں۔

شری دگمبراؤ بندو۔ میرے پاس ایسی کوئی شکایت نہیں ہے۔

شری اے۔ راجندر ریڈی۔ اپوزیشن کے ممبرس میں کوئی نان آفیشیل ویزیٹرس جیلوں کے لئے نہیں لئے گئے اسکی کیا وجہ ہے؟

شری دگمبراؤ بندو۔ میں نہیں سمجھتا کہ ایسا ہو سکتا ہے۔ بات یہ ہے کہ دونوں طرف سے اچھی اسپرٹ ہونی چاہئے۔ اگر آپ کو ہم پر اعتقاد ہے تو ہم کو بھی آپ پر اعتقاد ہو سکتا ہے۔ لیکن ابتداء ہی اس سے ہوتی ہے کہ آپ ہم سے بے بھروسہ رہتے ہیں۔ ایسی صورت میں ہم بھی آپ سے بے بھروسہ رہینگے۔ یہ چیزیں ایک دوسرے پر موقوف ہیں۔ اگر ہم ایک دوسرے کو سمجھ سکیں اور یہ اسپرٹ ہو کہ ہم کس حد تک مل کر کام کر سکتے ہیں تو یقیناً ہم بہت آگے بڑھ سکتے ہیں۔ جہاں اختلافات ہوتے ہیں اونکو تو چھوڑ دیجئے۔ لیکن آج حالات ایسے ہیں کہ ہم کئی معاملات میں متفقہ طور پر کام کر سکتے ہیں۔

ایک اور چیز یہ بھی کہی گئی کہ جیل ڈپارٹمنٹ میں سندھی لوگ ہی ہیں۔ میں نے اس کا جواب پہلے بھی دیا تھا مجھے افسوس ہے کہ آپ انکے متعلق اس طرح سے سوچ رہے ہیں۔ یہ وہ لوگ ہیں جو ایک زمانے میں سندھ کے جیل ڈپارٹمنٹ میں تھے۔ اور گورنمنٹ آفیسر تھے۔ اونکی بدقسمتی تھی کہ ملک کی تقسیم ہو گئی اور وہ یہاں آنے کے لئے مجبور ہو گئے۔ گورنمنٹ آف انڈیا نے جس طرح الگ الگ جگہوں پر اون کو آباد کیا یہاں بھی اون لوگوں کو بھیجا۔ یہاں پر جیسے حالات پولس ایکشن کے بعد تھے اون کے تحت یہ مناسب سمجھا گیا کہ یہاں پر اونکو ضم کر لیا جائے۔ چنانچہ پبلک سروس کمیشن کے مشورہ سے اون کو الگ الگ جگہوں پر رکھا گیا۔ میں اس سلسلے میں یہی کہوں گا کہ ہم کو وسعت دلی کے ساتھ دیکھنا چاہئے۔ میں ہاؤز سے اپیل کرینگا کہ یہ لوگ سندھی ہیں یا پنجابی ہیں اس نقطہ نظر سے نہیں سوچنا چاہئے بلکہ کام کے لحاظ سے معیار کے لحاظ سے اونکی ذاتی قابلیت کے لحاظ سے سوچنا چاہئے۔ اگر کوئی آدمی نا اہل ہے تو ضرور اسکے بازے میں الگ طور پر سوچا جاسکتا ہے۔ محض سندھی ہونے کی بناء پر اون کے خلاف سوچنا یا سمجھنا مناسب نہیں ہے۔

پولس کے تعلق سے آنریبل ممبرس نے جو رجسٹریشن رکھے ہیں وہ وہی رجسٹریشن ہیں جن کے بارے میں حکومت خود بھی غور کر رہی ہے۔ اس وجہ سے جو رجسٹریشن آئے ہیں میں ان کو ولبکم (Welcome) کرتا ہوں اور خاص کر میرے دوست لیڈر آف دی اپوزیشن نے کانسٹیبلز کے تعلق سے جو خیال ظاہر کیا ہے اوسکو ولبکم کرتا ہوں۔ اس کے پہلے انہوں نے کبھی اونکے متعلق غور نہیں کیا تھا۔ میں اس کی وجہ سے کانسٹیبلز کو بھی قابل مبارکباد سمجھتا ہوں کہ کم از کم آج آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن یہ سمجھنے لگے ہیں کہ وہ بھی انسان ہیں۔ اون لوگوں کو بھی آسائش کی ضرورت ہے۔ اونکے لئے بھی کچھ نہ کچھ کرنے کی ضرورت ہے۔ مجھے اونکے اس کہنے سے کافی نشئی ہو گئی۔

شری ڈی. ڈی. دیشپانڈے :- پیچلے وکٹ بھی مینے کہا تھا کی کانسٹیبلز کو بٹر ہارڈسنگ ملے اور انکا پے سکیل بھی بٹر ہو ایسا کہا تھا اب سے سیف جیاد ڈیٹل مین کہا ہے۔

شری دگمبر راؤ بندو - دونوں بھی قابل مبارک باد ہیں۔ ہمیشہ پولیس کے بارے بحث کرتے رہے دو تین چیزیں زیادہ کہی جاتی ہیں۔ ایک تو یہ کہا جاتا ہے کہ وہ لوگ ان افیشنٹ (Inefficient) ہیں۔ کرپٹڈ (Corrupted) ہیں۔ انہیں اپوزیشن پارٹیز کو سپرس (Suppress) کرنے کے لئے استعمال کیا جاتا ہے۔ میں اس سلسلہ میں یہ کہوں گا کہ حکومت کی پالیسی ایک بنیاد پر ہوتی ہے۔ اگر حکومت کی پالیسی کریٹسزم (Criticism) کے قابل ہے تو ہاؤز اس پر کھلے طور پر کریٹسزم کر سکتا ہے۔ لیکن اگر کوئی آدمی غلط کام کرتا ہے تو اس کی اتنی ذمہ داری ہم پر نہیں ڈالی جاسکتی جتنی کہ ڈالنے کی کوشش کی جاتی ہے۔ اور اس کو ایسا رنگ دیا جاتا ہے کہ پالیسی کے طور پر حکومت نے یہ کام کروایا ہے۔ جیسا کہ دس آدمیوں میں سے دو آدمیوں نے کوئی غلط کام کیا ہو تو یہ کہنا کہ دس آدمیوں نے یہ کام کیا ہے۔ آپ دوسروں پر الزام لگانے کی کوشش کرتے ہیں اور یہ کہتے ہیں کہ ایسے لوگوں سے آپ یہ کام کراتے ہیں۔ میں تو یہ سمجھتا ہوں کہ یہ ہم پر شبہ ہے۔ ہمارے کیڑے بکتر پر دھبہ لگانے کی کوشش ہے۔ حکومت کو ذلیل کرنے کی کوشش ہے۔ دراصل اگر پولیس کے تعلق سے حکومت حیدرآباد کی یہ پالیسی ہوتی کہ پولیس کے ذریعہ کمیونسٹ پارٹی یا کسی دوسری پارٹی کو دیا جائے تو ہاؤز جانتا ہے کہ کمیونسٹ پارٹی پر سے جو بیان (Ban) اٹھا دیا گیا وہ نہ اٹھتا اور برابر یہی بتا یا جاتا کہ اس بیان کو کٹینو (Continue) کرنا چاہیئے۔ اور جن لوگوں پر مقدمات تھے وہ نہ اٹھائے جاتے۔ آنریبل ممبرس آفسی اپوزیشن کے ذمہ دار کارکن جانتے ہیں کہ محض ہماری کوشش کی وجہ سے یہ مقدمات اٹھائے گئے۔ ہم یہ محسوس کر رہے تھے کہ ٹیکنیکل (Technically) تو یہ مقدمات چل سکتے ہیں لیکن ذاتی طور پر میں خود بھی ان مقدمات سے مطمئن نہیں تھا اس لئے ہم نے یہ مناسب نہیں سمجھا کہ بلا وجہ ان لوگوں کو سالہا سال

تک جیلوں میں سڑایا جائے۔ جو لوگ بوڑھے اور بیمار ہیں ان کی زندگی خواہ مخواہ جیلوں میں ختم کر دی جائے۔ ہم نے اس کے معافی ہیومنٹیرین پائنٹ آف ویو (Humanitarian point of view) سے سرچا۔ چنانچہ بہت سے مقدمات اٹھائے گئے۔ ڈیٹینیوز (Detenues) کی حیثیت سے جو لوگ جیلوں میں نہرے ان کے جیل سے چھوٹنے کے بعد ان پر آرمس ایکٹ (Arms Act) کے تحت مقدمے چلائے جارہے تھے۔ لیکن ہم نے یہ مناسب سمجھا کہ چونکہ وہ لوگ پہلے ہی دو ایک سال جیلوں میں رہ چکے ہیں اس لئے ان پر مقدمات چلانا مناسب نہیں۔ ہمارے اصرار پر گورنمنٹ آف انڈیا نے اس کو تسلیم کیا کہ ہم اس پوزیشن میں ہیں کہ یہ مقدمات اٹھائے جائیں۔ کئی مقدمات ایسے ہیں جن کے بارے میں میں نے یہ کہا تھا کہ کسی معیار پر ان کو جانچنا چاہیئے اس کے بارے میں کوئی اسٹینڈرڈ ہونا چاہیئے۔ اور بھی کئی ایسے مقدمات ہیں جو وتھڈرا (Withdraw) کرنے کے قابل ہیں یا متعلقہ لوگوں کی رہائی عمل میں لائی جاسکتی ہے ان کے بارے میں بھی سرچا جارہا ہے۔ اگر حکومت کی یہ پالیسی ہوتی کہ اپوزیشن گرو سپرس کیا جائے تو یہ چیزیں نہیں ہوتیں۔ ہم نے جو کچھ کیا وہ اس بات کا ثبوت ہے کہ ہمارے دل میں کڑی چیزیں نہیں ہیں۔ ہمارے دل بالکل صاف ہیں۔ ہماری پالیسی سنٹرل گورنمنٹ کی پالیسی ہے۔ اور پالیسی آتی ہے ان قوانین کے ذریعہ جو اس وقت موجود ہیں۔ اس لئے نیک نیتی سے ہمارا یہ فرض ہو جاتا ہے کہ جو قوانین ہیں ان پر خرد بھی عدل کریں اور دوسروں سے بھی عدل کروائیں۔ ہم حتی المقدور اسی طرح کی کوشش کر رہے ہیں۔ میں ان کا دعویدار نہیں ہوں کہ ہم اس میں سے فیصای کا سباب ہو گئے ہیں۔ بلکہ ہم اس ڈائرکشن میں چلنے کی کوشش ضرور کر رہے ہیں۔ ایک صاحب نے یہ کہا کہ اگر اسی طرح دبانے کی پالیسی جاری رہے تو نتیجہ یہ ہو جائیگا کہ ہوم منسٹر کو ہٹنا پڑیگا۔ میں ایک چیز صاف کر دینا چاہتا ہوں کہ میں ایسا آدمی واقع ہوا ہوں کہ مجھ پر ڈرانے اور دھمکانے کا اثر نہیں ہوتا۔ اگر کوئی یہ سمجھتا ہے کہ محض اس طرح سے ڈرانے سے میں ہٹ جاؤں گا تو یہ بات غلط ہے۔ البتہ اگر میری پالیسی اور ہاؤز کی پالیسی میں اختلاف ہے اور باوجود اس کے کہ میرا ضمیر صاف ہے اور میں سمجھتا ہوں کہ ٹھیک راستے پر ہوں لیکن ہاؤز اس کو نہیں مانتا اور یہ خیال کرتا ہے کہ یہ آدمی مناسب نہیں تو ایسی صورت میں مجھے یہاں سے نکل جانے میں بالکل کوئی رنج نہیں ہوگا۔ میں اس معاملہ میں بالکل صاف ہوں۔ یہ بھی کہا جاتا ہے کہ کیا پالیسی ہے کہ ہر وقت دفعہ (۱۴۴) نافذ کیا جاتا ہے۔ یہ پالیسی خود کرائمینل پروسیجر کوڈ میں موجود ہے۔ اس کا منشا یہ ہے کہ ایسے تدابیر اختیار کئے جائیں جن کی وجہ سے کوئی سنگین معاملہ واقع ہوئے نہ پائے۔ انسدادی تدابیر اختیار کرنے کے لئے یہ دفعات وضع کئے گئے ہیں۔ کانسٹیبل ٹیمیں میں مطلق ایسی لبرٹیز (Liberties) نہیں دی گئی ہیں۔ اس میں یہ بتایا گیا ہے کہ Reasonable restrictions for the security of the State, for the maintenance of Public order.

اس میں یہ تمام چیزیں ہیں۔ دفعہ (۱۴۴) کانسٹی ٹیوٹن کی چوکھٹ میں ٹھیک بیٹھتا ہے۔ اس وجہ سے آج تک اس کو کسی نے چیلنج نہیں کیا۔ اگر کوئی ممبر یہ سمجھتے ہیں کہ یہ دفعہ غلط ہے تو وہ ایک رٹ اپلیکیشن (Writ application) عدالت میں دے کر دیکھیں کہ ہائی کورٹ کیا طے کرنا ہے۔ مجسٹریٹ کو یہ اختیار دیا گیا ہے کہ انسدادی تدابیر اختیار کرنے کے لئے دفعہ (۱۴۴) نافذ کرنے کی ضرورت پڑے تو نافذ کرے۔ اس میں گورنمنٹ کی پالیسی کا کیا سوال ہے۔ کیا ممبر اس پر چاہتے ہیں کہ گورنمنٹ یا ہوم منسٹر کو جب تک اطلاع نہ دی جائے کر فیو نافذ نہیں کرنا چاہئے۔ اگر ایسا ہو تو یہ ان کے نام میں بیجا مداخلت ہوگی ہمارا کام یہ ہے کہ ان کے اختیارات کی تعظیم کریں۔ ہم سیول ڈس او بیڈیننس (Civil disobedience) گاندھی جی کی سٹیہ گرہ کے اصول پر کرتے ہیں لیکن اس کی خبر اصل اسپرٹ ہے اوس کو دور رکھنا چاہتے ہیں۔ گاندھی جی نے کبھی یہ نہیں بتایا کہ راستہ چلنے والے لوگ عمداً قانون توڑیں اور پھر شکایت کریں کہ پولیس نے ان کو گرفتار کیا۔ گاندھی جی نے کبھی شکایت نہیں کی کیونکہ پولیس نے انہیں گرفتار کیا۔ آپ ایک طرف تو قانون توڑیں اور پھر شکایت کریں۔ جب آپ نے سمجھ بوجھ کر یہ کیا ہے تو اوس کا نتیجہ بھی بھگتنا پڑیگا۔ اگر کسی آدمی نے قانون توڑا ہے تو محض اس وجہ سے کہ اوس نے پیس فلی (Peacefully) قانون توڑا ہے۔ کوئی مار پیٹ نہیں کی۔ یا ہتیار ہاتھ میں رکھ کر قانون میں توڑا اس لئے پولیس اوس کے متعلق کوئی کارروائی نہ کرے۔ اگر ہم ایسا طے کرتے ہیں تو پھر یہ ہو جائیگا کہ ہر اسمبلی یا پارلیمنٹ کے بنائے ہوئے قانون کو کوئی بھی توڑ سکتا ہے۔ ایک ہیومنسٹ نے ایک بڑے مزے کی بات لکھی ہے انہوں نے لکھا ہے کہ بعض قفل ایسے ہوتے ہیں جو بند تو ہوتے ہیں کنجی کے بغیر لیکن کھولنے کے لئے کنجی کی ضرورت ہے لیکن میں نے ایک ایسا قفل بنا یا ہے جس کو کھولنے کے لئے کنجی کی ضرورت نہیں ہوتی لیکن بند کرنے کے وقت کنجی کی ضرورت ہوتی ہے۔ اسی طرح قانون جو ہم بناتے ہیں وہ اس طرح توڑنے کے لئے نہیں بنائے جاتے۔ اگر کوئی یہ کہتا ہے کہ میں پیس فلی قانون کو توڑنا چاہتا ہوں تو توڑیے اس کا نتیجہ بھی بھگت لیجئے۔ اس وقت پھر یہ شکایت کرنا کہ پولیس نے کیوں گرفتار کیا نا وا جی ہوگا جو کچھ ہوگا قانون کے لحاظ سے ہوگا۔ ہمیں اوس میں انٹرنسٹ (Interest) نہیں ہے۔ لیکن ہم یہ چاہتے ہیں کہ جو قانون ہے اوس کے سب پابند ہو جائیں آفیسر بھی پابند ہو جائیں اور عوام بھی پابند ہو جائیں کچھ ایسے آفیسر ہوسکتے ہیں جو خود قانون کی خلاف ورزی کرتے ہیں۔ ان کے لئے بھی ہم کو راستہ ڈھونڈنا ضروری ہے۔۔۔

شری کے۔ وی۔ رام راؤ۔ کیا مجسٹریٹ بغیر پولیس کے مشورہ کے دفعہ (۱۴۴)

لاگو کر سکتا ہے؟

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ پولیس رپورٹ کرتی ہے کہ حالات ایسے ہیں کہ اس دفعہ کولاگو کرنے کی ضرورت ہے۔ جب عدالت مطمئن ہو جاتی ہے کہ واقعی ایسے حالات ہیں تو یہ دفعہ لگایا جاتا ہے۔

لیکن یہ انسدادی دفعات ہیں جو آئندہ چل کر سنگین جرائم سرزد ہونے کے امکانات کو روکنے کے لئے رکھے گئے ہیں۔ اگر ان کو بروقت استعمال نہ کیا جائے تو اس کا مطلب یہ ہوگا کہ کربنل پر وسیجر کوڈ (Criminal procedure code) کو ہم بدل رہے ہیں۔۔۔۔

श्री व्ही डी. देशपांडे: महाविरा पुलिस देती है, तो जिम्मेदारी भी पुलिस को ही लेना चाहिये।

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ رپورٹ پیش کرنا ان کا کام ہے۔ مجسٹریٹ تو خود اپنے طور سے یہ کام نہیں کر سکتے ان کا فرض ہے کہ وہ اس طریقہ سے عمل کریں۔ جو کوئی قانون کی زد میں آنے کی کوشش کریگا اوس کو اوس کا نتیجہ بھگتنا ہی پڑیگا۔ گاندھی جی نے قانون کو توڑنے کی کوشش کی تھی یہ کہا جائے تو کوئی ٹھیک بات نہیں ہوگی لیکن اوس کے ساتھ ساتھ یہ بھی تو دیکھنا چاہئے کہ گاندھی جی نے اوس زمانے کے قانون کو توڑنے کی جو کوشش کی اوس کے نتیجے میں انہیں بھی تو جیل جانا پڑا تھا۔ کہا گیا کہ جھوٹے مقدمات لگائے جاتے ہیں میرا خیال یہ ہے کہ سو میں ایک آدمہ شخص بھی ایسا نہیں ہوگا جو یہ اعتراف کرے کہ مجھ پر سچا مقدمہ قائم کیا گیا ہے۔ جس کسی پر الزام لگایا جائے وہ یہی کہتا ہے کہ الزام جھوٹا ہے۔ مقدمہ صحیح نہیں ہے۔ اور لوگوں کی شکایات سننے کے بعد بہت سے لوگ اون کی ہمدردی میں تائید کرنے اور اون کی شکایتیں لانے کے لئے کھڑے ہو جاتے ہیں۔ میں برابر اون کی ٹیک دلی کا اعتراف کرتا ہوں۔ اون کی پبلک اسپرٹ کی تعریف کروں گا۔ وہ پبلک ورکر (Public worker) ہونے کی حیثیت سے ایسا خیال رکھتے ہیں کہ پبلک کے کسی فرد کو کسی قسم کی تکلیف نہ ہونے پائے۔ کسی مصیبت زدہ آدمی کی مصیبت کی داستان سننے کے بعد وہ اوس کی مدد کے لئے آمادہ ہو جاتے ہیں یہ سب ٹھیک ہے۔ لیکن میں اوس پبلک ورکر سے اوس ہمدرد سے جو اوس مصیبت زدہ کی امداد کے لئے آمادہ ہو کر آیا ہے اور اوس کی وکالت کر رہا ہے یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا اوس نے ایک جج (Judge) کی حیثیت سے اون واقعات کو سنا ہے کیا وہ اس سے مطمئن ہے کہ اس میں صداقت ہے۔ کیا اوس نے اپنے طور پر انکوائری (Enquiry) کر لی ہے۔ اگر اوس نے ان سارے مراحل کو طے کر لیا ہے اور وہ اوس کی بے گناہی کا یقین رکھتا ہے تو پھر میں یقین دلاتا ہوں کہ ضرور اون کی وکالت کا لحاظ ہوگا۔ اور مجھے بھی اعتماد ہوگا کہ ایک آئریبل ممبر ہیں انہوں نے خود اپنے طور پر انکوائری کر لی ہے اور وہ اس سے مطمئن ہو کر یہاں آئے ہیں تو یقیناً وہ سچے گناہ ہوگا۔ لیکن حقائق پر غور کئے بغیر، حالات کا غیر جانبداری کے ساتھ مشاہدہ کئے بغیر، معاملہ کی تحقیق و تصدیق کئے بغیر محض کسی کے کہنے سننے پر آپ اوس کی وکالت کریں،

اوس کی شکایت کو ہوم منسٹر کے پاس یا چیف منسٹر کے پاس پہنچا دیں اور کہیں کہ اس پر بھروسہ کیا جائے تو میں صاف صاف کہتا ہوں کہ اس پر میں تیار نہیں ہوں۔ البتہ میں آپ کو اطمینان دلانا چاہتا ہوں کہ اگر کوئی ایسی چیز ہو جس سے خود آپ مطمئن ہو چکے ہوں اور اس کا ثبوت آپ کے پاس ہو کہ واقعی کوئی بے گناہ ہے تو ضرور اس کا لحاظ کیا جائے گا۔ میرے پاس جتنے رپریزنٹیشن (Representations) آئے ہیں ان میں بہت تھوڑے ایسے ہیں کہ جن میں خود اپنے طور پر کوئی انکوائری (Enquiry) کی گئی ہو۔ اگر ایسے کیس آئے ہیں تو میں نے خود انکوائری کرائی ہے ایک نہیں دو دو تین تین مرتبہ انکوائری کرائی گئی ہے لیکن ہر کیس میں تو اس طرح سے نہیں کیا جا سکتا۔ کہیں کسی موقع پر غلط کام ہوا ہے تو میں نے فوری ایکشن (Action) لیا ہے لیکن اس کی چرچا نہیں کی۔ کام کر کے ڈھول نہیں پیٹا۔ یہ ڈنکا نہیں بجایا کہ ہم نے نہ کیا وہ کیا۔ اس طرح کرنے سے دوسری طرف جو اثر ہوتا ہے اس کا بھی لحاظ کرنا ضروری ہے۔ جن کا کردار ٹھیک ہوتا ہے جو امن و امان کے طالب رہتے ہیں ان کو بھی طمانیت دینا ضروری ہوتا ہے۔ یہاں تو سب کو یکجا لا کر عام طور پر الزامات لگائے جاتے ہیں۔ اس طرح کا عمل رہا تو کوئی پولیس ڈپارٹمنٹ میں نوکری کرنا پسند نہیں کریگا۔ میں خاص طور پر لیڈرس آف دی اپوزیشن سے کہوں گا کہ اس کو پارٹی کوئسٹن (Party Question) نہیں بنانا چاہئے۔ دراصل یہ پارٹی کوئسٹن نہیں ہے۔ ایڈمنسٹریشن (Administration) کی افیشینسی (Efficiency) کو بڑھانا جس طرح اس طرف کی پارٹی کا کام ہے اسی طرح آپ لوگوں کا بھی کام ہے۔ اپوزٹ سائیڈ (Opposite side) میں بیٹھنے والوں کا بھی کام ہے کہ وہ ایڈمنسٹریشن کی افیشینسی کو بڑھانے کی کوشش کریں۔ اس بارے میں دونوں کو ایک ساتھ کوشش کرنی چاہئے۔ یہ نہ کریں اور بلاؤنڈ چارجس (Blind charges) لگائیں تو میں کہوں گا کہ ڈی مارالائز (Demoralise) کرنے کے مترادف ہوگا۔ ممکن ہے کہ آج جو ٹریڈری بنچس پر بیٹھے ہوئے ہیں وہ کل اپوزیشن میں آجائیں اور جو اپوزیشن میں ہیں وہ ٹریڈری بنچس پر آجائیں ایسی صورت میں آپ کو اسی مشنری سے کام لینا پڑیگا۔ قانون تو یکدم آپ بدل نہ سکیں گے۔ اسی قانون کے تحت ایڈمنسٹریشن کو چلانا پڑیگا۔ یہ تو نہیں ہوگا کہ چین میں جس طرح یکدم مشنری کو بدل دیا گیا وہی یہاں بھی بدل دیا جائے۔ آپ پر لازم ہوگا کہ اسی مشنری سے کام لیں جیسا کہ ہم نے لیا ہے۔ پھر اوس وقت کیا ہوگا؟ ایک آنریبل ممبر آف دی اپوزیشن نے کہا کہ پی۔ ڈی۔ ایف کے لوگوں کو ملازمت میں نہیں لیا جاتا میں اون آنریبل ممبر کے حلوہات کے لئے کہتا چاہتا ہوں کہ کئی لوگوں نے شکایت کی کہ کانگریس کے اسٹرگل (Struggle) میں جن لوگوں نے حصہ لیا ہے اون کو ملازمت میں نہیں لیا جاتا یہ کیوں؟ لیکن وہ کیا جانتے ہیں کہ اگر کوئی پالیٹکس (Politics) میں آجائے تو پھر وہ گورنمنٹ کے ایڈمنسٹریشن کے کام کا نہیں رہتا۔ یہ فنڈامینٹل چیز ہے کہ وہ ایڈمنسٹریشن

(Administration) کے لئے بالکل ان فٹ (Unfit) ہوتا ہے۔ یہ ایک مانا ہوا پرنسپل (Principle) ہے۔ ہمیں ڈس آنسٹی (Dishonesty) اور کرپشن کے خلاف فائٹ اوٹ (Fightout) کرنا ہے ہمیں افیشینسی کو بڑھانا ہے۔ ڈٹرمینیشن (Determination) کے ساتھ سوچنے کی ضرورت ہے۔ اگر مجموعی طور پر ایک لائٹی سے ہانکنے کی کوشش کی جائے تو اس کے برے اثرات سروس پر ہومے بغیر نہیں رہ سکیں گے۔ بار بار یہ کہنا کہ سروس ایفکٹیو (Effective) نہیں ہیں یہ چیز کچھ ٹھیک نہ ہوگی۔ میں اون آرٹریبل ممبرس کو جو اوس طرف بیٹھے ہوئے ہیں دعوت دینا ہوں کہ وہ سنجیدگی کے ساتھ ان امور پر غور کریں۔ اپنے کہنے کے طریقے کو بدلیں۔ اپنی باتوں کے انداز کو بدلیں۔ جب آپ کو ڈپارٹمنٹس پر شبہ ہے اور حکومت کے عمل پر اعتراض ہے تو میں پوچھتا ہوں کہ عدالت میں کیوں نہیں جاتے تو اس بات پر چڑ جاتے ہیں اور کہا جاتا ہے کہ عوام کو عدالت کا راستہ بتایا جاتا ہے۔ پھر میں کونسا راستہ بتاؤں۔ پولیس کا کوئی شخص انکوائری کرنے کے لئے جاتا ہے تو آپ کہتے ہیں کہ وہ تو سب ایک جھاڑ کے پتے ہیں۔ ظاہر ہے کہ آپ کو ان پر اعتماد نہیں ہے۔ اور نہ اعتماد ہو سکتا ہے۔ بعض مرتبہ کہا جاتا ہے کہ پولیس والوں نے فلاں فلاں جرم کا ارتکاب کیا ہے، وہ جرائم قابل دست اندازی ہیں۔ میں جب انوسٹی گیشن (Investigation) کرانا ہوں تو وہ صحیح ثابت نہیں ہوتے اور آپ کو اس پر بھروسہ نہیں ہوتا۔ اب کیا کیا جائے۔ اس پر میں کہتا ہوں کہ عدالت کا دروازہ کھلا ہوا ہے جائے استغاثہ کیجئے۔ اگر ثبوت موجود ہے تو پریشانی کی کوئی وجہ نہیں ہے۔ یہی راستہ ہو سکتا ہے جو عوام کو میں دکھا سکتا ہوں۔ آج عدالتیں اگزیکیٹیو گورنمنٹ کے ماتحت نہیں ہیں۔ یہاں یہ بات اطمینان بخش ہے کہ پہلے ہی سے عدلیہ عاملہ سے الگ ہے۔ پھر بھی اوس زمانے کی گورنمنٹ کے عدلیہ پر ان ڈائریکٹلی (Indirectly) پریشر (Pressure) ہو سکتا تھا لیکن آج ایسے بھی اسباب نہیں ہیں۔ ہائی کورٹ کے جس کو اس کی ضرورت نہیں ہے کہ وہ ہمارے پاس آکر خوشامدہ کریں۔ وہ سپریم کورٹ کے تحت ہیں۔ میں یہ ماننے کے لئے تیار نہیں ہوں کہ وہ اپنی ذاتی مرضی یا حکومت کے دباؤ سے جو چاہیں کر سکتے ہیں۔

ایک مرتبہ اسمبلی میں خون آلود کپڑے پہنچانے کی کوشش کی گئی تھی میں نے اوس وقت بھی یہ کہا تھا کہ جب آپ کے پاس اتنا ثبوت موجود ہے تو عدالت میں کیوں نہیں جاتے۔ جب آپ وہ کھلا ہوا راستہ اختیار نہیں کرتے تو ہم یہ سمجھنے پر مجبور ہیں کہ آپ کے پاس کوئی ثبوت نہیں ہے خالی باتیں ہیں۔ کہا جاتا ہے کہ ایک غریب آدمی کہاں سے شہادت لاسکتا ہے۔ لیکن جب آپ یہ کہتے ہیں کہ فلاں آدمی اچھا نہیں ہے تو اس پر کیسے بھروسہ کر لیا جائے۔ بہت سے لوگ اس طرح کہتے ہیں کہ ہم پر بھروسہ کیا جائے لیکن میں پوچھتا ہوں کہ آپ نے بھی اس کی صداقت کا کچھ اطمینان کر لیا ہے یا نہیں؟ اگر آپ نے اطمینان کر لیا ہے تو کیا مواد ہے؟

کیا ثبوت ہے کہ وہ گنہگار نہیں ہے ؟ یا اگر آپ یولس ہر الزام لگاتے ہیں تو آپ کے پاس کیا ثبوت ہے کہ وہ مورد الزام قرار دینے کے قابل ہے ۔ اگر مجھے ان امور کا اطمینان نہیں دلا سکتے تو میں مجبور ہوں ۔

کریپشن (Corruption) کے بارے میں بھی بہت کچھ کہا گیا ہے ۔ تفصیلات نو آپ کے سامنے پیش کرنے کا موقع نہیں ہے لیکن صرف اس قدر کہہ دوں گا کہ یہاں جو ٹریبیونل (Tribunal) قائم ہے اس کے ذریعہ جو مفادات فیصل ہوئے ہیں ان میں ۱۳ گزیٹیڈ آفیسریس اور (۸) نان گزیٹیڈ اس طرح جملہ (۲۱) اشخاص ڈسمس (Dismiss) کر دیئے گئے ہیں ۔ ایک آئریبل ممبر نے دریافت کیا کہ انٹی کریپشن (Anti-corruption) کا کیا کام ہوا ہے ۔ اس نعلق سے میں کہوں گا کہ انٹی کریپشن کمیٹی کی جو رپورٹ آئی ہے اس میں کئی چیزیں پیش کی گئیں ہیں ۔ انکی سفارشات کی جانچ کرنے کی ضرورت ہے ۔ وہ مسئلہ کیا اینٹ (Cabinet) میں آیا ہے ۔ اسمبلی کے اجلاسوں کی وجہ سے وقت نہیں ملا کہ اس پر ڈسکس (Discuss) کیا جائے ۔ مجھے امید ہے کہ بہت جلد اس مسئلہ کا تصفیہ ہو جائیگا ۔ ہم نے اس کے لئے گنجائش رکھی ہے کہ انٹی کریپشن برانچ (Anti-corruption Branch) کو وسیع کیا جائے ۔

سی ۔ آئی ۔ ڈی ۔ کے سلسلے میں بھی کہا گیا ۔ کمیونسٹ آرمد اسٹرگل (Communist Armed Struggle) کے بند ہونے کے بعد مختلف لوگوں نے خلاف قانون جو آرس رکھے تھے اونکو برآمد کرنا کوئی معمولی کام نہ تھا ۔ یہ کام سی ۔ آئی ۔ ڈی کی مدد ہی سے کیا گیا ہے ۔ جو آرس برآمد ہوئے ہیں انکی تفصیل یہ ہے ۔

ARMS

.388 rilles	20
B. L. Guns	2
Bombs	2
B. L. Revolvers	6
B. L. Pistols	1
M. L. Pistols	4
Sten guns	2
Italian rifles	1
Winchester rifle	1
Repeating rifle	1
.410 automatic pistol	1
Revolvers	4
M. L. guns	17
Swords	13
Spear	1
Sub-machine gun	1
Hand-gun	1
Tommy cartridges	..

یہ اس سال کی تعداد ہے۔ اس سے پہلے کے بہت سے آر سس ہیں مین صرف سی۔ آئی۔ ڈی کی طرف سے جو کام ہوا ہے.....

شری کے۔ ایل۔ زسمہار او۔ یہ سب واپس کئے ہوئے آر سس کی تعداد تو نہیں ہے۔

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ اون کا حساب الگ ہے۔ میں یہ کہہ رہا ہوں کہ خفیہ طور پر جن لوگوں نے ہتیار اپنے قبضے میں رکھے تھے اون کو سی۔ آئی۔ ڈی نے برآمد کیا ہے۔ میں نے اس کا حوالہ اس لئے دیا کہ حالات سے آریبل ممبرس باخبر رہیں۔ اور یہ اعتراض کیا گیا کہ سی۔ آئی۔ ڈی یہ دریافت کرتی پھرتی ہے کہ آریبل ممبرس کہاں رہتے ہیں کیا کرتے ہیں۔ ظاہر ہے کہ پولیٹیکل پارٹیز کیا کام کرتی ہیں وہ دیکھتی ہے۔ ہر ایم۔ ایل۔ اے کے بارے میں انکے پاس ریکارڈ رہتا ہے۔ منسٹروں کے بارے میں بھی وہ مواد رکھتے ہیں۔

یہ کیوں سمجھا جا رہا ہے کہ کسی خاص پارٹی.....

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے: جس तरह अबतक आपने अपने पुलिस डिपार्टमेंट में अँटी कम्युनिस्ट ब्रँच रखी है, वैसे ही अँटी काँग्रेस, अँटी हिंदु महासभा, अँटी सोशलिस्ट क्या अँसे भी ब्रँच रखी गयी हैं?

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ اگر آپ وہ چیزیں بھول جائیں تو معلوم ہوگا کہ جو کچھ بھی ہو رہا ہے معقولیت کے ساتھ ہی ہو رہا ہے۔ آپ آج کے زمانے کی طرف دیکھئے.....

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے: जिस तरह पहले हालात में अँटी कम्युनिस्ट ब्रँच सी. आय. डी. में अलग रखी गयी थी, वैसे अब रखने की जरूरत नहीं है।

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ مجھے افسوس اس کا ہے کہ آریبل ممبر نے غور سے نہیں پڑھا۔ صفحہ ۱۱۱ پر دیکھئے۔ اینٹی کمیونسٹ اسکیم اس زمانے میں تھی جب کہ آپ نے آرماڈریوولٹ (Armed revolt) کیا تھا۔ جب کبھی ہوگا اس کے.....

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے: जो बजट हमारे सामने पेश किया गया है उसके पेज नंबर ३४६ पर अँटी कम्युनिस्ट ब्रँच के लिये आज भी खर्चा बताया गया है। मैं यह समझता हूँ कि आज भी उस ब्रँच पर अलग तौर पर खर्चा किया जा रहा है।

شری ڈگمبر راؤ بندو۔ وہ اس وقت کے حالات کے لحاظ سے تھا۔

شری. نرेंद्र (कारवान): जो अन सोशल अलिमेंट्स (Unsocial Elements) हैं उनके खिलाफ अलग ब्रँच रखना पड़ता है। और बराबर सी. आय. डी. की निगरानी उनपर रहती है।

شری. وھی. ڈی. دیشپانڈے: आज के हालात में अँटी कम्युनिस्ट के तौर पर अलग ब्रँच रखना मैं ठीक नहीं समझता हूँ।

شری داچی شنکر راؤ (عادل آباد)۔ کیا اینٹی آریا سماج اسکیم بھی ہے۔

شری ڈگمبر راؤ بندو - وہ سب ہیں جن سے خطرہ ہو سکتا ہے اون کے بارے میں جو رپورٹس مہیا کرنا ہے وہ برابر کام کرتے رہتے ہیں - اور رکھے جاتے ہیں - میں آنریبل ممبرس کو اس جانب توجہ دلانا چاہتا ہوں کہ جب ہمیں پولس بیٹ میں کمی کرنے کی جانب توجہ دلائی جاتی ہے تو دیکھنا چاہئے کہ ہم کن حالات سے گزر رہے ہیں -

پاک امریکن پیکٹ (Pak-American Pact) کے بارے میں حکومت ہند کیا کر رہی ہے - ہماری سرحدات پاکستان اور تبت سے ملی ہوئی ہیں - اور حیدرآباد ایک ایسا اسٹیٹ ہے جہاں کمیونسٹ پارٹی نے آرمنڈ ریپولٹ کیا - اور حیدرآبادھی ایسی ریاست تھی جس کی اس زمانے کی حکومت نے گورنمنٹ آف انڈیا کے خلاف آرمنڈ ریپولٹ کیا - اسکو پیش نظر رکھنا چاہئے - اسکے برخلاف آپ کہتے ہیں کہ آرمنڈ فورس کم کر دیجئے پولیس کے ناکے برخاست کر دیجئے - میں یہ چاہتا ہوں کہ آپ حقیقت پسندی سے کام لیں - میں ضرور اس پر کسی قدر اطمینان کے ساتھ کہنے کے لئے تیار ہوں - شائد آنریبل ممبرس آف دی کمیونسٹ پارٹی یا پی۔ڈی۔ یف کی شائد یہ مرضی نہ ہو کہ اس قسم کی حرکات کریں - لیکن حیدرآباد میں بہت سے ایسے عناصر ہیں جن کی روک تھام کی جانی ضروری ہے - اور امن قائم رکھنا ضروری ہے - خصوصاً ایسے وقت جب کہ پوری دنیا اور ہمارے پاس بھی ٹنشن (Tension) ہے - یہ خطرہ سے خالی نہوگا کہ ہم فورسز نکال دیں - اگر جرائم کم ہوں تو ہم بٹالینس (Battalions) نکال سکتے ہیں اور خرچہ کم کر سکتے ہیں ہم خود خرچہ کم کرنا چاہتے ہیں - کچھ آنریبل ممبرس نے جو سبجیشنس دئے ہیں وہ خود ہمارے سامنے ہیں - اس سے بھی مزید خرچہ کم کیا جا سکتا ہے - لیکن ہم ایسی کوئی چیز کرنے سے مجبور ہیں جسکی وجہ سے امن کو خطرہ ہو - میں اس سے بڑھ کر ہاؤز کا ٹائم لینا نہیں چاہتا - میں اسپیکر صاحب کا مشکور ہوں کہ انہوں نے مجھے کچھ ٹائم زیادہ دیا - اور میں ہاؤز کا بھی مشکور ہوں -

*Demand No. 8—Charges on account of Motor Vehicles Acts,
—Rs. 16,22,000.*

State Transport Authority (District Inspectors).

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the State Transport Authority in the City.

Shri Annajirao Gavane (Parbhani) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Policy of Government in respect of Road permits and amenities to passengers.

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Taxation on vehicles.

Shri Syed Akhtar Hussain (Jangaon) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Offices of the Motor Vehicles Inspectors in the Districts.

Shri Gopidi Ganga Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of R.T.A. in the Districts.

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The question is :

“ That a sum not exceeding Rs. 16,22,000 under Demand No. 8 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

*Demand No. 16—General Administration C—Elections—
Rs. 5,85,500.*

Govt's. failure to disburse the Expenses incurred by the village officials during the last general elections.

Shri Gopidi Ganga Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Inadequate arrangements for payment of allowances in connection with elections etc.

Shri P. Vasudev (Gajwel) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Misuse of funds by the Government in connection with the elections.

Shri Viswanath Rao Soore (Lakshetipet—General) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Bye-elections.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 16 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Mr. Speaker : The question is :

“That a sum not exceeding Rs. 5,85,500 under Demand No. 16 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

Demand No. 18.—Administration of Justice —Rs. 43,94,000.

Providing free legal advice to poor litigants.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 100.”

The motion was negatived.

Speedy and less expensive method of administration of justice.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 100.”

The motion was negatived.

Administration of the Judicial Department.

Shri Sharangowda Inamdar : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Delay in disposal of Cases

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 100.”

The motion was negatived.

Working of the Judicial Department.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 100 ”.

The motion was negatived.

Inadequate Legal aid to the accused in capital cases and protection against harrassment of the witnesses by the Police.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 18 be reduced by Re. 1 ”.

The motion was negatived.

Reorganisation of Courts and the Policy of Languages therein

Shri Abdur Rahman : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Regional and Urdu languages in the Courts

Shri Annajirao Gavane : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Delay and heavy expenses in administering Justice.

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 18 be reduced by Re. 1 ” .

The motion was negatived.

Mr. Speaker : The question is :

“ That a sum not exceeding Rs. 48,94,000 under Demand No. 18 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh . ”

The motion was adopted.

Demand No. 19—Jails and convict settlements—Rs. 25,82,900.

Jail Reforms.

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100 ” .

The motion was negatived.

*Jail Reforms with special reference to the need to make Jails
self-supporting*

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 19 be reduced by
Rs. 100 ”.

The motion was negatived.

*Inefficiency and maladministration in Jail Administration of
the State*

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 19 be reduced by
Rs. 100 ”.

The motion was negatived.

*Appointments, duties and responsibilities of administrative
officials in the Jail Department*

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 19 be reduced by
Rs. 100 ”.

The motion was negatived.

Jail industries and measures for their Development.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 19 be reduced by
Rs. 100 ”.

The motion was negatived.

Maladministration and implementation of the reforms

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to with-
draw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Dept.

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100 ” .

The motion was negatived.

Conditions of Jail Industries

Shri P. Vasudeo : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Conditions of prisoners in Jails and matters Pertaining to remissions and Parole

Shri A. Ramchandra Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Maladministration in Jails in respect of persons under remand and in lock-ups

Shri Gopidi Ganga Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of Jails and Convict Settlements

Shri A. Ramchandra Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The question is :

“ That a sum not exceeding Rs. 25,82,000 under Demand No. 19 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending the 31st day of March 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh ” .

The motion was adopted.

Demand No. 20—Police—Rs. 3,29,39,000
Economy in Police Expenditure

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 75,00,000 ”.

The motion was negatived.

Shri V. D. Deshpande : I demand a division, Sir.

The House then divided.

Ayes.....49

Noes .. 77

The motion was negatived.

Reduction in Armed Police and Economy in Police Expenditure

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 21,00,000 ”.

The motion was negatived.

Repatriation of Police Officers on Deputation

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 21,000.”

The motion was negatived.

Excesses of Police on the Public

Shri M. Buchiah : (Sirpur) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Malpractices of Police in the day to day administration

Mr. Speaker : The question is :

“ That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100 ”.

The Motion was negatived.

Malpractices and heavy corruption in District Police Force.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100 ”.

The motion was negatived.

Working of the Police Motor Transport Section.

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of Government to eradicate and to raise the standard of efficiency of the District Police Force.

Shri Ankush Rao Ghare (Partur): I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Railway Police

Shri Ankush Rao Ghare : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The New organization of the City Police

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House, to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The establishment charges of the City Police, Hyderabad.

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion, was by leave of the House, withdrawn.

Working of the Police Training Centre at Bidar and Amberpet

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was by leave of the House, withdrawn.

The working of the Anti-corruption Branch.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100 .”

The motion was negatived.

The Administration of the Police Department

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100 .”

The motion was negatived.

The amalgamation of H.S.R.P. with the Armed Police Force

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The New Organization of the City Criminal Investigation Branch.

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The recruitment of Policy of the Government in the Department.

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Reorganization of the District Police.

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The policy of the Department in curbing civil liberties in the name of maintenance of law and order and detection of Crime.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100 .”

The motion was negatived.

Reorganization of the Department

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100 .”

The motion was negatived.

Working of the District Criminal Investigation Department.

Shri Bhagwan Rao Boralkar : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the village Patels

Shri Bhagwan Rao Boralkar : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The working of District Subordinate Officers

Shri Bhagwan Rao Boralkar : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of the Police to control the activities of unsocial elements.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100.”

The motion was negatived.

The necessity of associating the public with the Police by the introduction of a system of compulsory police training in schools and colleges, volunteer assistants, home guards, etc., for the preservation of internal peace

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100.”

The motion was negatived.

Salaries, T.A. and D.A. paid to the Police Officers and Constables

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Taking of forced labour by Police

Shri R. B. Gurumurthy (Khammam General): I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure to release Political Prisoners

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Use of Police Force to put down Strikes and settle Land Disputes

Shri K. L. Narsimha Rao : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of City Police and economy in their expenditure

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The Motion was negatived.

Working of Police Station Houses in Karimnagar district and instituting of false cases on public workers in Jagtial and Peddapalli taluqs

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Repression and instituting false cases by Police in Bhir, Osmanabad and Nanded districts.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re 1.”

The motion was negatived.

Police repression and institution of false cases in Nalgonda

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re 1.”

The Motion was negatived.

Repression in Telangana

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1 ”.

The motion was negatived.

Misuse of powers and corruption by Police Officers in districts

Shri Viswanath Rao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Closing down of Armed Police camps in the Villages in Telangana

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1. ”

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Redution in numberof police-subdivisions and 81 Police station houses

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1. ”

The motion was negatived.

Reduction and working of Seth Sendhis and Police Patels

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1. ”

The motion was negatived.

Working of Criminal Settlements

Shri Uppla Malsur (Suryapet-Reserved) : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of Police Force in Warangal district

Shri B. Krishniah (Koammam-General) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Government's failure to give proper training to the Police Officers in Detecting Crimes

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Rash and rude attitude of the Police officers towards Public

Shri K. Venkat Rama Rao : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The necessity of enforcing strict discipline in the low paid Officers and Police Constables

Mr. Speaker : The question is:

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was, negatived.

Economy in Railway Police

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Economy in and working of the C.I.D.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Failure of the “X Branch” to control corruption

Shri B. Krishniah : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Scales of pay, housing conditions and recruitment and training of Police Forces

Shri Pendem Vasudev : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of “Police Prosecution Officers”

Shri A. Laxminarsimha Reddy (Wardhannapet) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Harrassment of Harijans by Police

Shri P. Laxmiah (Nalgonda-Reserved): I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Behaviour of Police Officers

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Malpractices and High-handedness of the Village and district Force

Shri Viswanathrao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Police Department in Districts and Rural Areas

Shri Viswanathrao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Necessity of efficient Police Force

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Police Department

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Necessity of purchase of Arms and Ammunition

Shri Annajirao Garwane : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Administration of the Police Department

Shri Syed Hassan : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Corruption and High-handedness of the District Police Officers.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Failure of the District Police to maintain Law and Order

Shri Bhujang Rao (Jintur) : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The necessity of opening New Police Station houses in Telengana

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Mr. Speaker : The question is :

“That a sum not exceeding Rs. 3,29,39,000 under Demand No. 20 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

Demand No. 61—Receipt from R. T. D.,—Working expenses—Rs. 2,53,88,000

Working of the R.T.D.

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House,

Failure of the Department to provide amenities to the Public

Shri Sharangowda Inamdar : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

High rates of transport and corruption in the Department

Shri M. Buchiah : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Necessity of opening new bus routes in the Districts

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Necessity of having an efficient inspection staff in the Department

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Reduction in the Bus fares to I. G. 6 pies per mile.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Association of the public with the R. T. D. Administration through an Advisory Committee as in the Railway Department

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

*Inadequate number of buses on the existing routes and opening
of new routes*

Shri Syed Akhtar Hussain : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Granting of Bonus to R.T.D. Employees.

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

*Store purchases by the R.T.D. and the need for an Investigation
Committee*

Mr. Speaker : The question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

*Over-loading of busses and various inconveniences to the passengers
regarding shelter, drinking water, urinals, etc.*

Mr. Speaker : The Question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Corruption in the Road Transport Department.

Shri Viswanathrao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Amenities to the staff and their general working conditions.

Shri Ch. Venkatram Rao (Karimnagar) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of the Government to give bonus to the R.T.D. Workers.

Mr. Speaker : The Question is :

“That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1 .”

The motion was negatived.

Mr. Speaker : The Question is :

“That a sum not exceeding Rs. 2,53,88,000 under Demand No. 61 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh .”

The motion was adopted.

Demand No. 75—Evacuee Department—Rs. 1,58,300.

The Working of Evacuee Department.

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of Evacuee Department to speedily settle Evacuee disputes

Shri Abdur Rahman : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Policy of the Government regarding Evacuee Property

Shri Viswanath Rao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Arrangements made by Government to run the M.C.S. Farm in Nizamabad.

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The Question is :

“That a sum not exceeding Rs. 1,58,300 under Demand No. 75 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

Demand No. 80—Grant for Rehabilitation of displaced persons before, during and after Police Action—Rs. 2,50,000.

Rehabilitation of displaced persons.

Mr. Speaker : The Question is :

“That the grant under Demand No. 80 be reduced by Rs. 100.

The motion was negatived.

Working of the Rehabilitation Department.

Shri Annajirao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Rehabilitation Department.

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mismanagement of the Rehabilitation Fund.

Mr. Speaker : The Question is :

“That the grant under Demand No. 80 be reduced by Re. 1.”

The motion was negatived.

Rehabilitation of displaced persons.

Shri K. Venkatrama Rao: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The Question is :

“That a sum not exceeding Rs. 2,50,000 under Demand No. 80 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

Demand No. 81—Welfare of ex-Criminal Tribes in the State—Rs. 55,000.

Inadequate funds provided for the welfare of ex-Criminal Tribes.

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Neglect of welfare of the ex-Criminal Tribes in the State.

Shri Uppala Malsur : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The Question is :

“That a sum not exceeding Rs. 55,000 under Demand No. 81 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh.”

The motion was adopted.

*Demand No. 93—Capital Outlay on Road Transport Schemes
outside the Revenue Account—Rs. 36,22,000*

Capital Outlay on Road Transport Schemes in Karnatak

Shri Sharangowda Inamdar : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of Government to establish a bus depot in Parbhani district.

Mr. Speaker : The Question is ;

“ That the grant under Demand No. 93 be reduced by Rs. 100. ”

The motion was negatived.

Capital Outlay on Road Transport Scheme

Shri V. D. Deshpande : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Necessity of plying buses in Parbhani district.

Shri Bhujang Rao : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The Question is :

“ That a sum not exceeding Rs. 36,22,000 under Demand No. 93 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh. ”

The motion was adopted.

*The House then adjourned till Half Past Two of the Clock on
Wednesday, the 17th March, 1954.*

1

1

1